● वर्ष-3
● अंक-47
रायपुर, मंगलवार
03 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

# समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› माता-पिता ऐसे समझें ....

सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

## प्रधानमंत्री मोदी आज जगदलपुर में

**जगदलपुर।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को जगदलपुर आ रहे है। उनके दौर को देखते हुए शहर को किले में तब्दील कर दिया गया है। बताया जा रहा है लालबाग परेड मैदान जहां पीएम मोदी की सभा होनी है उस पूरे इलाके को सीसीटीवी कैमरे से कवर किया जा रहा है। इसके साथ ही सभा स्थल के आसपास की सारी बड़ी बिल्डिंगों में पुलिस के जवान मौजूद रहेंगे। गौरतलब है कि एसपीजी के अफसरों और स्थानीय जिला और पुलिस प्रशासन के बीच एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई है इस बैठक में एसपीजी ने पीएम मोदी के कार्यक्रम से लेकर उनकी सुरक्षा और पीएम मोदी किस-किस रूट से गुजरेंगे इस पर चर्चा की है।

अभी जो प्लानिंग की गई है उसके अनुसार पीएम मोदी एयरपोर्ट पहुंचेंगे और फिर एयरपोर्ट से शहीद पार्क होते हुए पुराना बस स्टैंड वाले चौक पहुंचेंगे और यहां से सीधे पीएम का काफिला लालबाग पहुंचेगा। सभा वाले दिन पीएम के काफिले के लिए अलग से रूट बनेगा इसके अलावा कार्यक्रम में शामिल होने वाले वीवीआईपी और वीआईपी के लिए अलग रूट बनेगा।हालांकि अफसरों का कहना है कि पीएम की सभा जहां भी होती है वहां रूट मैप एसपीजी तय करती है और एसपीजी हमेशा दो रूट तय करती है और ऐन वक्त पर किसी एक रूट से पीएम का काफिला गुजरता है। ऐसे में अभी यह पूरी तरह से तय नहीं है कि पीएम किस रूट से सभा स्थल जाएंगे लेकिन स्थानीय प्रशासन अपने स्तर पर पीएम मोदी के रूट पर सुरक्षा व्यवस्था को दुरूस्त करने में लगा हुआ है। पीएम मोदी जिस भी रूट से सभा स्थल तक जायेंगे उस रूट की सभी सड़कों पर दोनों ओर से आवाजाही रोक दी जाएगी और पीएम के काफिले के लिए ग्रीन कारिडोर बनाया जाएगा।

### कांग्रेस ने किया 3 को बस्तर बंद का ऐलान

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बस्तर दौरे से पहले पत्रकारों के समक्ष मांग करते हुए कहा कि नगरनार संयंत्र को निजी कंपनियों को न बेचे, राज्य सरकार खरीदने के लिए तैयार है और इसके एवज में वह 20 हजार करोड़ रुपये देने के लिए तैयार है। बस्तर के किसानों ने जमीन एमएमडीसी को दी थी न कि निजी व्यक्ति को। तीन तारीख को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बस्तर आ रहे है। और उनके दौरे से पहले प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की उपस्थिति में बंद की घोषणा की।

# बिहार में जातिगत जनगणना के आंकड़े जारी

**पटना।** बिहार की नीतीश सरकार ने जातिगत जनगणना के आंकड़ों को जारी कर दिया है। जातिगत जनगणना के आंकड़े जारी होने के बाद सामने आया है कि बिहार में कुल 13 करोड़ से अधिक की आबादी है। बिहार सरकार ने हाल ही में जातिगत जनगणना करवाई थी। अब 2 अक्टूबर को मुख्य सचिव समेत अन्य अधिकारियों ने इसकी रिपोर्ट दे दी है जिसके बाद ही आखिरी जारी किए गए हैं। बिहार के अपर मुख्य सचिव विवेक कुमार सिंह ने बताया कि बिहार में पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) 27.13 प्रतिशत, अत्यंत पिछड़ा वर्ग 36.01 प्रतिशत, सामान्य वर्ग 15.52 प्रतिशत, एससी वर्ग 19 प्रतिशत और एसटी वर्ग 1.68 प्रतिशत है। है। बिहार की कुल आबादी 13 करोड़ से अधिक है।

बिहार सरकार द्वारा जातिगत जनगणना जारी किए जाने के बाद मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने जानकारी दी है। आज गांधी जयंती के शुभ अवसर पर बिहार में कराई गई जाति आधारित गणना के आंकड़े प्रकाशित कर दिए गए हैं। जाति आधारित गणना के कार्य में लगी हुई पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई ! जाति आधारित गणना के लिए सर्वसम्मति से विधानमंडल में प्रस्ताव पारित किया गया था। बिहार में कराई गई जाति आधारित गणना को लेकर शीघ्र ही बिहार विधानसभा के उन्हीं 9 दलों की बैठक बुलाई जाएगी तथा जाति आधारित गणना के परिणामों से उन्हें अवगत कराया जाएगा।

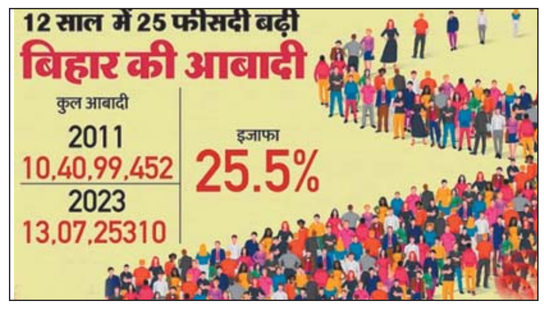


दरअसल, बिहार विधानसभा और विधानपरिषद ने 18 फरवरी 2019 को राज्य में जाति आधारित गणना कराये जाने का प्रस्ताव पारित किया गया। इस संबंध में दोबारा एक मई 2022 को आयोजित सर्वदलीय बैठक में भी बिहार राज्य में जाति आधारित गणना कराने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया गया। इसके अगले ही दिन राज्य मंत्रिपरिषद् द्वारा लिए गये निर्णय के आधार पर बिहार राज्य में जाति आधारित गणना को दो चरणों में माह फरवरी, 2023 तक संपन्न कराने का निर्णय लिया गया।

### जातिगत जनगणना

- बिहार में स्वर्ण की संख्या (अनारक्षित या जनरल) 15.52 प्रतिशत,
- भूमिहार की आबादी 2.86 प्रतिशत,
- ब्रहाणों की आबादी 3.66 प्रतिशत,
- कुर्मी की जनसंख्या 2.87 प्रतिशत,
- मुसहर की आबादी 3 प्रतिशत,
- यादवों की आबादी 14 प्रतिशत
- राजपूतों की आबादी 3.45 प्रतिशत

### कुल आबादी 13 करोड़ 7 लाख 25 हजार 310

- पिछड़ा वर्ग 3,54,63,936,
- अत्यंत पिछड़ा वर्ग 4,70,80,514,
- अनुसूचित जाति 2,56,89,820,
- अनुसूचित जनजाति 21,99,361,
- अनारक्षित 2,02,91,679 हैं
- 82 प्रतिशत हिन्दू,
- 17.7 प्रतिशत मुसलमान, .
- 05 प्रतिशत ईसाई,
- .08त्न बौद्ध धर्म, .0016त्न कोई धर्म नहीं है।

### आंकड़ों के आधार क्या हैं?

बिहार जाति आधारित गणना-2022 को कई बिंदुओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इन बिंदुओं में शैक्षणिक योग्यता, कार्यकलाप, आवासीय स्थिति, अस्थायी प्रवासीय स्थिति, कम्प्यूटर / लैपटॉप की उपलब्धता, मोटर वाहन, कृषि भूमि, आवासीय भूमि, सभी स्त्रोतों से मासिक आय शामिल है।

### गिरिराज सिंह ने साधा नीतीश सरकार पर निशाना

बिहार सरकार ने जाति आधारित जनगणना की रिपोर्ट जारी कर दी है। जैसे ही यह रिपोर्ट सामने आई वैसे ही बिहार में राजनीतिक सियासत गरमा गई है। राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने इस ऐतिहासिक क्षण बताया। वहीं दूसरी तरफ भाजपा नेता गिरिराज सिंह ने नीतीश सरकार पर जमकर हमला बोला और उनसे कार्यकाल का रिपोर्ट कार्ड मांग लिया। बिहार में जातिगत जनगणना की रिपोर्ट सामने आने के बाद केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने जमकर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि जातीय जनगणना बिहार की गरीब जनता में भ्रम फैलाएगी। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने नीतिश सरकार के इस फैसले का समर्थन किया है। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने बिहार में आई इस रिपोर्ट के बाद नीतीश कुमार पर हमला बोलते हुए उनसे बीते 15 वर्षों और लालू यादव को अपने 18 साल के कार्यकाल का रिपोर्ट कार्ड दिखाने की चुनौती दे दी है।

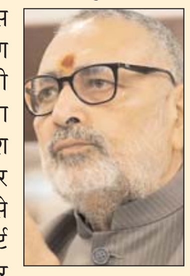

**रायपुर।** मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने आज यहाँ अपने निवास कार्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री और शायर हाजी हसन अली की जयंती पर उनके छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया ।

## यूपी में दरक गया इंडिया गठबंधन? कांग्रेस-सपा मनमुटाव

**लखनऊ ।** विपक्षी गठबंधन इंडिया में भले कांग्रेस और सपा साथ-साथ नजर आ रही है, लेकिन प्रदेश की सियासत में इनकी राहें अलग- अलग दिख रही हैं। सपा के तमाम नेता कांग्रेस की ओर रूख कर रहे हैं। इतना ही नहीं वे सपा सरकार में दलितों एवं पिछड़ों की अनदेखी के मुद्दे को गरमा भी रहे हैं। फिलहाल मंगलवार को प्रसपा- सपा के कई नेता कांग्रेस का हाथ पकड़ने जा रहे हैं।

मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव के बाद प्रसपा का सपा में विलय हो गया। उम्मीद थी कि दोनों पार्टियों के नेता एकजुट होकर प्रदेश की सियासत में अपनी ताकत का अहसास कराएंगे, लेकिन हालात बदलते नजर आ रहे हैं। दो माह के अंदर सपा- प्रसपा के के कई दिग्गज नेताओं ने कांग्रेस का हाथ थाम लिया। सपा के संस्थापक सदस्य सीपी राय कांग्रेस में पहुंचे और प्रवक्ता की जिम्मेदारी संभाल ली है। पूर्व विधायक राकेश राठौर, सपा के राष्ट्रीय सचिव नवाब अली अकबर भी कांग्रेस में चले गए। भदोही में सपा के टिकट पर नगर पालिका का चुनाव लड़ चुके हसनैन अंसारी रोते हुए कांग्रेस के मंच पर पहुंचे और प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने उन्हें तिरंगा भेंट कर कांग्रेस की सदस्यता दिलाई।

अब मंगलवार को प्रसपा छात्रसभा के प्रदेश अध्यक्ष एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ के पूर्वअध्यक्ष दिनेश सिंह यादव, सपा के अनुषांगित संगठन बाबा साहब वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव शैलेंद्र ध्रुव और सपा के प्रदेश सचिव बीपी सिंह अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस की सदस्यता लेंगे। एक के बाद एक सपा नेताओं के कांग्रेस में शामिल होना सियासी तौर पर अलग संदेश दे रहा है। इस संबंध में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय का कहना है कि वे पार्टी को मजबूत करने में जुटे हैं। जनता की आवाज बुलंद करने वालों के लिए कांग्रेस के दरवाजे हमेशा खुले हैं। वह दावा करते हैं कि सपा सहित विभिन्न पार्टियों के करीब दो सौ से ज्यादा नेता उनके संपर्क में हैं। दशहरे के बाद जिलेवार लोगों को कांग्रेस में शामिल कराया जाएगा।

सूत्रों की मानें तो कांग्रेस अपने टीम बी के प्लान पर भी अंदरखाने में काम कर रही है। इंडिया गठबंधन के तहत सीटों के बंटवारे को लेकर किसी तरह से बात बिगड़ती है तो प्लान बी लांच किया जाएगा। इसके तहत प्रदेश के तमाम अल्पसंख्यक नेताओं के संपर्क साधा जा रहा है। गंठबंधन में तस्वीर बदलती तो सपा से टिकट कटने पर कई पुराने सपाई नेताओं को कांग्रेस मैदान में उतार सकती है। इसके लिए पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खासतौर से फोकस किया गया है। कांग्रेस के सांसद इमरान प्रतापगढ़ी की रामपुर-मुरादाबाद में सक्रियता और पूर्व सांसद इमरान मसूद का राहुल गांधी की शान में कसीदें पढ़ने के सियासी संदेश हैं।

प्रसपा छात्रसभा के प्रदेश अध्यक्ष रहे दिनेश सिंह कहते हैं कि अब दलितों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के हक की लड़ाई लड़ने का माद्दा सिर्फ कांग्रेस में हैं। यही वजह है कि वे अपने समर्थकों के साथ कांग्रेस में जा रहे हैं।

प्रमुख समाचार

### प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ग्वालियर में मंच से कांग्रेस पर गरजे

**भोपाल।** मध्य प्रदेश में आगामी दिनों में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राज्य के दौरे पर हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के सबसे बड़े राजनीतिक केंद्र ग्वालियर में रैली के दौरान चंबल को 19,000 करोड़ की परियोजनाओं की सौगात भी दी है। उन्होंने डबल इंजन सरकार के कई लाभ भी जनता को बताए। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पार्टी पर जमकर निशाना साधते हुए कहा कि इनको देश की प्रगति से नफरत है। उनकी नफरत इतनी अधिक है कि इसमें यह देश की उपलब्धियां को भी भूल जाते हैं। आज पूरी दुनिया में भारत का डंका बज रहा है। भारत में पूरी दुनिया को अपना भविष्य नजर आ रहा है। लेकिन कांग्रेस पार्टी को परिवार और कुर्सी के अलावा कुछ नजर नहीं आता। भारत बीते 9 वर्षों में दसवीं से पांचवें नंबर की आर्थिक ताकत बनने में सफल हुआ है। लेकिन विरोधियों को भारत का यह विकास समझ नहीं आ रहा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बताया कि मध्य प्रदेश में 8 लाइन की सड़क बन रही है। उन्होंने कहा कि इतने विकास के काम किए गए हैं।

### जयशंकर को बताया अमेरिका भारत संबंधों का वास्तुकार

**नईदिल्ली।** केंद्रीय विदेश मंत्री एस जयशंकर अमेरिका के दौरे पर है। अमेरिका के दौरे के दौरान भारत के विदेश मंत्री ने मोदी सरकार में भारत और अमेरिका के संबंधों को एक अलग स्तर पर ले जाने की बात कही थी। विदेश मंत्री ने कहा कि दोनों देशों के रिश्ते चंद्रयान की तरह ही चांदी या उससे भी ऊपर तक पहुंचेंगे। उन्होंने कहा कि भारत अमेरिका संबंध अब तक के उच्चतम स्तर पर हैं। मोदी सरकार इसे अलग स्तर पर ले जाने की तैयारी में जुटी हुई है। भारत अमेरिका रिश्तों को लेकर इस सोच को रखना वाले जयशंकर का अब अमेरिका मुरीद हो गया है। एस जयशंकर की अमेरिकी यात्रा के बाद अमेरिकी प्रशासन ने एस जयशंकर की जमकर तारीफ की है। बाइडेन प्रशासन ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच संबंधों को नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए एस जयशंकर ने आधुनिक रिश्तों के वास्तुकार की तरह अहम भूमिका निभाई है। जी-20 का सफल आयोजन अमेरिका के समर्थन के बिना होना संभव नहीं था। उन्होंने कहा कि अगर जी-20 के सदस्य इसके सफलता के लिए काम नहीं करते तो सब का साथ आ पाना मुश्किल था।

### गठबंधन को साझा न्यूनतम कार्यक्रम की जरूरत नहीं

**नयी दिल्ली।** राज्यसभा सदस्य कपिल सिब्बल ने सोमवार को कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' को अगले लोकसभा चुनाव के लिए साझा न्यूनतम कार्यक्रम की जरूरत नहीं है, बल्कि उसे देश के भविष्य के लिए नया दृष्टिकोण पेश करने की जरूरत है। उन्होंने यह उम्मीद भी जताई कि इस गठबंधन के घटक दलों में किसी तरह के मनमुटाव से यह गठबंधन नहीं टूटेगा। सिब्बल मुंबई में हुई 'इंडिया' गठबंधन की बैठक में शामिल हुए थे। अडाणी समूह का मामला एक 'घोटाला' है, लेकिन विपक्ष के पास इसे साबित करने के लिये आंकड़े नहीं हैं। दिल्ली और पंजाब में कांग्रेस नेताओं द्वारा पार्टी नेतृत्व से अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन न करने का आग्रह करने सहित विपक्षी गठबंधन में दरार के बारे में पूछे जाने पर, सिब्बल ने कहा, हमें इसे दो अलग-अलग दृष्टिकोण से देखना चाहिए, एक 'इंडिया' गठबंधन राजग का सामना कैसे करेगा, दूसरा 'इंडिया' गठबंधन की आंतरिक राजनीति है।

### कोरोनावायरस से जुड़ी खोज करने के लिए नोबेल पुरस्कार

**नईदिल्ली।** कोरोनावायरस महामारी को रोकने के लिए वैक्सीन विकसित करने वाले दो वैज्ञानिकों को चिकित्सा के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया है। वैज्ञानिक काटोलिक करिको और ध्रुव विडमैन को संयुक्त रूप से चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार दिया गया है। दोनों वैज्ञानिकों ने दुनिया की सोच अपनी वैक्सीन के निर्माण से बदल दी। उनकी खोज के बाद दुनिया भर के वैज्ञानिक शरीर में होने वाले इम्यून सिस्टम के एक्शन और रिएक्शन को बेहतर ढंग से समझ सके थे। नोबेल समिति के सचिव थॉमस पर्लमैन ने कोरोलिंस्का संस्थान में विजेता की घोषणा की। गौरतलब है कि पूरी दुनिया जब कोरोनावायरस संक्रमण की महामारी से जूझ रही थी, इस दौरान इन्हें वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसी खोज की जिससे पूरी दुनिया को बहुत अधिक मदद मिली। कोरोना के फैलने पर लोग परेशान थी क्योंकि इसका कोई इलाज उपलब्ध नहीं था। दुनिया भर के वैज्ञानिक इस घातक बीमारी से बचने के लिए दवाई खोजने में जुटे हुए थे। कोरोना के कारण दुनिया भर के सभी देश धीरे-धीरे तबाह हो रहे थे। इस घातक बीमारी नहीं करूं लोगों की जान ले ली। ऐसे में वैज्ञानिकों के ऊपर दबाव बेहद अधिक था।

### राहुल गांधी पहुंचे अमृतसर, स्वर्ण मंदिर में टेका माथा

**अमृतसर।** कांग्रेस नेता राहुल गांधी सोमवार को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में अरदास के लिए पहुंचे हैं। राहुल गांधी सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी सोमवार सुबह सोलन के साधुपुल स्थित रामलोक मंदिर भी पहुंचे थे। तीनों ने यहां शीश नवाया और हाल ही में बने नागलोक मंदिर के दर्शन भी किया। वहीं सोमवार को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में राहुल गांधी अरदास लगाने भी पहुंचे। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने स्वयंसेवी सेवा में भी हिस्सा लिया। जानकारी के मुताबिक कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सुबह 11¬15 पर यहां हवाई अड्डे पर उतरे। पंजाब कांग्रेस के प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वडिंग ने बताया कि राहुल गांधी शहर के निजी दौरे पर हैं। वडिंग ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' (पूर्व में ट्विटर) पर एक पोस्ट में कहा, ''राहुल गांधी सचखंड श्री हरमंदिर साहिब में माथा टेकने के लिए अमृतसर साहिब आए हुए हैं। यह उनकी निजी, आध्यात्मिक यात्रा है। हमें उनकी निजता का सम्मान करना चाहिए। सभी पार्टी कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि वे इस यात्रा के लिए न आएं।

राजनीति

## चुनाव के बाद भाजपा के दिग्गज एमपी में रहेंगे या जाएंगे दिल्ली

**भोपाल।** भाजपा ने हारी सीटों पर कब्जा करने के लिए तीन केंद्रीय मंत्रियों समेत सात सांसदों को विधानसभा चुनावों में उतार दिया है। इससे राष्ट्रीय राजनीति में इनके कॅरियर पर बड़ा सवालिया निशान लग गया है। सरकार बनने के बाद क्या यह दिल्ली लौट जाएंगे? यदि दिल्ली नहीं लौटे तो राज्य की राजनीति में इनकी भूमिका क्या रहेगी?

भाजपा ने तीन किस्तों में अब तक 79 उम्मीदवारों के नाम घोषित किए हैं। इनमें तीन केंद्रीय मंत्रियों समेत सात सांसद और राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय का नाम भी शामिल है। भाजपा ने केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर को मुरैना की दिमनी, केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद पटेल को नरसिंहपुर, राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय को इंदौर क्षेत्र क्रमांक-1, केंद्रीय मंत्री फग्गन सिंह कुलस्ते को निवास, सांसद राकेश सिंह को जबलपुर पश्चिम, सांसद गणेश सिंह को सतना और सांसद रीति पाठक को सीधी से विधानसभा प्रत्याशी बनाया है। केंद्र की राजनीति करने वाले चेहरों को राज्य की राजनीति में उतारा गया है। भाजपा का यह कदम न केवल कांग्रेस बल्कि तमाम राजनीतिक पंडितों को भी चौंका रहा है। सवाल यह है कि पार्टी के इस निर्णय के पीछे की कहानी क्या है? यदि भाजपा चुनाव जीतेगी तो मुख्यमंत्री पद पर तो एक ही नेता बैठेगा, तब बाकियों का भविष्य क्या होगा? इसे लेकर अलग-अलग कयास लग रहे हैं।

### दिग्गजों को उतार किया बड़ा डैमेज कंट्रोल

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव 2023 टक्कर का होने वाला है। इसे डैमेज कंट्रोल के तौर पर देखा जा रहा है। पार्टी में नए नेताओं के आने के बाद पुराने नेताओं की पूछ-परख कम हो रही थी। टिकट बांटने को लेकर भी नाराजगी और असंतोष है। पार्टी ने क्षेत्रीय कद्दावर नेताओं को प्रत्याशी बनाकर बगावत को रोकने का प्रयास किया है। इससे निराश कार्यकर्ता भी एक बार फिर अलग-अलग क्षेत्रों में पार्टी से जुड़ रहे हैं। बड़े नेताओं के समर्थक कार्यकर्ता भी जोश में दिखाई दे रहे हैं।

### कांग्रेस पर मनोवैज्ञानिक दबाव

कांग्रेस ने अपने केंद्रीय मंत्रियों को चुनाव मैदान में उताकर कांग्रेस पर भी मनोवैज्ञानिक दबाव बना दिया है। पार्टी अपने प्रत्याशियों की सूची जारी नहीं कर पा रही है। कांग्रेस को अपनी रणनीति बदलना पड़ी है। भाजपा अभी और सांसदों को चुनाव मैदान में उतार सकती है। इसी वजह से कांग्रेस अब भाजपा की अगली सूची का इंतजार कर रही है।

### सीएम और डिप्टी सीएम से कम पद मंजूर नहीं

भाजपा के दिग्गजों के कद इतने बड़े हैं कि यदि चुनाव जीतते हैं तो मुख्यमंत्री या उप-मुख्यमंत्री बनेंगे। प्रदेश में सिर्फ मंत्री नहीं बनेंगे। प्रदेश में लंबे समय से मुख्यमंत्री के साथ दो डिप्टी सीएम बनाने की चर्चा चल रही है। इस पर कुछ नहीं हो सका।

### जिले की सीटों को भी जिताने की जिम्मेदारी

भाजपा का फोकस जीत पर है। इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार है। केंद्रीय मंत्रियों को पार्टी ने उनकी सीट के साथ ही जिले की बाकी सीटें जिताने की जिम्मेदारी दी है। यदि पार्टी जीतती है तो एक या दो को बड़े पद देकर प्रदेश में रख सकती है। बाकी अच्छा प्रदर्शन करने वाले नेताओं को इस्तीफा दिलाकर दोबारा लोकसभा चुनाव लड़ा सकती है।

### 79 सीटों में से 76 सीटें पार्टी पिछली बार हारी

भाजपा ने अब तक 79 सीटों पर अपने उम्मीदवारों की घोषणा की है। इसमें 76 सीटें पार्टी पिछले बार हार गई थी। केंद्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल और सांसद रीति पाठक को पार्टी ने जीती सीटों पर उतारा है। नरसिंहपुर में प्रहलाद के विधायक भाई जालम सिंह पटेल की रिपोर्ट सर्वे में ठीक नहीं आई थी। सीधी पेशाब कांड के कारण केदारनाथ शुक्ला की टिकट कटी है।

# वैशाली नगर से कांग्रेस के भरोसा यात्रा की शुरुआत

**दुर्ग।** छत्तीसगढ़ में बीजेपी की परिवर्तन यात्रा के जवाब में कांग्रेस की तरफ से एक दिवसीय भरोसा यात्रा का आयोजन भिलाई में किया गया। भिलाई के वैशाली नगर विधानसभा में कांग्रेसियों ने गांधी जयंती के अवसर पर महात्मा गांधी के प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। जिसके साथ ही कांग्रेस के भरोसा यात्रा की शुरुआत की गई।

महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने उनकी प्रतिमा पर मल्यार्पण कर कांग्रेस के भरोसा यात्रा की शुरुआत की। कांग्रेस के भरोसा यात्रा में सैंकड़ों की संख्या में युवा कांग्रेसियों ने बाइक रैली निकाली। जो जलेबी चौक से शुरु होकर वैशाली नगर विधानसभा क्षेत्र में भ्रमण पर निकली और दशहरा मैदान में समाप्त हुई। कांग्रेस सरकार लोगों का भरोसा जीता है। इसलिए एकदिवसीय भरोसा यात्रा निकाला जा रहा है, ऐसा कांग्रेसी कार्यकर्ताओं कहते दिखे। मुकेश चंद्राकर ने कहा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने जो वादा किया है, वह पूरा करके दिखाया है। लोगों का भरोसा कांग्रेस पार्टी पर है। इस भरोसा को जताने के लिए यह भरोसा यात्रा निकाला गया है।

दरअसल, छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव को लेकर सभी राजनीतिक पार्टियां मतदाताओं को साधने में लगी हैं। बीजेपी जहां परिवर्तन यात्रा निकालकर लोगों को कांग्रेस सरकार की कमियों और भ्रष्टाचार के आरोप लगा रही है। मतदाताओं को बीजेपी के लिए वोट करने की अपील कर रही है। वहीं अब कांग्रेस ने भी परिवर्तन यात्रा का जवाब देने के लिए विधानसभा स्तर पर एक दिवसीय भरोसा यात्रा निकाली है।

### सरगुजा में कांग्रेस की भरोसा यात्रा में शैलजा

**सरगुजा।** आज महात्मा गांधी की जयंती पर 2 अक्टूबर को कांग्रेस सरगुजा में भरोसा यात्रा करने के साथ ही चुनावी शंखनाद कर रही है। अंबिकापुर से यात्रा शुरू होकर लखनपुर पहुंचेगी। जहां आम सभा का आयोजन किया जाएगा। अंबिकापुर में भरोसा की यात्रा में शामिल होने के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव व छत्तीसगढ़ प्रभारी शैलजा कुमारी, उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव, चंदन यादव समेत तमाम नेता व विधायक संभाग मुख्यालय अंबिकापुर पहुंचे हैं। राजीव भवन में कार्यकर्ताओं से मुलाकात के साथ ही भरोसा यात्रा का शुभारंभ हुआ है। सुबह के बारिश होने के करण कार्यक्रम निर्धारित समय से लेट शुरू हुआ, लेकिन उत्साहित कार्यकर्ता बारिश में भी बाइक रैली में शामिल हैं। भाजपा की परिवर्तन यात्रा के खिलाफ कांग्रेस ने भरोसे की यात्रा शुरू की है। छत्तीसगढ़ की सभी 90 विधानसभा में ये यात्रा शुरू हो चुकी है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अपने विधानसभा क्षेत्र पाटन में भरोसा यात्रा में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिवारों को सम्मानित किया। सेलूद में आयोजित कार्यक्रम में सीएम भूपेश बघेल ने केंद्र और छत्तीसगढ़ की पूर्ववर्ती रमन सरकार पर जमकर निशाना साधा।

### भरोसे की यात्रा में कांग्रेसियों में दिखी गुटबाजी

**मुंगेली।** मुंगेली में भरोसे की यात्रा में कुर्सी की लड़ाई को लेकर दो कांग्रेसी नेताओं के बीच जमकर तू-तू मैं-मैं देखने को मिली। प्रेसवार्ता के दौरान दो जनप्रतिनिधि आपस में भिड़ गये। दरअसल नगर पालिका अध्यक्ष हेमेन्द्र गोस्वामी एवं मंडी अध्यक्ष आत्मा सिंह क्षत्रिय के बीच जिला संगठन प्रभारी के बगल में बैठने को लेकर विवाद हो गया। भरोसे की यात्रा में प्रेसवार्ता के दौरान कांग्रेसियों में खुलकर मतभेद देखने को मिला है। वहीं जिला संगठन प्रभारी आलोक सिंह ठाकुर ने कहा कि चुनाव के दौरान गुटबाजी नहीं होगी।

# राजनांदगांव में किसानों ने शुरु किया बोनस सत्याग्रह

**राजनांदगांव।** किसान संघ ने विधानसभा चुनाव के मद्देनजर प्रदेश सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला है । किसान संघ ने मांग की है कि जो वादे सरकार ने पिछले चुनाव में किए थे उसे जल्द पूरा करे।इसके लिए किसान संघ ने बोनस सत्याग्रह करके पदयात्रा निकाली। इस दौरान किसान संघ के प्रतिनिधियों ने पदयात्रा निकाली और महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने पदयात्रा का समापन किया।

प्रदेश किसान संघ के बैनर तले जिला किसान संघ के पदाधिकारी और सदस्यों ने गांधी जयंती के दिन पदयात्रा निकाली।जिसमें कांग्रेस सरकार से चुनाव से पहले किए गए वादों को पूरा करने की मांग की। जिला किसान संघ के संयोजक सुदेश टीकम ने बताया कि जन घोषणा पत्र में कांग्रेस ने चुनाव पूर्व किसानों से बहुत सारे वादे किए थे। जिसमें से एक वादा पूर्व की रमन सरकार के कार्यकाल का दो साल के बोनस भुगतान का भी था। लेकिन वादा पूरा नहीं हुआ।

किसान संघ संयोजक सुदेश टीकम ने कहा आचार संहिता लगने वाली है इसलिए आज 2 अक्टूबर गांधी जयंती के दिन हम बोनस सत्याग्रह पूरे प्रदेश में कर रहे हैं। हम सरकार से आग्रह करते हैं कि आचार संहिता के पहले बोनस का भुगतान किसानों को करते हुए अपना चुनावी वादा पूरा करें।

किसान संघ की माने तो इस बारे में सीएम भूपेश बघेल को ज्ञापन के माध्यम से कई बार सूचना भी दी गई। उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव से किसानों के दल ने मुलाकात भी की। इस दौरान वादे को याद दिलाया गया। लेकिन अभी तक वादे को पूरा नहीं किया गया। बोनस सत्याग्रह पदयात्रा राजनांदगांव कलेक्ट्रेट कार्यालय के सामने से निकली गई। पदयात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए पुराने बस स्टैंड में स्थित गांधी प्रतिमा के सामने खत्म हुई।इसके बाद किसान संघ के प्रतिनिधि रायपुर के लिए रवाना हुए।जहां सभी राजधानी में आयोजित किसानों की बोनस सत्याग्रह रैली में शामिल होंगे।

# भाजपा पार्षद पर लगा राम मंदिर ट्रस्ट की जमीन की राशि गबन करने का आरोप

**बेमेतरा।** राम मंदिर ट्रस्ट की जमीन के अंतरण के मामले में विधायक आशीष छाबड़ा पर आरोप लगाने वाले भाजपा पार्षद प्रवीण राजपूत पर ट्रस्ट की जमीन की कृषि कार्य के लिए नीलामी की राशि जमा नहीं करने का आरोप लगा है। कांग्रेस पार्टी इस प्रकरण में नपाध्यक्ष शकुंतला मंगत साहू व शहर कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सुमन गोस्वामी के नेतृत्व में जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंप कर कार्रवाई की मांग करेंगे।

सुमन गोस्वामी के अनुसार सूचना के अधिकार से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्री राम मंदिर ट्रस्ट बेमेतरा द्वारा वर्ष 2014-15 में कृषि कार्य के लिए ट्रस्ट की भूमि नीलामी में दी गई। वर्ष 2014 के कृषि कार्य के लिए सिंघौरी पटवारी हल्का नंबर 28 के अंतर्गत जमीन की नीलामी की गई। जिसमें 5.40 एकड़ धनहा रकबा, जिसकी सरकारी बोली 9 हजार 500 रुपए निर्धारित थी को 15 हजार 700 रुपए एक वर्ष के लिए भाजपा पार्षद प्रवीण नीलू राजपूत को प्रदान किया गया।

नपाध्यक्ष शकुंतला मंगत साहू के अनुसार जमीन पर इनके द्वारा कृषि कार्य कर अनाज का उत्पादन किया गया, लेकिन नीलामी की राशि 98 हजार 300 रुपए का भुगतान आज पर्यंत नहीं किया गया है। भाजपा पार्षद ने राम मंदिर ट्रस्ट को प्राप्त होने वाले राशि को जमा ना कर मंदिर समिति को आर्थिक नुकसान पहुंचाया है। यह ऐसे लोग हैं जो दूसरों पर तथ्यहीन झूठा आरोप लगाते हैं। भगवान राम के नाम से राजनीति करते हैं, पर स्वयं भगवान राम के नाम की जमीन का पैसा हड़पने से बाज नहीं आते।

सुमन गोस्वामी के अनुसार भगवान राम मंदिर ट्रस्ट की जमीन का उपयोग कर धन अर्जन करने के पश्चात निर्धारित राशि का भुगतान नहीं करना, सनातन धर्मावलंबियों की आस्था के साथ खिलवाड़ हैं। भाजपा के लोग प्रभु श्री राम के नाम पर शुरू से राजनीति करते आ रहे हैं। नीलामी को राशि गबन करने वाले विधायक पर अनर्गल व झूठे आरोप लगा रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता भी आधारहीन आरोपों को लेकर इन लोगों के साथ खड़े हैं, जो दुर्भाग्यपूर्ण है । इसलिए कांग्रेस पार्टी ने मंदिर की राशि का गबन करने वाले भाजपा पार्षद पर कार्रवाई की मांग की है।

उल्लेखनीय है कि हिंदू संगठन व भारतीय जनता पार्टी की ओर से बेमेतरा विधायक आशीष छाबड़ा पर पद का दुरुपयोग करते हुए अपने रिश्तेदार के नाम राम मंदिर ट्रस्ट की भूमि का अंतरण करने के आरोप लगाए गए, हालांकि विधायक ने भाजपा के आरोपो को नकारते हुए झूठे आरोप लगाने वाले हिंदू संगठन व भाजपा के नेताओं को कानूनी नोटिस भेजा है।

# बस्तर बंद मोदी के रैलियों में उमड़ते भीड़ से तिलमिलाई कांग्रेस का नया पैंतरा है : मरकाम

**नगरी।** भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष विकास मरकाम ने बस्तर बंद के कांग्रेस के ऐलान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक के बाद एक जनसैलाब के मामले में इतिहास रचती रैलियों से कांग्रेस तिलमिला गई है। कांग्रेस पार्टी 3 अक्टूबर को होने वाले मोदी जी के महा परिवर्तन रैली से घबराई हुई है और बस्तर की जनता को वहां तक जाने से रोकने के लिए बंद का ढोंग रच रही है। 5 साल में बस्तर का खून चूसने वाले, बस्तर को बदहाली के रास्ते पर धकेलने वाले और आदिवासियों का शोषण करने वाले कांग्रेस पार्टी मोदी के बस्तर दौरे से घबराई हुई है। मोदी जी बस्तर आकर हजारों करोड़ का सौगात भी देने वाले हैं जो कांग्रेसियों को पच नहीं रहा है।

उन्होंने कहा कि मैं भूपेश बघेल से पूछना चाहता हूं कि रैली में खलल डालकर बस्तर का माहौल गंदा करने की साजिश किसके कहने पर रची जा रही है? क्या कांग्रेस पार्टी के नेता बस्तर में दौरा नही करेंगे? विकास मरकाम ने कहा यदि मोदी जी के रैली में किसी तरह की खलल डाली गई तो बीजेपी कांग्रेस पार्टी की एक भी रैली बस्तर में नही होने देगी। भाजपा भी बस्तर संभाग में अवैध धर्मांतरण, आवास, नल जल योजना में भ्रष्टाचार और स्थानीय भर्ती में आरक्षण छीने जाने को लेकर एक के बाद एक बंद का कार्यक्रम करेगी।

विकास मरकाम ने कहा कि 70 सालों तक कांग्रेस ने PSUs को बीमारू बनाकर, भ्रष्टाचार का अड्डा बनाकर रखा। कांग्रेसियों के पेट पालने का दबाव कांग्रेस पर इतना था कि 2013 आते-आते ये PSU अवसादग्रस्त होकर ऋष्ण के बोझ तले दब गए। देश के लिए एनपीए बन गए। PSUs की भलाई के लिए कोई भी सकारात्मक काम भी कांग्रेस को पचता नहीं है। मरकाम ने कहा बस्तर को बीमारू बनाने वाली कांग्रेस पार्टी पूरे देश में अपना अस्तित्व खो चुकी है अब नगरनार में मालिकाना हक मांग कर उससे गांधी परिवार का पेट पालने की तैयारी में है लेकिन केंद्र की संपत्ति पर लालच ठीक नही है। भूपेश बघेल अपनी संवैधानिक दायरा भी भूल चुके है। कल को वो बीएसपी में अपना हिस्सा मांगेंगे और आगे एनटीपीसी पर कांग्रेस का कब्जा करना चाहेगी।

बीजेपी ने 15 साल के इतिहास में प्रदेश में उद्योग, कारखाने एवं रोजगार प्रदान करने वाले प्रतिष्ठानों की झड़ी लगा दी थी। लेकिन पांच सालों में कांग्रेस ने गोबर और गोठान पर ठीक से काम नही किया 1400 करोड़ का गोबर घोटाला कर दिया। गौठनो में गाय नहीं भूपेश बघेल की एक ही फ्लैगशिप योजना थी वो भी बर्बाद हो गई और दंभ भरते है नगरनार को चलाने का! विकास मरकाम ने कांग्रेस पार्टी को चेतावनी देते हुए कहा यदि कांग्रेस पार्टी प्रधानमंत्री जी रैली में खलल डालने की कोशिश करती है तो ये उनकी ऐतिहासिक भूल होगी जिसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ेगा।

# भू-विस्थापित किसान आज होंगे कलेक्ट्रेट घेराव में शामिल

**कोरबा।** छत्तीसगढ़ किसान सभा तथा भू-विस्थापित रोजगार एकता संघ ने एसईसीएल के क्षेत्र में काबिज भू-विस्थापितों को पट्टा देने, पूर्व में अधिग्रहित भूमि मूल खातेदार किसानों को वापस करने, लंबित रोजगार प्रकरणों, पुनर्वास एवं खनन प्रभावित गांवों की समस्याओं के निराकरण के साथ 14 सूत्रीय मांगो को लेकर 3 अक्टूबर को कलेक्ट्रेट घेराव के साथ घेरा डालो-डेरा डालो आंदोलन की घोषणा की है। जिला प्रशासन और एसईसीएल के आश्वाशन से थके भू विस्थापितों ने किसान सभा के नेतृत्व में अब आर की लड़ाई लड़ने का मन बना लिया है। घेराव को सफल बनाने की तैयारी को लेकर गांव गांव में पर्चे वितरण और बैठक कर भू विस्थापितों को एकजुट किया जा रहा है। किसान सभा के जिलाध्यक्ष जवाहर सिंह कंवर,दीपक साहू,जय कौशिक, भू विस्थापित संघ के नेता रेशम यादव,दामोदर श्याम,रघु यादव ने आंदोलन को सफल बनाने की अपील की है। कलेक्ट्रेट घेराव आंदोलन को भू विस्थापितों के साथ आम जनता का भी व्यापक जनसमर्थन मिल रहा है। माकपा के जिला सचिव प्रशांत झा ने बताया कि जिला प्रशासन की मदद से एसईसीएल द्वारा कुसमुंडा, गेवरा, कोरबा, दीपका क्षेत्र में कई गांवों का अधिग्रहण किया गया है। इस जबरन अधिग्रहण का शिकार गरीब किसान हुए हैं। आज भी हजारों भू-विस्थापित पट्टा, जमीन वापसी, रोजगार, बसावट और मुआवजा के लिए कार्यालयों के चक्कर काट रहे है। अधिग्रहण के बाद जिन जमीनों पर 40 सालों में भी कोल इंडिया ने भौतिक कब्जा नहीं किया है और मूल किसान ही पीढ़ियों से काबिज है, उन्हें किसानों को वापस किया जाना चाहिए। जब किसानों की जबरन अधिग्रहित भूमि पर काबिज लोगों को पट्टे दिए जा रहे हैं, तो पुनर्वास गांवों के हजारों भू.विस्थापित किसानों को पट्टों से वंचित रखना समझ के परे हैं। इस क्षेत्र में जिला प्रशासन की मदद से एसईसीएल ने अपने मुनाफे का महल किसानों और ग्रामीणों की लाश पर खड़ा किया है। माकपा और किसान सभा इस बर्बादी के खिलाफभू विस्थापितों के चल रहे संघर्ष में हर पल उनके साथ खड़ी है। किसान सभा नेता जवाहर सिंह कंवर, दीपक साहू, जय कौशिक, शिवदयाल कंवर, देवकुमार पटेल, विजय कंवर, बसंत चौहान ने भू-विस्थापितों की समस्याओं के लिए जिला प्रशासन और एसईसीएल प्रबंधन दोनों को ही जिम्मेदार ठहराया है।

## छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

### कवासी लखमा ने 30 साल बाद चुकाई ब्याज समेत उधारी

**सुकमा।** छत्तीसगढ़ के आबकारी मंत्री कवासी लखमा अपने अनोखे अंदाज के लिए जाने जाते हैं। अक्सर वो जनता के बीच जाकर कुछ ऐसा करते हैं,जिनसे उनका जुड़ाव लोगों के प्रति और भी गहरा हो जाता है। पिछले दिनों आबकारी मंत्री कवासी लखमा सुकमा दौरे पर जनसंपर्क कर रहे थे। इसी दौरान उनकी मुलाकात गांव के ही एक शख्स से हुई। ये वही शख्स था जिसके पिता से कवासी लखमा ने आज से तीस साल पहले 3 हजार रुपए उधारी लिए थे। कवासी लखमा ने उधारी की रकम से खेती किसानी की थी। लेकिन इससे पहले की लखमा अपनी ली हुई उधारी चुका पाते शख्स की मौत हो गई। इसके बाद कवासी लखमा को याद थी। लिहाजा जब वो जनसंपर्क के दौरान शख्स के बेटे से मिले तो उन्हें अपनी ली गई उधारी की रकम याद थी। लिहाजा लखमा ने बिना देरी किए उधारी की रकम ब्याज समेत वापस लौटाई। इस दौरान अपना पैसा पाकर शख्स काफी खुश हुआ।

### नक्सली कैम्प ध्वस्त, डीआरजी और छ्सबल की संयुक्त कार्रवाई

**बीजापुर।** जिले के मिरतुर थाना क्षेत्र मदपाल के जंगलों में नक्सलियों के कैम्प को पुलिस की संयुक्त पार्टी ने ध्वस्त कर दिया है। वहां से नक्सलियों के कई सामान बरामद किए गए हैं। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, पुलिस को सूचना मिली थी कि भैरमगढ़ ब्लाक के मिरतुर थाना क्षेत्र के कुडमेर और मदपाल के जंगलों में भैरमगढ़ एरिया कमेटी की सचिव सुमित्रा और एसीएम शंकर कारम सहित 10 -15 सशस्त्र नक्सलियों की मौजूदगी है। जिसके बाद डीआरजी और 19/ए वी वाहिनी छसबल बेचापाल की संयुक्त टीम नक्सल विरोधी अभियान पर निकली। अभियान के दौरान सुबह 7 बजे मदपाल के जंगलों में पुलिस की संयुक्त पार्टी द्वारा नक्सली कैम्प ध्वस्त किया गया। नक्सली पुलिस की उपस्थिति को देख भाग निकले। मौके से पुलिस ने डेटोनेटर, टूल्स, नक्सली वर्दी, पिट्ठू, नक्सली साहित्य, दवाइयां और रोजमर्रा के सामान कैम्प से बरामद किये हैं।

### श्रवण मरकाम ने किया शेड निर्माण कार्य का भूमिपूजन

**नगरी।** ग्राम पंचायत गोरेगांव गांधी चौक में भाजपा प्रत्याशी सिहावा विधानसभा क्र.-56 श्रवण मरकाम ने सांसद निधि से स्वीकृत शेड निर्माण कार्य का भूमि पूजन सम्पन्न किया।। उक्त अवसर पर भाजपा प्रत्याशी श्रवण मरकाम ने ग्रामीणों को सम्बोधित करते हुये कहा कि केन्द्र सरकार की जन कल्याणकारी योजनायें जिनका लाभ हर घर में मिल रहा है, जो कि जन्म से मृत्यु तक की योजनायें प्रसारित है लेकिन इन योजनाओं पर झूठ और प्रपंच रचकर कांग्रेस सरकार द्वारा झूठा श्रेय लेने का काम किया जा रहा है। आज भूपेश सरकार आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबी हुई है जिससे रोज इनके नेताओं, अधिकारियो के घरों में भ्रष्टाचार से अर्जित की हुई आकूट धन-सम्पत्तियां निकल रही है, वही विधानसभा की विधायक क्षेत्र में विकास कार्य करने में शून्य हैं। कहीं भी पांच साल के कार्यकाल में कहीं कोई विकास कार्य नही दिखता। उक्त अवसर पर जिला महामंत्री प्रकाश बैस,मंडल अध्यक्ष मोहन नाहटा,महामंत्री हृदय साहू,राजेश गोसाई,सांसद प्रतिनिधि कमल डागा, मोहन पुजारी आदि उपस्थित रहे।

### 16 को मुख्यालय बिलासपुर का घेराव करेंगे विस्थापित

**कोरबा।** ग्रामीण एसईसीएल के भूविस्थापित विरोधी गतिविधियों से त्रस्त हो गए हैं । बार-बार आवेदन निवेदन के बाद भी मांगों पर केवल आश्वासन देकर गुमराह किया जा रहा है । विदित हो कि 26 सितंबर को बुडबुड खदान में आंदोलन किया गया था। जिसके संबंध में मुख्यालय के अधिकारियों की उपस्थिति में 29 सितंबर को महाप्रबंधक कार्यालय कोरबा में बैठक आयोजित की गई थी। वार्ता सकारात्मक नहीं होने के कारण ग्रामीण असंतुष्ट होकर एसईसीएल मुख्यालय घेराव करने के लिए मन बना लिए है। जिसके तारतम्य में ग्राम करतली में क्षेत्रीय पंचायत प्रतिनिधि व 7-8 पंचायत के ग्रामीण उपास्थित हुए। जिसमे 16 अक्टूबर को एसईसीएल मुख्यालय घेराव करने हेतु निर्णय लिया गया। मुख्यालय घेराव में चारों परियोजनाओं की रोजगार, मुआवजा बसाहट, वैकल्पिक रोजगार, बसाहट का पट्टा एवम अन्य समस्याओं को लेकर आंदोलन किया जाएगा। कोरबा जिले में गेवरा,दीपिका, कुसमुंडा,कोरबा परियोजना के द्वारा उत्खनन कार्य किया जा रहा है।

### कांग्रेसियों को भ्रष्टाचार से फुर्सत नहीं : लखन देवांगन

**कोरबा।** पूर्व महापौर भाजपा कोरबा विधानसभा प्रत्याशी लखन लाल देवांगन नगर निगम क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 51 अगारखार एवं लाटा बस्ती में गली गली जनसंपर्क कर जनता-जनार्दन से आशीर्वाद लेते हुए कोरबा में भाजपा का कमल खिलाने अपील किए। इस दौरान वार्ड वासियों ने समस्याओं को गिनाया। भाजपा प्रत्याशी लखन देवांगन ने कहा यहां के कांग्रेस विधायक ने 15 साल से राज किया 10 सालों से कांग्रेस के महापौर रहे और विकास के नाम पर केवल और केवल ढिंढोरा पीटते हैं सड़कों की हालत आप सभी देख रहे हैं नाली की गंदी पानी सड़कों में बह रही है। कांग्रेसियों को भ्रष्टाचार करने में फुर्सत नहीं है। जब मैं महापौर था तो अनेको भवन निर्माण एवं सांस्कृतिक मंच सीसी रोड का निर्माण कराया था। भवन तो आज भी वही है उसका भी ना मरम्मत कराया गया ना जीणोद्धार। निश्चित ही कोरबा की जनता बदलाव चाहती है और इस बार परिवर्तन करके रहेगी। आप सभी आशीर्वाद दें निश्चित तौर पर भाजपा के सेवा और सुशासन के संकल्प को पूरा करेंगे।

# डोंगरगढ़ में मां बम्लेश्वरी मंदिर में शुरू हुई नवरात्र की तैयारियां

**राजनांदगांव।** विश्व प्रसिद्ध मां बम्लेश्वरी मंदिर डोंगरगढ़ में नवरात्रि को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई है। बम्लेश्वरी मंदिर में हर साल शारदीय नवरात्र पर लाखों श्रद्धालु प्रदेश और आसपास के राज्यों से आते हैं। इसे देखते हुए मंदिर समिति ने भी तैयारी शुरू कर दी है।

### 5 अक्टूबर को नवरात्र को लेकर अहम बैठक

डोंगरगढ़ के श्री बम्लेश्वरी मंदिर ट्रस्ट के संजीव गोमास्ता ने बताया कि 5 अक्टूबर को मंदिर समिति के साथ जिला प्रशासन की बैठक है। इस मीटिंग में नवरात्रि की तैयारी को लेकर बैठक होगी। जिसमें जिले के कलेक्टर भी शामिल होंगे।

संजीव गोमास्ता ने कहा मंदिर समिति ने नवरात्र की तैयारी शुरू कर दी है। हर साल नवरात्र पर लगभग 15 लाख से ज्यादा श्रद्धालु माता के दर्शन के लिए छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और अन्य राज्यों से आते हैं। इस बार भी नवरात्रि में दर्शन के लिए आने वाले भक्तों की सुविधा के लिए मंदिर समिति की तरफ से विशेष तैयारी की जा रही है। जिसमें विशेष लाइटिंग व्यवस्था, पैदल चलने वालों के लिए विशेष व्यवस्था, मनोकामना ज्योति कलश है।

### मंदिर ट्रस्ट की बैठक में आरोप प्रत्यारोप

इससे पहले रविवार को मंदिर ट्रस्ट की बैठक हुई। जिसमें कई विषयों पर चर्चा की गई। वर्तमान ट्रस्ट पैनल ने बैठक के दौरान पूर्व ट्रस्ट पैनल पर कई गंभीर आरोप लगाए। जो मंदिर कैंटीन, एंबुलेंस के कैश बुक से संबंधित थे। इनका आरोप था कि पुरानी समिति ने एक बार भी मंदिर का बजट पेश नहीं किया जबकि नियमों के मुताबिक हर साल बजट सदस्यों के बीच रखा जाना हैं। साथ ही सदस्यों का भी बिना कारण सदस्यता खत्म करने का आरोप लगाया। इधर पूर्व ट्रस्ट पैनल में मंत्री रहे नवनीत तिवारी ने उनके पैनल पर लगाए गए आरोपों को निराधार बताया।

राजनांदगांव जिले में धर्म नगरी के नाम से प्रसिद्ध डोंगरगढ़ में विश्व प्रसिद्ध मां बम्लेश्वरी देवी विराजती है। छत्तीसगढ़ में पर्यटन के क्षेत्र में डोंगरगढ़ का महत्वपूर्ण स्थान है। डोंगरगढ़ शहर तक पहुंचने के लिए श्रद्धालुओं के लिए रेल और रोड दोनों की सुविधा उपलब्ध है।

यहां मां बम्लेश्वरी देवी के दो मंदिर है। बड़ी बम्लेश्वरी देवी 1600 फीट ऊपर पहाड़ों पर विराजती है जबकि छोटी मां बम्लेश्वरी देवी नीचे हैं। जहां हर साल चैत्र और शारदीय नवरात्र में लाखों श्रद्धालु मां के दर्शन करने आते हैं।

# भूपेश सरकार प्रदेश के हर वर्ग का ध्यान दे रही है

**नगरी।** सिहावा विधानसभा के विधायक डॉ लक्ष्मी ध्रुव के द्वारा ग्राम भैसासांकरा में सामुदायिक भवन निर्माण कार्य का भूमिपूजन किया। ग्रामीणों ने बताया कि भैसासांकरा में एक भी सामुदायिक भवन नही होने से कई प्रकार के समस्याओं को सामना करना पड़ता था। ग्रामवासियों द्वारा क्षेत्रीय विधायक को अवगत कराया गया, जिसे तत्काल संज्ञान में लेते हुए सामुदायिक भवन निर्माण हेतु 05 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की गई जिसका आज विधायक डॉ. लक्ष्मी ध्रुव एवं ग्रामवासियों की उपस्थिति में भूमिपूजन किया गया। विधायक को अपने बीच पाकर ग्रामवासियों खुशी जाहिर की एवं भव्य स्वागत सत्कार किया विधायक ने अपने उद्बोधन में कहा कि भूपेश सरकार प्रदेश के हर वर्ग को ध्यान दे रही है। चाहे किसानों की बात हो या मजदूरों की बात हो सबके लिय योजना बनाकर बेहतर ढंग से कार्य कर रही है। गोधन न्याय योजना से सीधे किसानों के खाते में पैसा पहुंचाया जा रहा है। भूमिहीन किसानों को भी राशि देने का कार्य कर रही है। ग्राम पंचायत में राजीव युवा मितान बनाकर छत्तीसगढ़िया खेल एवं संस्कृति को सबल बनाने का काम किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्रो में भी बेहतर कार्य हो रही है। विगत दो वर्ष कोरोना काल होने के बाद भी सिहावा विधानसभा क्षेत्र में 90 सामुदायिक भवनों को निर्माण कराया गया है।

उक्त कड़ी में आज ग्राम भैसासांकरा में भी सामुदायिक भवन निर्माण कार्य का भुमिपूजन हुआ। उक्त कार्यक्रम में ब्लाक कांग्रेस कमेंटी नगरी अध्यक्ष भूषण सहू, ब्लाक कांग्रेस कमेंटी बेलरगांव अध्यक्ष कैनाशनाथ प्रजापति, ग्राम समिति अध्यक्ष ओम प्रकाश बिसेन, भनेश्वर साहू, नुतन साहू, प्रभाग बिसेन, योगेश्वर सोम, वेदप्रकाश नागवंशी, मुंगेश ध्रुव, दिलरप यादव, चुम्मन नेताम, तामेश ध्रुव, दिलीप सोम, गजेन्द्र यादव, हेमन्त बिसेन, क्रान्ति बिसेन, बसंत बिसेन, श्रीमती पदमा साहू, रेखा यादव, उमा यादव आदि उपस्थित थे।

## संक्षिप्त समाचार

### महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री को उनकी जयंती पर मुख्यमंत्री ने किया नमन

**रायपुर।** मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सोमवार

को यहाँ अपने निवास कार्यालय में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री और शायर हाजी हसन अली की जयंती पर उनके छायाचित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य खनिज विकास निगम के अध्यक्ष श्री गिरीश देवांगन भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री बघेल ने महात्मा गांधी के देश के लिए अमूल्य योगदान को याद करते हुए कहा कि गांधी जी ने भारत में स्वाधीनता आंदोलन को नई दिशा दी। उन्होंने सत्य, प्रेम और अहिंसा का मार्ग अपनाकर पूरे विश्व के सामने मिसाल कायम की। उन्होंने देश में जिस ग्राम स्वराज की कल्पना की थी, छत्तीसगढ़ सरकार उसे पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री को स्मरण करते हुए कहा कि शास्त्री जी ने सादगी से जीवन जिया और अपना पूरा जीवन गरीबों की सेवा में अर्पित कर दिया। वास्तव में वे सच्चे गांधीवादी थे। उन्होंने भारतीय स्वाधीनता संग्राम में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने वर्ष 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय देश को कुशल नेतृत्व प्रदान किया और जय जवान-जय किसान का नारा देकर जनता का मनोबल बढ़ाया, जिससे सारा देश एकजुट हो गया। श्री बघेल ने कहा कि शास्त्री जी जैसे कर्मयोगी सदा लोगों को प्रेरित करते रहेंगे।

### मुख्यमंत्री भूपेश बघेल 6 को आएंगे कांकेर, तैयारियां शुरू

**कांकेर।** प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल का जिले में 6 अक्टूबर को जिला मुख्यालय में प्रवास प्रस्तावित कार्यक्रम में वे शिरकत करेंगे। इसे लेकर जिला प्रशासन द्वारा आवश्यक तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। स्थानीय गोविंदपुर के खेल मैदान में प्रस्तावित कार्यक्रम 06 अक्टूबर को आयोजित किया जाएगा। इस दौरान वृहत मंचीय कार्यक्रम का आयोजन होगा। इसे लेकर कलेक्टर डॉ. प्रियंका शुक्ला, एसपी श्री दिव्यांग पटेल ने आज सुबह 11 बजे गोविंदपुर स्थित समारोह स्थल का जायज़ा लिया, साथ ही अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान अधिकारी द्वय ने तैयार किए जा रहे मुख्य मंच, वीआईपी लाउंज, ग्रीन हाउस, दर्शक दीर्घा, पत्रकार दीर्घा, लोकार्पण-शिलान्यास स्थल, हितग्राहियों की बैठक व्यवस्था सहित विभिन्न स्थलों का सघन अवलोकन कर संबंधित अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिए। इस अवसर पर डीएफओ श्री आलोक बाजपेई, अपर कलेक्टर श्री एस. अहिरवार, जिला पंचायत के सीईओ श्री सुमित अग्रवाल, एसडीएम मनीष साहू, अतिरिक्त सीईओ श्री वीरेंद्र जायसवाल सहित जिला स्तर के अधिकारीगण उपस्थित थे।

### कांग्रेस में 65 सीटों पर सिंगल नाम तय

**रायपुर।** कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी ने विधानसभा चुनाव के लिए 65 सीटों पर सिंगल नाम तय कर दिए हैं। कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में हुई कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी की मैराथन बैठक में नामों पर मंथन किया गया। बैठक में 90 सीटों में से 65 पर सिंगल नाम तय हो गए हैं। अन्य एक से अधिक नाम वाली 25 सीटों को लेकर रायशुमारी जारी है। जिन सीटों पर नाम तय हो चुका है, उसकी सूची अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के केंद्रीय चुनाव समिति को भेजी जाएगी। पार्टी सूत्रों के मुताबिक स्क्रीनिंग कमेटी के बाद केंद्रीय चुनाव समिति की अनुमति के बाद नामों पर मुहर लगेगी। नवरात्रि में कांग्रेस की पहली सूची जारी होगी। एक से अधिक नाम वाली सीटों पर कोर ग्रुप की बैठक में भी निर्णय लिया जाएगा। 25 सीटों पर अनिर्णय की स्थिति बनी हुई है। यहां एक से ज्यादा दावेदारों के नाम सामने रखे गए। स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में कमेटी के अध्यक्ष अजय माकन ने भी अपनी एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसका मिलान स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में प्रस्तुत नामों के साथ हुआ। 25 सीटों में कुछ ऐसी हाईप्रोफाइल सीटें भी हैं, जहां वर्तमान में कई नेताओं की टिकट खतरे में दिखाई पड़ रही है।

### राजधानी में निकला भरोसा यात्रा

**रायपुर।** संसदीय सचिव एवं विधायक विकास उपाध्याय, शहर अध्यक्ष गिरीश दुबे के नेतृत्व में पश्चिम विधानसभा में सैंकड़ों कार्यकर्ताओं ने बाइक रैली कर कांग्रेस

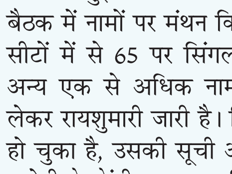

भरोसा यात्रा निकाली। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी की सरकार द्वारा जो जनहितकारी कार्य लगातार साढ़े चार वर्षों में किये गए हैं, उन्हीं कार्यों की सफलता को लोगों तक पहुंचना था। साईंस कॉलेज हनुमान मंदिर में पूजा अर्चना कर बाइक रैली की शुरूआत हुई जो रायपुर पश्चिम के आमापारा से होते हुए गुरु घासीदास प्लाजा, अग्रसेन चौक, कबीर चौक रामनगर, पहाड़ी चौक शुक्रवारी बाजार, गुढियारी पड़ाव होते हुए मारूति मंगलम, खमतराई दुर्गा मंदिर, अंडर ब्रिज, महतारी चौक, कोटा, मोहबा बाजार, टाटीबंध, सरोना, रायपुरा, गोल चौक होते हुए डंगनिया से तात्यापारा, रामसागर पारा, तेलघानी नाका चौक होते हुए वापस एनआईटी के सामने यात्रा का समापन हुआ।

# पीएससी घोटाले पर सीएम भूपेश जांच क्यों नहीं कराते: राजेश मूणत

**रायपुर।** छत्तीसगढ़ में पीएससी घोटाला को लेकर प्रदेश की राजनीति गरमाई हुई है। मामले में पक्ष और विपक्ष जमकर आरोप प्रत्यारोप लगा रहे हैं। एक दूसरे पर हमला बोल रहे हैं। प्रदेश के पूर्व मंत्री राजेश मूणत ने आज सोमवार को बीजेपी प्रदेश कार्यालय एकात्म परिसर में प्रेस कॉन्फ्रेंस लेकर भूपेश सरकार पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि सीएम भूपेश बघेल पीएससी घोटाले में जांच कराने की घोषणा क्यों नहीं कर रहे हैं? केवल दिखावे के लिए शिकायत आने पर जांच की बात कह रहे हैं। उन्होंने राज्य सरकार पर कई गंभीर आरोप लगाए। कहा कि, छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री के सह पर स्कैम हुआ है। इस काम में जेल में बंद अधिकारी को सीएम का साथ था।

%भूपेश है तो भरोसा है% को लेकर कटाक्ष करते हुए कहा कि भूपेश ने जनता का भरोसा तोड़ने का काम किया है। 3 अक्टूबर से बीजेपी दूरबीन लेकर सरकार के विकास के काम को ढूंढने निकलेगी। राजधानी में एजुकेशन हब के नाम पर जमकर भ्रष्टाचार किया गया है। सीएम भूपेश ने रायपुर के विकास के लिए 1 हजार करोड़ दिए, उसका कोई टेंडर नहीं हुआ। दावा करते हुए कहा कि भाजपा के 15 साल के कार्यकाल में एक भी भूमिपूजन बिना टेंडर के नहीं हुआ है। बिना टेंडर

के ही सोनिया गांधी से के हाथों विधानसभा भवन का भूमिपूजन करवाया गया।

उन्होंने जरवाय स्थित गौठन का मुद्दा उठाते हुए कहा कि 6 गाये मर गईं और मामले में निगम प्रशासन मौन रहा। कमिश्नर राजनीति कर रहे हैं। गौठान के नाम पर करोड़ खर्च किए गए, लेकिन गायों को चारा-पानी तक नसीब नहीं हो रहा है। इतना ही नहीं इन गौठानों में मवेशियों के लिए इलाज की सुविधा और रखरखाव की उचित व्यवस्था तक नहीं है। मवेशी बुरी हालत में रहने को मजबूर हैं। आरोप लगाया कि बिना चारा-पानी के 6 गायों ने दम तोड़ दिया। इसके लिए भूपेश सरकार को गौ हत्या का पाप लगेगा।

### प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज आएंगे बस्तर

**जगदलपुर-रायपुर।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ के बस्तर दौरे पर रहेंगे, उनके आगमन को लेकर तैयारियां चल रही है। बताया जा रहा है कि पीएम मोदी के प्रवास को लेकर करीब 5 हजार से ज्यादा जवानों की तैनाती की गई है, प्रधानमंत्री का 19 दिन में यह तीसरा छत्तीसगढ़ दौरा है। फिलहाल प्रधानमंत्री के बस्तर दौरे को लेकर ऑफिशियल प्रोटोकॉल जारी नहीं हुआ है, 3 अक्टूबर को सुबह 10:30 बजे मां दंतेश्वरी एयरपोर्ट पहुंच सकते हैं। जानकारी के मुताबिक करीब 11:00 बजे लालबाग मैदान में एक प्रशासनिक कार्यक्रम में शामिल होंगे। इस आयोजन के लिए एक अलग डोम बनाया गया है, कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सहित सरकार के अन्य मंत्री भी शामिल हो सकते हैं। कल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस मंच से नगरनार स्टील प्लांट, एनएमडीसी सुपर स्पेशलिस्टी हॉस्पिटल जगदलपुर किरंदुल रेलवे लाइन दोहरीकरण एवं अन्य कार्यों का लोकार्पण करेंगे। यह कार्यक्रम आधा घंटा तक चलेगा। मुख्य सचिव अमिताभ जैन और डीजीपी अशोक जुनेजा ने तैयारी का जायजा लिया।

# मोदी के दौरे के दौरान बस्तर बंद पर विजय बघेल का मुख्यमंत्री पर हमला

**दुर्ग।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ के बस्तर दौरे पर आ रहे हैं। लेकिन इससे पहले ही भूपेश बघेल ने पीएम पर गंभीर आरोप लगाते हुए बस्तर बंद का आह्वान कर दिया। दुर्ग सासंद विजय बघेल ने बस्तर बंद को लेकर सीएम भूपेश पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का दौरा

है और प्रदेश के सीएम बस्तर बंद करा रहे हैं। ऐसा शायद ही देश में कही देखने को मिला है।

विजय बघेल ने कहा छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल की बुद्धि मारी गई है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल बौखला गए हैं। पीएम मोदी बस्तर आएंगे तो आदिवासियो की बात करेंगे, उनकी बात सुनेंगे। लेकिन इस बात से सीएम को दर्द और पीड़ा हो रही है। विजय बघेल ने कहा भाजपा की परिवर्तन यात्रा से कांग्रेस बौखला गई है। प्रधानमंत्री आए और आप बस्तर बंद का आह्वान कर रहे हैं।ये ओछी राजनीति देश के इतिहास में पहली बार किसी राज्य में हो रही है।

**भूपेश का भरोसा हुआ खत्म-** दुर्ग सांसद विजय बघेल ने कांग्रेस के भरोसे की यात्रा पर भी तंज कसा। उन्होंने कहा कि- जगह जगह लिखा गया था कि भूपेश है तो भरोसा है। लेकिन कहां है वो भरोसा ? भरोसे की सरकार अब खत्म हो गई है। ये सब दिखावा है।आज से कांग्रेस शुरू कर रही भरोसे की यात्रा- कांग्रेस आज से छत्तीसगढ़ की सभी 90 विधानसभा में भरोसे की यात्रा निकाल रही है। सीएम भूपेश बघेल भरोसे के सम्मेलन में शामिल होने अपने विधानसभा क्षेत्र पाटन में रहेंगे। सीएम ने अपने दौरे की जानकारी ट्वीट कर दी। पाटन में स्कूल ग्राउंड सेलूद से बस स्टैंड पाटन तक कांग्रेस की भरोसा यात्रा चलेगी।

# छत्तीसगढ़ में नक्सली घटनाओं में आई कमी, सरकार का दावा

**रायपुर।** बघेल सरकार चुनावी साल में राज्य की बेहतरी का दावा कर रही है। सीएम भूपेश बघेल लगातार बीजेपी के 15 साल की तुलना में अपने पांच साल के कार्यकाल को छत्तीसगढ़ के लिए बेहतर बता रहे हैं। इस संदर्भ में अब कांग्रेस सरकार ने दावा किया है कि छत्तीसगढ़ में नक्सली घटनाओं में 52 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई है। इसके साथ ही बघेल सरकार की तरफ से ये दावा किया गया है कि छत्तीसगढ़ के 589 गांव नक्सलमुक्त हो गए हैं।

पीएम मोदी मंगलवार को बस्तर के दौरे पर आ रहे हैं। उनके बस्तर दौरे से एक दिन पहले कांग्रेस ने राज्य में नक्सल समस्याओं में कमी को लेकर बयान जारी किया है। बघेल सरकार की तरफ से दावा किया गया है कि सीएम बघेल की अगुवाई में राज्य सरकार गढ़बो नवा छत्तीसगढ़ के विचार के साथ काम कर रही है। सरकार की ओर से विश्वास, सुरक्षा और विकास की त्रिस्तरीय रणनीति पर काम किया जा

रहा है। इस पर बघेल सरकार लगातार आगे बढ़ रही है। राज्य की बुनियादी पुलिसिंग जनता का विश्वास जीतने में सफल रही है। राज्य सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति से नक्सल समस्याओं में कमी आई है। राज्य में नक्सली हिंसा की घटनाओं में 52 प्रतिशत की गिरावट आई है। नक्सल हिंसा के कारण डेढ़ दशक से बंद पड़े 314 स्कूल बस्तर में दोबारा खोले गए हैं। कुल 589 गांवों और 5.74 लाख से अधिक लोगों को नक्सल हिंसा से मुक्त कराया गया है।

बघेल सरकार की तरफ से दूसरा दावा क्राइम की घटनाओं में कमी को लेकर किया गया है। सरकार ने दावा किया है साल 2019 से अब तक छत्तीसगढ़ में महिला अपराध में 40 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है।

# टिकट बंटवारे से पहले कांग्रेस के दो गुट, विधायक का विरोध

- **केके ध्रुव को बाहरी बतलाते हुए सभी एक सुर में सामने आ गए**

**गौरेला-पेंड्रा-मरवाही।** छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव की तारीखों की अभी घोषणा होनी बाकी है, पर मरवाही में कांग्रेस कार्यकर्ता और नेताओं के बीच आपसी मतभेद भी देखने को मिल ही जाते हैं। लेकिन स्वीकारता कोई नहीं। गौरेला पेंड्रा मरवाही में कांग्रेस के पदाधिकारी आपस में भीड़ गए। मंच से ही वर्तमान विधायक का जमकर विरोध होने लगा। मरवाही के कांग्रेसी दो गुट में बंटते नजर आ रहे हैं। वर्तमान विधायक के के ध्रुव को बाहरी बतलाते हुए सभी एक सुर में सामने आ गए हैं।

प्रदेश में आने वाले दिनों में विधानसभा चुनाव होने हैं। भाजपा ने जहां मरवाही विधानसभा के लिए अपने प्रत्याशी की घोषणा भी कर दी है तो कांग्रेस में गुटबाजी जो अब तक पीठ पीछे ही देखने को मिलती थी। अब खुलकर सामने आ रही है। मरवाही के जनपद उपाध्यक्ष और जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष अजय राय के जन्मदिन के मौके पर गंगनई के नेचर कैंप में पार्टी रखी गई थी।

जहां पर मरवाही विधायक डॉ. के के ध्रुव सहित जिले के सभी कांग्रेसी मौजूद थे। मंचीय भाषण का प्रोग्राम चल रहा था। तभी मरवाही

से कांग्रेस के पूर्व प्रत्याशी रहे गुलाब राज और जिला पंचायत सदस्य सुभम पेंद्रो के द्वारा अपनी ही पार्टी के विधायक ध्रुव्र के ऊपर उनके निरंकुश होने का आरोप लगाने लगे और उनके निरंकुशता की वजह उनके बाहरी होने का बताने लगे और आगामी चुनाव में स्थानीय प्रत्याशी को टिकट देने की मांग मच से किया जाने लगा।

इस बात से नाराज होकर कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष मनोज गुप्ता और विधायक के के ध्रुव कार्यक्रम को बीच में छोड़कर जाने लगे। जिसके बाद मनोज गुप्ता, प्रमोद परस्ते और शुभम पेंद्रो बीच जमकर बहस होने लगा। हालांकि बीच बचाव के बाद मामला जरूर शांत हो गया। विधानसभा चुनाव के पहले इस तरह की कांग्रेस की गुटबाजी कहीं कांग्रेसियों को भारी न पड़ जाए। कांग्रेस के स्थानीय नेताओं की मानें तो डॉ. के के ध्रुव्र बाहरी व्यक्ति हैं। उन्हें छोड़कर पार्टी किसी को भी टिकट दें। उसका वे समर्थन करेंगे। डॉ, ध्रुव्र उन्हें किसी भी हाल में मरवाही विधानसभा में मंजूर नहीं है।

कांग्रेस जिला महामंत्री प्रमोद परस्ते ने कहा कि अजय राय के बर्थडे पार्टी का आयोजन था, तभी कुछ कांग्रेस ने नेताओं ने मंच से विधायक को लेकर अपनी व्यथा मंच से बोलने लगे। जिसे लेकर पूर्व कांग्रेस जिला अध्यक्ष मनोज गुप्ता और विधायक डॉ. ध्रुव्र नाराज हो गए। उनका कहना था कि हमें बुलाकर हमारी बुराई की जा रही है। जो गलत है वो गलत है। सारे कांग्रेसियों की मांग है कि हमे स्थानीय विधायक चाहिए।

गुलाब राज पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी सफेद शर्ट और माथे में टीका लगाए हुए। 2020 में अचानक डॉ. के के ध्रुव्र को पैराशूट के माध्यम से उतारा गया। कांग्रेस के पुराने नेताओं को आज भी दर्द है कि शुरू से कांग्रेस के निष्ठावान कार्यकर्ता होने के बाद उन्हें टिकट नहीं मिला स्थानीय व्यक्ति को टिकट मिलना चाहिए।

# प्रधानमंत्री से चाहते हैं आश्वासन की नगरनार स्टील प्लांट का न हो निजीकरण: बघेल

- **मुख्यमंत्री स्वयं कार्यकर्ताओं के साथ मोटरसाइकिल पर निकले भरोसा यात्रा पर**
- **कांग्रेस पार्टी 75 सीट पार करने की चुनौती को लेकर काम कर रही है**

**भिलाई।** मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सोमवार को स्वयं कार्यकर्ताओं के साथ गाडाड़ीह से मोटरसाइकिल पर सवार होकर जामगांव और रानी तराई होते हुए पाटन पहुंचे और यहां भरोसा यात्रा का समापन किया गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि हम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से आश्वासन चाहते हैं कि नगरनार स्टील प्लांट का निजीकरण नहीं हो, इसके विरोध में सर्व आदिवासी समाज और पिछड़ा वर्ग के लोगों ने आज धरना प्रदर्शन किया है। कल कांग्रेस के कार्यकर्ता निजीकरण के विरोध में बस्तर बंद का ऐलान किया और प्रदर्शन भी करेंगे। कांग्रेस पार्टी 75 सीट पार करने की चुनौती को लेकर काम कर रही है और उम्मीद भी है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि भाजपा

और एबीवीपी के लोग सीजीपीएससी के मुद्दे को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं, हमने उनसे कहा कि कोई प्रामाणिक शिकायत है तो दी जाए, अगर किसी तरह की खामियां हैं तो उसकी हम जांच कराएंगे। छत्तीसगढ़ में जब भाजपा के कार्यकाल में सीजीपीएससी का एग्जाम हुआ और उसके विरोध में हाईकोर्ट ने राज्य सरकार के खिलाफ फैसला दिया तो भाजपा की तात्कालीन सरकार सुप्रीम कोर्ट चले गई और किसी भी तरह की कार्रवाई नहीं की गई। हम बार बार कह रहे कि लगाए जा रहे आरोप का कोई प्रमाणिक दस्तावेज है तो उपलब्ध कराएं, सरकार जांच कराने को तैयार है।

आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि निश्चित तौर पर चुनाव हमेशा चुनौती पूर्ण होता है। पहले कांग्रेस के द्वारा छत्तीसगढ़ में सरकार बनाने की चुनौती थी, 68 सीट जीत कर कांग्रेस छत्तीसगढ़ की सत्ता में आई और पांच उपचुनाव जीतने के बाद हमारी सीटें और भी बढ़ गई। इस बार के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी 75 सीट पार करने की चुनौती को लेकर काम कर रही है।

उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की हर विधानसभा में भरोसे की यात्रा का शुभारंभ हो गया है। हजारों की तादाद में कांग्रेस कार्यकर्ता बाईक पर सवार हो भरोसे की यात्रा में शामिल हो रहे हैं। आज मुख्यमंत्री स्वयं कार्यकर्ताओं के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर गाडाड़ीह, जामगांव और रानी तराई होते हुए पाटन पहुंचे और यहां यात्रा का समापन किया गया।

# नगरनार स्टील प्लांट के निजीकरण के विरोध में बस्तर बंद का आह्वान

- **कांग्रेस ने किया समर्थन**

**जगदलपुर।** जगदलपुर के नगरनार स्टील प्लांट के निजीकरण और एनएमडीसी के मुख्यालय को हैदराबाद से जगदलपुर लाने सहित अन्य मांगों को लेकर सर्व आदिवासी समाज, पिछड़ा वर्ग कल्याण संघ और मूल निवासी समाज ने दो अक्टूबर को नगरनार में आमसभा और फिर तीन अक्टूबर को बस्तर बंद का आह्वान किया है। इस आंदोलन को कांग्रेस ने अपना समर्थन दे दिया है।

पीसीसी चीफ दीपक बैज ने कहा कि नगरनार इस्पात संयंत्र के निजीकरण का विरोध कांग्रेस लगातार कर रही है और प्रदेश सरकार तो संयंत्र खरीदने के लिए भी तैयार है लेकिन भाजपा की केंद्र सरकार इसे निजी हाथों में देने में तुली हुई है। पीसीसी चीफ की इस घोषणा के बाद अब स्थानीय कांग्रेसी बंद को लेकर तैयारियों में जुट गये हैं।

सोमवार को कांग्रेस भवन में शहर जिलाध्यक्ष सुशील मौर्य और विधायक रेखचंद जैन ने इस संदर्भ में प्रेसवार्ता ली। सुशील मौर्य ने नगरनार स्टील प्लांट के निजीकरण के विरोध में बस्तर बंद को लेकर जानकारी देते हुए बताया कि स्टील प्लांट को बेचने के लिए केंद्र सरकार ने टेंडर जारी कर दिया है साथ ही इसके डिमार्जर की प्रकिया भी की जा रही है। पीएम मोदी और भाजापा बस्तरवासियों के साथ धोखा कर रहे हैं। साथ ही कहा कि बस्तर वासियों की उम्मीद को टूटने से बचाने के लिए बंद का आयोजन किया जा रहा है। इसका पूर्ण समर्थन कांग्रेस करती है।

# कभी भी आ सकती है छत्तीसगढ़ में भाजपा उम्मीदवारों की फाइनल लिस्ट

- **भाजपा नेताओं की धड़कनें बढ़ीं, लागू हो सकता है नया फॉर्मूला !**

**रायपुर/दिल्ली।** छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में बीजेपी ने उम्मीदवारों की पहली सूची अगस्त के महीने में जारी कर दी थी। उसके बाद से लगातार बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने छत्तीसगढ़ में उम्मीदवारों की लिस्ट को लेकर चर्चा की। 16 अगस्त से लेकर पूरे सितंबर के महीने तक बीजेपी में मंथन का दौर चला। रायपुर में भी बीजेपी कोर ग्रुप की बैठक और चुनावी समितियों की मीटिंग हुई। इसमें उम्मीदवारों की सूची और जिताऊ उम्मीदवार को मैदान में उतारने

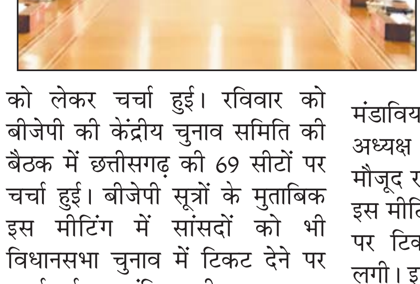


को लेकर चर्चा हुई। रविवार को बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में छत्तीसगढ़ की 69 सीटों पर चर्चा हुई। बीजेपी सूत्रों के मुताबिक इस मीटिंग में सांसदों को भी विधानसभा चुनाव में टिकट देने पर चर्चा हुई। हालांकि अभी तक इस पर कोई खुलासा नहीं हो पाया है।

**पीएम मोदी की अध्यक्षता में हुई मीटिंग, माथुर, साव और मंडाविया रहे मौजूद-** रविवार को दिल्ली बीजेपी मुख्यालय में रात 9 बजे से लेकर देर रात तक टिकट बंटवारे पर मंथन हुआ। इस मीटिंग में छत्तीसगढ़ से चुनाव प्रभारी ओम माथुर, चुनाव सह प्रभारी मनसुख मंडाविया और छत्तीसगढ़ बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव के साथ कई नेता मौजूद रहे। बीजेपी सूत्रों ने बताया कि इस मीटिंग में बचे हुए बाकी 69 सीटों पर टिकट बंटवारे को लेकर मुहर लगी। इसके बाद से कयास लगाए जा रहे हैं कि कभी भी बीजेपी की अगली सूची या फाइनल लिस्ट जारी हो सकती है।

जल्द जारी हो सकती है चुनाव की अधिसूचना- छत्तीसगढ़ में कुछ दिनों में चुनाव का ऐलान हो सकता है। संभव है कि अक्टूबर के पहले सप्ताह में चुनाव की तारीखों का ऐलान चुनाव आयोग की तरफ से कर दिया जाए। यही वजह है कि सभी पार्टियां जल्द से जल्द अपने उम्मीदवारो का ऐलान करने में लगी हुई है। इस कड़ी में बीजेपी , आम आदमी पार्टी और शिवसेना ने अपनी तरफ से उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी है। कांग्रेस ने अब तक उम्मीदवारों की एक भी सूची जारी नहीं की है। बीजेपी सूत्रों के मुताबिक पार्टी के आला नेताओं ने छत्तीसगढ़ में कुल 69 सीटों फाइनल चर्चा की है। अब देखना होगा कि यह लिस्ट कब जारी होती है।

### टिकट इनकी पक्की तो कटी किसकी...

**रायपुर।** छत्तीसगढ़ भाजपा ने 50 प्रत्याशियों की सूची तय कर ली है। इसमें कई तरह के प्रयोग भी किए गए हैं। नए चेहरों को शामिल किया गया है वहीं पुरानों पर भी भरोसा जताया गया है। राजनांदगांव से डा. रमन सिंह, लोरमी से अरुण साव, धरसीवां से अनुज शर्मा और बसना से संपत अग्रवाल का नाम सामने आ रहा है। पुरंदर मिश्रा को यदि बसना से नहीं तो रायपुर उत्तर से भी उतारे जाने की खबर है। दिल्ली में हुई भाजपा केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक के बाद खबर पर खबर आ रही है लेकिन दो टूक ये कि किसी ने भी इन नामों की अधिकृत पुष्टि नहीं की है।

**इन सीटों पर उम्मीदवार लगभग तय :** नारायणपुर-केदार कश्यप, बिल्हा-धरमलाल कौशिक, बिलासपुर-अमर अग्रवाल, मस्तूरी-कृष्णमूर्ति बांधी, तखतपुर -धर्मजीत सिंह, धरसींवा -अनुज शर्मा / देवीजी भाई पटेल, बसना-संपत अग्रवाल / पुरंदर मिश्रा, राजनांदगांव-डॉ. रमन सिंह, कुरूद-अजय चंद्राकर, रायपुर दक्षिण -बृजमोहन अग्रवाल, आरंग-खुशवंत साहेब, रायपुर पश्चिम-राजेश मूणत/ मीनल चौबे, रायपुर ग्रामीण-मोतीलाल साहू / ओमप्रकाश देवांगन, भिलाई नगर-प्रेम प्रकाश पांडेय, लोरमी -अरुण साव, रामपुर-ननकी राम कंवर।

# मध्यप्रदेश में भाजपा की चुनावी रणनीति

**डॉ. अंशुल त्रिवेदी**

मध्यप्रदेश में भाजपा द्वारा अपनी दूसरी सूची में केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों को विधानसभा चुनावों में उतारने के फ़ैसले से राजनीतिक गलियारों में बहस छिड़ गई है। सरकार के समर्थक इसे भाजपा की चुनाव जीतने की गंभीरता और ज़िद के उदाहरण के रूप में देख रहे हैं लेकिन दरअसल ये प्रदेश में भाजपा के प्रति बदलते मानस की ओर संकेत कर रहा है। इस फ़ैसले के राजनीतिक मायने समझना आवश्यक है। दरअसल, यह कोई मामूली फ़ैसला नहीं है बल्कि प्रदेश की राजनीति में शिवराज सिंह के दौर पर प्रश्न चिह्न लगाने वाला है। मध्यप्रदेश में ऐसा पिछले दो दशक में पहली बार हो रहा है कि भाजपा बिना किसी मुख्यमंत्री के चेहरे के चुनाव में उतर रही है। यह बात गृहमंत्री अमित शाह और केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के बयानों से स्पष्ट हो चुकी है। जाहिर है कहना ना होगा कि कमलनाथ बनाम शिवराज मुक़ाबला शुरू होने से पहले ही खतम हो गया। इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि प्रदेश में भाजपा के सबसे लोकप्रिय नेता शिवराज ही और उनकी सबसे बड़ी ताक़त थी कि उन्हें प्रदेश की जनता का विश्वास प्राप्त था। हालांकि पिछली बार भाजपा हारी ज़रूर थी लेकिन इसका शिवराज सिंह की छवि पर ज़्यादा असर नहीं पड़ा था। लेकिन अपनी राजनीतिक शैली छोड़ मोदी-मॉडल ऑफ़ पॉलिटिक्स ने बहुत प्रभाव डाला है। शिवराज से पहले हिमन्त बिस्वा सर्मा जैसे नेता भी इसकी बानगी रहे हैं। इधर छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान में भाजपा के पास चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है। राजस्थान में वसुंधरा राजे को हाशिए पर ढकेलने की खबरें आ रहीं हैं तो वहीं छत्तीसगढ़ में कोई बड़ा चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है। क्या इसे इस रूप में देखा जाए कि हिमाचल और कर्नाटक की हार के बाद अब स्थानीय और क्षेत्रीय नेताओं का चेहरे पर दांव लगाना भाजपा के लिए एक नई चुनौती है या फिर एंटी इनकम्बेंसी फैक्टर का अप्रत्यक्ष प्रभाव और डर दोनों हैं? देखा जाए तो अपने सीनियर नेताओं के सहारे मैदान में उतर रही भाजपा भले ही इसे अपने स्तर पर रणनीतिक खेल मानें लेकिन कांग्रेस और विपक्षी दलों के पास ऐसे फैसलों के मनोवैज्ञानिक लाभ लेने के मौके बनेंगे। दिग्गजों की एंट्री से भले ही कार्यकर्ता उत्साहित हो जाएं लेकिन मूल प्रश्न ये कि भाजपा किस एजेंडे को लेकर जनता के बीच जाएगी? एक ओर जहां कांग्रेस हिमाचल, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में अपने कार्यों, योजनाओं और नीतियों के क्रियान्वयन का दावा करेगी तो वहीं इन्हीं राज्यों में भाजपा के पास मौका होगा कि वे सत्ता की कमियों को लेकर जनता के बीच पहुंचे। जहां तक मप्र की बात है विकास और जन कल्याण के नाम पर शिवराज सिंह के पास अपनी तीसरे दौर की सरकार के कामकाज के साथ जनता का विश्वास हासिल करना चुनौती होगी तो वहीं लाड़ली लक्ष्मी योजना सहित कई लोकलुभावना योजनाओं के प्रचार के बीच इस सत्य को भी उन्हें स्वीकार करना होगा कि मप्र पर ?3 लाख करोड़ का क़र्ज़ है जिसके चलते सरकार वृद्धा पेंशन, ओबीसी छात्रवृत्ति और विकलांग पेंशन का भुगतान करने में कठिनाई का सामना कर रही है। मप्र में इस बार के चुनाव बिना शिवराज सिंह चौहान के चेहरे पर लड़ने का फैसला और दिग्गज नेताओं को टिकट देना एंटी इनकम्बेंसी की को कम करने की ओर संकेत करता है। लेकिन यह भाजपा के लिए कितना सफल होता है यह देखने वाली बात होगी? वहीं दूसरी ओर कांग्रेस के पास मौका होगा कि वह राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की रौशनी में चुनावों में करिश्मा दिखाए जैसे कि कर्नाटक में पार्टी ने प्रदर्शन कर साबित किया है।

# बहुजन को बहुमत में बदलने का प्रयास

**आनंद पांडे**

भारत में बहुमत हासिल करना बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक आबादी में संघर्ष और टकराव की निर्मम प्रक्रिया से होकर गुजरता है। आज़ादी के कुछ ही वर्षों में सामाजिक-धार्मिक बहुसंख्या को राजनीतिक बहुमत में बदलने की कोशिशें शुरू हो गईं। भाजपा ने धार्मिक बहुमत के ध्रुवीकरण पर जोर दिया तो पिछड़ावादी-दलितवादी दलों ने सामाजिक बहुमत के ध्रुवीकरण को सफलता की कुंजी समझा। बावजूद इस ध्रुवीकरण के शुरुआती परिणामों के, कांग्रेस लंबे समय तक एक ऐसे दल के रूप में केन्द्रीय सत्ता बनी रही जिसे सभी धार्मिक-सामाजिक समुदायों का विश्वास प्राप्त रहा। पर धीरे-धीरे जनसांख्यकीय बहुमत को राजनीतिक बहुमत में बदलने की प्रक्रिया गति पकड़ने लगी। असंख्य जातियों एवं तमाम धर्मों-पंथों में बंटे भारतीय समाज का यह रूख़ अख़्तियार करना ऐतिहासिक कारणों से सुगम हो गया। फलत: जातीय व धार्मिक ध्रुवीकरण बढ़ता गया। 90 के दशक में इस ध्रुवीकरण को मंडल बनाम कमंडल के ध्रुवों के रुप में पहचाना गया था। कांशीराम ने सवर्ण जातियों के वर्चस्व को तोड़ने के लिए बहुजन समाज के रुप में जिस विशाल समुदाय की परिकल्पना की वह भी इसी सामाजिक बहुमत को राजनीतिक बहुमत में बदलने की कोशिश थी। पर लोकतंत्र ने जातियों के राजनीतिकरण को इतना तीव्र बना दिया कि 85त्न सामाजिक व धार्मिक आबादी कभी एक साथ इकट्ठी न हो पाई। फिर भी चुनावी सफलताएँ मिलीं।

हर जाति की अपनी भिन्न पहचान के प्रति ललक तथा वर्चस्व और प्रतिरोध की भावना का प्रकटीकरण राजनीति में जमता गया। सवर्णों के वर्चस्व के प्रतिरोध और सामाजिक परिवर्तन के जोश के बावजूद बहुजनी एकता दृढ़ न रह पाई। पिछड़ों व दलितों की अपनी-अपनी गोलबंदी हुई और इस गोलबंदी में सवर्ण वोटों की जरूरत भी पड़ने लगी। ऐसे में सवर्ण प्रतिरोध, सवर्ण तुष्टीकरण में बदल गया। किसी ने ठाकुरों को बहुमत के लिए आवश्यक पाया तो किसी ने ब्राह्मणों को। दक्षिणी राज्यों की तुलना में उत्तर भारत में सवर्ण आबादी अधिक होने से सवर्ण मतों की जरूरत महत्त्वपूर्ण थी। उधर भाजपा ने इसी बहुजनी मंत्र को अपने ढंग से साधने में कामयाबी हासिल करनी शुरू की। उसे मुस्लिमों को छोड़कर हिन्दू एकता के बल पर सत्ता पाना सहज लगा। पिछले एक दशक में उसने सवर्णों को अपने वफादार सामाजिक आधार के रूप में तो बनाये रखा ही साथ ही दलितों-पिछड़ों के बीच भी अपना आधार बढ़ाया। उसने पुरानी कांग्रेस की तरह सभी जातियों में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाई। सवर्ण-अवर्ण सबकी पार्टी बन गयी।

केंद्र में भाजपा की लगातार दो विजयों ने विपक्षी दलों को किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया। उसको डिगाने की कोई युक्ति किसी को नहीं समझ में आ रही थी। यूपी की दोनों जीतें भी विपक्ष को सकते में डालने के लिए काफी थीं। कांग्रेस चिंतित थी कि यदि व्यापक हिन्दू समाज में भाजपा वैसी ही स्वीकार्य बनी रहती है जैसी कि कभी स्वयं वह थी तो वह भाजपा को केवल उसकी आर्थिक असफलताओं, क्रोनी कैपिटलिज्म और प्रशासनिक केन्द्रीयकरण तथा अल्पसंख्यकों के प्रति कठोरताओं के आधार पर निकट भविष्य में अपदस्थ नहीं कर पायेगी। उसे एक सामाजिक आधार की जरूरत थी। इसी तरह की भावना पिछड़ावर्ग आधारित दलों में महसूस की गई। उनके बीच सवर्ण मतों का जो मोह पैदा हुआ था वह भी खत्म हो गया। यह देखकर कि सवर्ण किसी भी कीमत पर अब भाजपा के साथ ही रहेंगे, पिछड़ावर्ग आधारित पार्टियां ध्रुवीकरण के अपने पुराने सिद्धांत पर आने को मजबूर हुईं। उन्हें यह लगने लगा कि भाजपा सवर्ण वर्चस्व को स्थापित कर रही है। उसके वर्चस्व को तोड़ने का वही तरीका काम आ सकता है जो उत्तर भारत में कांग्रेस को तोड़ने में आया था। रामचरित मानस व हिन्दू धर्म के पुराने जातीय विधानों की आलोचना की लहर दलितों-पिछड़ों की उन युवतर पीढ़ियों को यह समझाने की कोशिश थी जो पूर्वजों की तुलना में जातिदंश से अपेक्षाकृत कम प्रताड़ित थे कि हिंदूवादी भाजपा मूलत: एक सवर्णवादी दल है। जैसे-जैसे चुनाव निकट आ रहे हैं वैसे-वैसे यह स्पष्ट होता जा रहा है कि भाजपा के धार्मिक ध्रुवीकरण का जवाब विपक्षी दल सामाजिक बहुमत को राजनीतिक बहुमत में बदलकर देने जा रहे हैं। यानी कि नब्बे के दशक के मंडल बनाम कमंडल की अनुगूँजें 2024 के आगामी आम चुनावों में स्पष्ट रूप से सुनी जाएंगी।

धार्मिक-सामाजिक ध्रुवीकरणों ने ही कांग्रेस को कमजोर किया। पर अस्मिता आधारित राजनीति से उसका मुकाबला तभी से शुरू हो गया था जब आज़ादी की लड़ाई चल रही थी। 1942 के अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन का सभी प्रकार की अस्मिता आधारित राजनीति ने विरोध किया था क्योंकि इन्हें लगता था कि अंग्रेजों के रहते इनके समुदायों के हित सुरक्षित रहेंगे। इसके बहुत पहले कांग्रेस को अंग्रेजों द्वारा बांटो और राज करो की नीति के तहत कम्युनल अवार्ड की समस्या से जूझना पड़ा था। इस अवार्ड ने लोगों को समझाने की कोशिश की कि भारतीय लोगों के हित ब्रिटिश साम्राज्य से लड़ने में नहीं बल्कि अपने सामाजिक-साम्प्रदायिक हितों की सुरक्षा के लिए लड़ने में सुरक्षित हैं। पूना पैक्ट के माध्यम से कांग्रेस ने दलित हितों को सुनिश्चित करने की कोशिश की फिर भी उसे आज़ादी की लड़ाई में अम्बेडकर का सहयोग नहीं मिला और %अंग्रेजों भारत छोड़ो% आंदोलन का उन्होंने विरोध किया और वॉयसराय की काउंसिल के सदस्य बने रहे। हिन्दू-मुस्लिम टकराव तो विभाजन की त्रासदी के रुप में सामने आया। दक्षिण में द्रविड़ राजनीति भी कांग्रेस के लिए एक अस्मिताई चुनौती थी। हिन्दू महासभा ने भी इसी आधार पर 1942 के अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया। सिख राजनीति भी अलग सुर लेने की तरफ बढ़ रही थी। मुस्लिम लीग तो स्थायी सिरदर्द थी ही। ये सभी प्रकार की अस्मिताई राजनीति यह सिद्ध करने की कोशिश करती रहीं कि कांग्रेस उनके समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करती है। इसलिए वे अलग से अंग्रेजों के संपर्क में रहते थे।

इसके बावजूद आज़ादी मिलने के बाद कांग्रेस ने नेहरू के नेतृत्व में अपने पहले मंत्रिमंडल में इन सभी अस्मिताई प्रतिनिधियों की भागीदारी सुनिश्चित करके इनके अलग सुरों को समाहित करने की कोशिश की। पर सत्ता में रहने के बावजूद इनके कांग्रेस विरोधी रवैये में कोई कमी नहीं आयी और नेहरू के समय में ही सबने फिर से अपना-अपना रास्ता पकड़ा और कांग्रेस विरोधी धुरी बने। चुनावी राजनीति ने इन महापुरुषों को प्रतीक बनाकर ध्रुवीकरण तेज करने के अवसर दिए और जिसने अंतत: कांग्रेस को हाशिए पर धकेल दिया। पर यह विडंबना ही है कि जिन कारणों और आरोपों के तहत ये विविध स्वर, जो भारतीय समाज की अन्यायपूर्ण सामाजिक संरचना और जटिल विविधता की स्वाभाविक परिणिति थे पर राजनैतिक रुप से अतिरंजित थे, उन्हें ज्यादा मूलवादी ढंग से समाहित करती हुई भाजपा केंद्र में आ गयी। इन विभिन्न सामाजिक स्वरों ने भाजपा के उदय में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहायता ही की।

कांग्रेस में जब राहुल गांधी का निर्णायक दौर शुरू हुआ तो उन्होंने फिर से कांग्रेस से छिटके समुदायों को वापस लाने के लिए उन्हीं की भाषा में बात शुरू की। पार्टी में दलित नेतृत्व को बढ़ाने में शुरू से लगे रहे पर बाद में उन्होंने पिछड़ी जातियों के महत्त्व को समझा और उनकी मांगों को स्वयं उठाना शुरू किया। दक्षिण के दलित समुदाय से आनेवाले मल्लिकार्जुन खड़गे को अध्यक्ष बनाने में उनकी केंद्रीय भूमिका रही। पर उन्हें पिछड़ी जातियों से भी समर्थन की सख्त जरूरत है। इसलिए उन्होंने महिला आरक्षण में ओबीसी का कोटा और जातिगत जनगणना व आरक्षण का मुद्दा उठाना शुरू किया। जिन राज्यों में कांग्रेसी सरकारें हैं वहाँ उन्होंने मंत्रिमंडल व टिकट वितरण में आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व की नीति अपनाई। उनका नारा है- जिसकी जितनी संख्या, उसकी उतनी हिस्सेदारी। इस बात की उन्हें चिंता नहीं है कि इससे उत्तर भारत के सवर्णों की कांग्रेस में वापसी टल सकती है।

जाहिर है, राहुल गांधी के इस कदम से सामाजिक न्यायवादी राजनीति से उनकी संगति मजबूत होगी और आगामी चुनावों में मंडल बनाम कमंडल के राजनीति मुहावरों की अनुगूँजें और अधिक मुखर होंगी। पर यह ध्यान देने की बात है कि न वह समय है, न वह भाजपा है। उसने अपने ढंग से मंडलवादी राजनीति से उपजी चुनौतियों का मुकाबला किया है और नई राहें तय की हैं। आज भाजपा उभार के लिए संघर्ष करती पार्टी नहीं बल्कि स्थापित महाशक्ति है। समाज के अलग अलग वर्गों में अपनी पैठ बनायी है जिसमें वो वर्ग भी समाहित हैं जिन्हें मंडल के नाम पर अलग करने का प्रयास किया गया था। ऐसे में देखना होगा कि बहुजन को बहुमत में बदलने का कांग्रेसी प्रयास कितना सफल होता है। सवाल यह भी है क्या बहुजन के नाम पर वो सभी जन एकसाथ आने के लिए तैयार हैं जो आज राष्ट्रवाद के ज्वार पर सवार हैं।

**भारतीय ज्ञान परंपरा....**

# महोपनिषद् (भाग-6)

**गतांक से आगे...**

जो केवल प्रारब्धवश प्राप्त भोगों का उपभोग करने वाला है, वही जीवन्मुक्त कहलाता है। जिसने सांसारिक विषयों की प्राप्ति की कामना को त्याग दिया है, जो चित्त में रहते हुए भी चित्तरहित हो गया है, वही पुरुष जीवन्मुक्त कहलाता है। जो पुरुष जगत् के सम्पूर्ण अर्थ जाल के बीच में प्रतिष्ठित होकर भी उससे पराये धन से अलग रहने वाले धर्मात्मा के सदृश अनासक्त रहता है, निश्चय ही वह आत्मा में ही परमात्मतत्त्व की अनुभूति करने वाला महान् पुरुष जीवन्मुक्त कहलाता है।

वह पुरुष अपने शरीर के काल-कवलित हो जाने के पश्चात् जीवन्मुक्त स्थिति का परित्याग करके गतिहीन पवन के सदृश विदेहमुक्त स्थिति को प्राप्त कर लेता है। इस अवस्था में जीव की न तो उन्नति होती है। और न ही अवनति तथा उसका विनाश भी नहीं होता। उसकी वह अवस्था सत्-असत् से परे होती है और वह किसी के दूरस्थ समीपस्थ भी नहीं होता।

विदेहमुक्ति गम्भीर एवं स्तब्ध अवस्था को कहते हैं। उस अवस्था में न सर्वत्र प्रकाश व्याप्त होता है और न ही अन्धकार। उसमें नामविहीन एवं अभिव्यक्त न होने वाला एक तरह का सत् तत्त्व अवशिष्ट रहता है। वह शून्य एवं साकार भी नहीं होता है। दृश्य एवं दर्शन रूप भी नहीं होता है। उसमें ये भूत एवं पदार्थ समूह भी नहीं होते हैं। केवल वह सत् अन्तरहित स्वरूप में प्रतिष्ठित होता है। वह ऐसा आश्चर्ययुक्त तत्त्व होता है कि जिसके रूप का निर्देशन नहीं किया जा सकता है। उसकी आकृति एवं प्रकृति पूर्ण से भी पूर्णतर होती है। वह न सत् होता है और न असत् तथा सत्-असत् दोनों भी नहीं होता। वह भाव एवं भावना से परे होता है। वह मात्र चैतन्य ही होता है; किन्तु चित्तविहीन एवं अनन्त भी होता है। वह जरारहित, शिवस्वरूप एवं आत्मकल्याण- प्रद होता है। उसका आदि, मध्य एवं अन्त भी नहीं होता। वह अनादि एवं दोषरहित होता है। द्रष्टा, दृश्य एवं दर्शन की त्रिपुटी के मध्य में मात्र वह दर्शन स्वरूप ही कहा गया है। हे श्रीशुकदेव जी! इस सन्दर्भ में इसके अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा निश्चय नहीं किया जा सकता। आपने इस तत्त्वज्ञान को स्वयमेव समझ लिया है और अपने पिता श्रीव्यास जी से भी श्रवण कर लिया है कि जीव अपनी संकल्प शक्ति से ही बन्धन में पड़ता है और संकल्प से ही मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। अत: आपने स्वयं ही उस तत्त्वज्ञान को प्राप्त कर लिया है, जिसे जानने के पश्चात् इस नश्वर जगत् में साधुजनों को सभी दृश्यों से अथवा भोगों से विरक्ति पैदा हो जाती है। आपने पूर्ण चैतन्यावस्था में पहुँच कर सभी प्राप्त होने वाले पदार्थों को भी प्राप्त कर लिया है। आप तप:स्वरूप में स्थित हैं। हे ब्रह्मन् ! आप मुक्तावस्था को प्राप्त हो चुके हैं, अत: भ्रान्ति का परित्याग कर दें। हे शुकदेव जी ! बाह्य एवं अति बाह्य, अन्त में एवं उसके भी अन्तरंग को देखते हुए भी आप नहीं देखते हैं। आप सर्वदा पूर्ण कैवल्यावस्था में साक्षी भाव से विद्यमान हैं।

**क्रमशः ..**

# जरूरतमंदों की जरूरत पूरी कर रहा नेकी का घर

नेकी की दीवार कई शहरों में देखी जा सकती है, इस कड़ी में सिरसा (हरियाणा) के उपनगर डबवाली में स्थानीय लोगों द्वारा बनाया गया नेकी दा घर ( नेकी का घर) इंसानियत को नए सिरे से परिभाषित करता दिख रहा है। शहर के युवाओं, पेशेवरों, चिकित्सकों, महिलाओं और बुजुर्गों ने मिलकर इसे बनाया है। सभी मिलकर इसका संचालन कर रहे हैं, संस्था को नाम दिया है अपने।

### ये है इसकी खूबी

जीवन के लिए तमाम जरूरी सामान यहाँ जरूरतमंदों के लिए सहेजा जाता है। कपड़े, बिस्तर, जूते-चप्पल, बर्तन, खिलौने, दवाएँ, पुस्तकें....। यही नहीं, नि:शुल्क इलाज की भी व्यवस्था की गई है और एक ब्लड बैंक अभी काम कर रहा है, जो जरूरतमंदों के लिए 24 घंटे नि:शुल्क सेवाएँ देता है। किसी को इलाज की जरूरत हो या सर्दी से बचने के लिए कंबल कपड़ों की, इस घर के दरवाजे सभी के लिए खुले हैं।

कोई नहीं लौटता मायूस होकर इस्तेमाल किया जा सकने वाला पुराना सामान लोग यहाँ जमा कराते हैं, जिन्हें जरूरतमंद लोग अपनी सहूलियत के हिसाब से चुनकर ले जाते हैं। लेकिन किसी जरूरतमंद को कोई ऐसी जरूरत आन पड़े जिसका समाधान घर में मौजूद न हो, तो इसका मतलब यह नहीं कि जरूरतमंद को खाली हाथ लौटाना पड़ेगा। वाट्सएप पर तुरंत संदेश प्रसारित हो जाता है और ग्रुप से जुड़े लोग अपने-अपने तरीके से मदद में जुट जाते हैं।

### हजारों का बना सहारा

चाहे पापड़ बेचने वाले एक गरीब व्यक्ति के नौ साल के बेटे शीनम की आंत में ब्लॉकेज का ऑपरेशन कराना हो या सरकारी अस्पताल में तड़प रहे बच्चे विक्रम को प्राइवेट अस्पताल में भर्ती करा बेहतर इलाज मुहैया कराना हो, सभी %अपने% समाधान में जुट जाते हैं। गत दो साल में नेकी दा घर से अनेक जरूरतमंद अपनी जरूरते पूरी कर रहे हैं और यह संख्या अब दस हजार से अधिक हो चुकी है।

### ब्लड बैंक भी

यहाँ स्थापित मोबाइल ब्लड बैंक से हजारों डोनर जुड़े हुए हैं। जो अब तक 3373 यूनिट ब्लड उपलब्ध करा चुके हैं। जैसे ही किसी को खून की जरूरत होती है, यहाँ संपर्क करने पर ब्लड डोनर मदद को तुरंत पहुँच जाते हैं। इस काम के लिए भी वाट्सएप की मदद ली जा रही है।

### इस तरह बने अपने

संस्था के प्रधान मथुरा दास चलाना बताते हैं, 11 अगस्त 2015 की रात थी। साढ़े चार साल का बच्चा विक्रम सिविल अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में पड़ा कराह रहा था। एक युवक से बच्चे का दर्द देखा नहीं गया। युवक ने उसे एक निजी अस्पताल में एडमिट करवा दिया। फिर वाट्सएप के जरिये इलाज के लिए मदद माँगी। बहुत से लोग आगे आ गए। समय पर मिले इलाज से बच्चे को नई जिंदगी मिली। उसी दिन एक नया वाट्सएप ग्रुप बन गया अपने। कुछ ही दिनों में इसने संस्था का रूप ले लिया। अब इसके अनेक सदस्य बन चुके हैं।

# कार्यवाहक सरकार से निपटता पाकिस्तान

**मरिआना बाबर**

कनेक्टिविटी ने पाकिस्तान में, खासकर मुल्क के उन हिस्सों में बड़ी भूमिका निभाई है, जो कमोबेश कटे हुए थे। सात दशकों बाद अब कई इलाकों को धीरे-धीरे खोजा जा रहा है। सिंधु घाटी सभ्यता के इतिहास और विरासत पर हाल ही में एक रिपोर्ट आई है, जिसमें हड़प्पा के सींगों से लेकर शिव के रथ तक अमर उजाला के पाठकों के लिए दिलचस्प जानकारियां हैं। ये जानकारियां मोहनजो दारो और हड़प्पा में खोजी गई पुरानी मुहरों से संबंधित हैं। इनमें से कई मुहरों पर बैल को दर्शाया गया है। बैल एक ऐसा पशु है, जो इन प्राचीन मुहरों पर दिखने वाले कई अन्य पशुओं की तुलना में कई मुहरों पर पाया जाता है।

इन प्राचीन घटनाओं को दर्ज करने वाले इतिहासकारों का कहना है कि एक मिथक के अनुसार, जब शिव त्रिपुरासुर से युद्ध करने वाले थे, तो जिस रथ पर वह सवार थे वह धंस गया, और न तो शिव और न ही ब्रह्मा उसे वापस खींच सके। देवताओं की निराशा को देखकर भगवान विष्णु एक बैल में बदल गए। उस बैल ने शिव और ब्रह्मा को ले जा रहे रथ को अपनी सींगों से उठा लिया और एक शक्तिशाली गर्जना की। लेखक अरशद अवान का कहना है कि सिंधु घाटी सभ्यता की खोज के समय से मोहनजो दारो की तथाकथित आदिम शिव मुहर, जिसे पशुपति मुहर भी कहा जाता है, व्यापक बहस का विषय रही है।

इन ऐतिहासिक विषयों से अलग, राजधानी इस्लामाबाद में मुल्क एक कार्यवाहक सरकार से निपटने की कोशिश कर रहा है, जो संविधान के अनुसार, तब गठित की जाती है, जब एक निर्वाचित सरकार का कार्यकाल खत्म हो जाता है और नए चुनाव का आह्वान किया जाता है। बांग्लादेश को छोड़कर मुझे नहीं लगता कि दक्षिण एशिया में कोई ऐसा देश है, जिसके संविधान में इस तरह की विवादास्पद जरूरत का प्रावधान हो। हालांकि कार्यवाहक सरकार की एकमात्र भूमिका स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित कराना है, लेकिन यहां की मौजूदा कार्यवाहक सरकार अपने सांविधानिक अधिकार से परे जाकर नीतिगत घोषणाएं कर रही है। इन दिनों मुल्क में मीडिया अपेक्षाकृत स्वतंत्र है, हालांकि सुरक्षा प्रतिष्ठान पर टिप्पणी करने के मामले में स्व-प्रतिबंध जारी है। सोशल मीडिया ही वह जगह है. जहां सुरक्षा प्रतिष्ठान पर टिप्पणी की जाती है या उसका विश्लेषण किया जाता है, लेकिन अब उस पर भी निगरानी रखी जा रही है और हर दिन सरकार ट्विटर (अब एक्स) से उस व्यक्ति की शिकायत करती है, जिसने मुल्क के कानून का उल्लंघन किया है।

मेरे साथ ऐसा कई बार हुआ है, जब ट्विटर ने मुझे ई-मेल से सरकार की शिकायत के बारे में बताया है। आखिरी शिकायत एक ट्वीट से संबंधित थी, जिसमें वजीरिस्तान के उन बच्चों की तस्वीर थी, जो सेना द्वारा आतंकवादियों के खिलाफ लगाई गई बारूदी सुरंग में घायल होकर अपंग हो गए थे। वहां इस बात का कोई संकेत नहीं है कि अब वह इलाका अपेक्षाकृत शांत है और आतंकवादी वहां से चले गए हैं। यदि लाल झंडा या कुछ अन्य संकेतक लगा दिए जाएं, तो हर कोई बारूदी सुरंग वाले क्षेत्र से दूर रहेगा। मुझे याद है कि जब सोवियत संघ ने अफगानिस्तान छोड़ा था, जिस पर उन्होंने वर्षों तक कब्जा जमाए रखा था, तो जाने से पहले उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को उन इलाकों का नक्शा दिया था, जहां उन्होंने बारूदी सुरंग लगाई थी, ताकि कोई नागरिक हताहत न हो।

स्वतंत्र मीडिया कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवर उल हक काकड़ की सरकार के बारे में खुले तौर पर आलोचनात्मक रहा है, जो इस तथ्य से कतराते नहीं हैं कि उन्हें और उनके मंत्रिमंडल को सुरक्षा प्रतिष्ठान द्वारा नामित किया गया है। एक ही दिन में कई इंटरव्यू देने के साथ-साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस करने वाले कक्कड़ के अलावा कोई दूसरा प्रधानमंत्री मीडिया के लिए उपलब्ध नहीं रहा। शिक्षित और स्पष्टवादी होने के कारण वह मीडिया के सवालों को संभाल लेते हैं और सबसे कठोर प्रश्न से भी नहीं कतराते। लेकिन हाल के दिनों में करदाताओं की मेहनत की कमाई से कई देशों की अनावश्यक यात्रा को लेकर स्वतंत्र मीडिया और सोशल मीडिया में उनकी आलोचना हो रही है। एक आलोचक का कहना है कि %क्या इन फिजूलखर्ची वाली विदेशी यात्राओं की कोई जरूरत थी, जिनसे देश को कोई फायदा नहीं होता? कार्यवाहक सरकार को सुचारु लोकतांत्रिक सत्ता परिवर्तन का निष्पक्ष पर्यवेक्षक माना जाता है। किसी भी परिस्थिति में इससे समझौता नहीं किया जा सकता।% इसकी शुरुआत संयुक्त राष्ट्र महासभा के निमंत्रण से हुई, जिसमें विश्व के कुछ महत्वपूर्ण नेता अनुपस्थित रहे और उनका प्रतिनिधित्व उनके वरिष्ठ मंत्री कर रहे थे। लेकिन काकड़ ने अपने और अपने परिवार के लिए पाकिस्तानी वायुसेना के विमान का इस्तेमाल किया और वह रावलपिंडी से उड़ान भरने के बाद ईंधन भरने के लिए पेरिस पहुंचे। रिपोर्टों में कहा गया है कि प्रधानमंत्री न्यूयॉर्क के लिए उड़ान भरने से पहले अपने परिवार को एफिल टावर पर एक रेस्तरां में डिनर के लिए ले गए थे। वहां उनकी किसी भी बड़ी राजनीतिक हस्ती से मुलाकात नहीं हो पाई। न्यूयॉर्क से काकड़ ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में एक कार्यक्रम के लिए लंदन गए, जहां वह कई दिनों तक रहे। यह यात्रा कैमरे में कैद हुई, जिसमें पैसे की कमी वाले मुल्क के प्रधानमंत्री को एक बहुत महंगे इतालवी ब्रांड के कपड़ों की दुकान से बाहर निकलते हुए देखा गया। हालांकि अब वह लौट आए हैं, लेकिन इससे पहले वह करदाताओं के पैसे पर फिर से उमरा के लिए सऊदी अरब में रुके। लेकिन काकड़ की जिस बात के लिए सबसे कठोर आलोचना हो रही है, वह है जटिल विदेश नीति पर उनका बयान देना, जो उनके अधिकार से बाहर की बात है।

**हिन्द स्वराज्य**

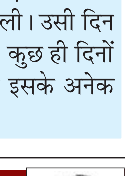

# गोला-बारूद (भाग-2)

**गतांक से आगे...**

यह तो धतूरे का पौधा लगाकर मोंगरे के फूल की इच्छा करने जैसा हुआ। मेरे लिए समुद्र पार करने का साधन जहाज ही हो सकता है। अगर मैं पानी में बैलगाड़ी डाल दूँ, तो वह गाड़ी और मैं दोनों समुद्र के तले पहुँच जायेंगे। जैसे देव वैसी पूजा—यह वाक्य बहुत सोचने लायक है। उसका गलत अर्थ करके लोग भुलावे में पड़ गये हैं। साधन बीज है और साध्य—हासिल करने की चीज—पेड़ है। इसलिए जितना सम्बन्ध बीज और पेड़ के बीच है, उतना ही साधन और साध्य के बीच है। शैतान को भजकर मैं ईश्वर-भजन का फल पाऊँ, यह कभी हो ही नहीं सकता। इसलिए यह कहना कि हमें तो ईश्वर को ही भजना है, साधन भले शैतान हो, बिलकुल अज्ञान की बात है। जैसी करनी वैसी भरनी। अंग्रेजों ने मारकाट करके 1833 में वोट के (मत के) विशेष अधिकार पाये। क्या मारकाट करके वे अपना फर्ज समझ सकें? उनकी मुराद अधिकार पाने की थी, इसलिए उन्होंने मारकाट मचाकर अधिकार पा लिये। सच्चे अधिकार तो फर्जके फल हैं; वे अधिकार उन्होंने नहीं पाये। नतीजा यह हुआ कि सबने अधिकार पाने का प्रयत्न किया, लेकिन फर्ज सो गया। जहाँ सभी अधिकार की बात करें, वहाँ कौन किसको दे? वे कोई भी फर्ज अदा नहीं करते, ऐसा कहने का मतलब यहाँ नहीं है। लेकिन जो अधिकार वे माँगते थे उन्हें हासिल करके उन्होंने वे फर्ज पूरे नहीं किये जो उन्हें करने चाहिए थे। उन्होंने योग्यता प्राप्त नहीं की. इसलिए उनके अधिकार उनकी गरदन पर जुए की तरह सवार हो बैठे हैं। इसलिए जो कुछ उन्होंने पाया है, वह उनके साधन का ही परिणाम है। जैसी चीज उन्हें चाहिए थी वैसे साधन उन्होंने काम में लिये। मुझे अगर आपसे आपकी घड़ी छीन लेनी हो, तो बेशक अपके साथ मुझे मारपीट करनी होगी। लेकिन अगर मुझे आपकी घड़ी खरीदनी हो, तो आपको दाम देने होंगे। अगर मुझे बख्शिश के तौर पर आपकी घड़ी लेनी होगी, तो मुझे आपसे विनय करनी होगी।

**क्रमशः ...**

# कुछ परीक्षाओं में नाकाम हुई मोदी सरकार

**पी. चिदंबरम**

यदि कोई शिक्षक अपने छात्रों को अतिशयोक्ति अलंकार समझाना चाहता हो और उसका एक उदाहरण भी देना चाहता हो, तो उसे सितंबर महीने में रिजर्व बैंक द्वारा जारी बुलेटिन के इन वाक्यों से बेहतर उदाहरण नहीं मिलेगा - 'सितंबर, 2023 में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का केंद्र भारत में शिफ्ट हो गया, क्योंकि सबसे शक्तिशाली देश, देशों के समूह और तमाम अंतरराष्ट्रीय संगठन नई दिल्ली में मिले।' रिजर्व बैंक के मुताबिक, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का केंद्र रोम (2021) से बाली (2022), बाली से नई दिल्ली (2023) और नई दिल्ली से रियो डे जेनेरियो (2024) शिफ्ट हो गया है। चूंकि गुरुत्वाकर्षण का केंद्र नई दिल्ली शिफ्ट हुआ, इसलिए हमें झटकों का अनुभव भी हुआ - तीन मई को मणिपुर में हिंसा की आग लगी और वह राज्य अब भी जल रहा है; कश्मीर में आतंकवादी हमले जारी हैं; भूस्खलन और बाढ़ ने हिमाचल प्रदेश समेत कुछ दूसरे राज्यों को ध्वस्त कर दिया है, और तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक ने बेहद रुखाई से भाजपा से छुटकारा पा लिया है!

गुरुत्वाकर्षण केंद्र के सरकने के कारण आने वाले दिनों में हम और भी घोषणाओं व घटनाओं की उम्मीद कर सकते हैं। एक घटना 20-21 सितंबर को घटी- महिला आरक्षण जुमला विधेयक संसद से पारित हुआ। वर्ष 2029 के लोकसभा चुनाव के बाद यह विधेयक लागू होगा। इसके अलावा जिन जुमलों को अमलीजामा पहनाने की तैयारी है, वे हैं-एक देश- एक चुनाव और समान नागरिक संहिता। एक देश-एक चुनाव को लागू करने के लिए कोविंद समिति बनाम विधि आयोग के बीच और समान नागरिक संहिता का मसौदा तैयार करने के लिए उत्तराखंड बनाम असम बनाम मध्य प्रदेश के बीच कड़ी प्रतिद्वंद्विता है।

इस बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक (नेता) मोहन भागवत ने 'धर्मांतरण' और 'लव जिहाद' की बढ़ती घटनाओं पर गहरी चिंता जताई है तथा संघ के सदस्यों से 'आक्रामक' ढंग से इसका मुकाबला करने के लिए कहा है। ऐसे में, गिरजाघरों, पादरियों, मिशनरियों और ईसाइयों की प्रार्थना बैठकों पर हमलों के लिए तैयार रहना होगा। ऐसे ही, अंतरधार्मिक विवाह करने वाले जोड़े

हिंदू लड़कियों की मर्यादा की रक्षा करने वाले नैतिक-धार्मिक ब्रिगेड के हमले से खुद को बचाएं। (मुझे हैरानी इस पर है कि उन हिंदू लड़कों की मर्यादा कौन बचाएगा, जो गैर हिंदू लड़कियों के साथ रहते हैं?)

धर्मांतरण और लव जिहाद के निराधार आरोपों से मैं स्तब्ध हूं। कृपया उन हजारों बच्चों से बात करें, जो ईसाइयों द्वारा संचालित स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ते हैं (क्योंकि वे शिक्षा संस्थान सर्वश्रेष्ठ हैं)। उनमें से कितने छात्रों को ईसाई बनाने की कोशिश हुई है? कृपया अपने आप से पूछें कि पिछले साल आपके गांव या शहर में कितने अंतरधार्मिक विवाह हुए हैं? श्री नारायणमूर्ति का एक कथन बेहद प्रसिद्ध है -'मैं सिर्फ ईश्वर में विश्वास करता हूं। बाकी चीजों के लिए मुझे आंकड़ा दीजिए।'

संघ प्रमुख क्या धर्मांतरण और लव जिहाद के आंकड़े देंगे? सम्माननीय प्रधानमंत्री ने भी मोर्चा थाम लिया है। उन्होंने कहा है कि सनातन धर्म निशाने पर है। श्री भागवत ने धर्मांतरण और लव जिहाद जैसे मुद्दे संघ के तरकश से निकाले हैं। महिला आरक्षण विधेयक को प्रधानमंत्री की तरफ से 'उपहार' के रूप में पेश किया जाएगा (जबकि असल में यह एक विफल बैंक का पोस्ट-डेटेट चेक है)। जी-20 से संबंधित तस्वीरें और वीडियो उदारता से और अनिवार्य रूप से दृश्य मीडिया और सोशल मीडिया पर इस दावे के सबूत के तौर पर लगातार दिखाए जाएंगे कि भारत विश्वगुरु है।

दूसरी तरफ 'इंडिया' की साझेदार पार्टियां उन मुद्दों को उठाने की तैयारी में लगी हैं, जिन्हें वे प्रासंगिक मानती हैं और यह भी मानती हैं कि इनसे लोगों का जीवन प्रभावित हो रहा है। ये मुद्दे हैं- मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, नस्लीय और सांप्रदायिक विवाद, भड़काऊ भाषण (हेट स्पीच) या भीड़ को भड़काकर किया जाने वाला अपराध (हेट क्राइम), उदारता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता समेत तमाम आजादी पर प्रतिबंध, राज्यों के अधिकारों का अतिक्रमण, संघवाद का क्षय, संविधान पर हमला, न्यायपालिका को कमतर करने की कोशिश, सीमा पर चीनी आक्रामकता, आतंकवादी घटनाएं, आर्थिक वृद्धि की धीमी रफ्तार, असमानता की खाई चौड़ी होना, राजनीतिक वर्ग और व्यापारी वर्ग के बीच साठगांठ वाली पूंजीवादी व्यवस्था (क्रोनी कैपिटलिज्म), कल्याणकारी योजनाओं में कमी, राष्ट्रीय कर्ज में वृद्धि, खुफिया और जांच एजेंसियों का दुरुपयोग, संसदीय संस्थाओं और परंपराओं को महत्वहीन करना, तथा केंद्रवाद व व्यक्ति पूजा की प्रवृत्ति का विस्तार। भाजपा धनबल, बाहुबल तथा कानून के दुरुपयोग के जरिये विपक्ष के हमले को बेअसर करने की उम्मीद कर रही है।

आइए, हम इन आरोपों पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि अर्थव्यवस्था मुश्किल में और कुप्रबंधित है।

बेरोजगारी- अगस्त, 2023 में बेरोजगारी दर 8.1 फीसदी थी। वर्ष 2022 में युवा बेरोजगारी (15-24 वर्ष) 23.22 प्रतिशत थी। स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया, 2023 रिपोर्ट के मुताबिक यह 42 फीसदी है। अगस्त, 2023 में 1,91, 60,000 परिवारों ने मनरेगा के तहत काम की मांग की।

कीमत और मुद्रास्फीति- रिजर्व बैंक के अगस्त, 2023 के बुलेटिन के मुताबिक, खुदरा मुद्रास्फीति 6.8 फीसदी, ईंधन और प्रकाश मुद्रास्फीति 4.3 प्रतिशत तथा खाद्य मुद्रास्फीति 9.2 फीसदी थी। उपभोक्ता मुद्रास्फीति फरवरी, 2022 से रिजर्व बैंक की लक्षित छह फीसदी की सीमा से ऊपर बनी हुई है।

पारिवारिक वित्त- जीडीपी के प्रतिशत के हिसाब से देखें, तो परिवारों की वित्तीय संपत्ति वर्ष 2020-21 के 15.4 फीसदी से घटकर 2022-23 में 10.9 प्रतिशत रह गई। जबकि इसी अवधि में परिवारों की वित्तीय जिम्मेदारी (देनदारी) 3.9 फीसदी से बढ़कर 5.8 प्रतिशत हो गई। कुल वित्तीय संपत्ति 11.5 प्रतिशत से घटकर 5.1 फीसदी रह गई। जनता केंद्रित तीन जांच परीक्षा में केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार दयनीय रूप से विफल साबित हुई है। वर्ष 1977 के बाद से पक्ष-विपक्ष के बीच ऐसी जोरदार मोर्चाबंदी कभी नहीं हुई।

# बिहार की राजनीति में किसको फायदा पहुंचाएगा ठाकुर का कुआं और खेत?

**आनंद कुमार**

बिहार में एक आम कहावत है हंसुए की शादी में खुरपी के गीत जिसका मोटे तौर पर अर्थ होता है असंबद्ध बातें करना। चर्चा आम की हो रही हो तो इमली की बात करना शुरू कर देने वाले को जैसे अजीब नजरों से देखा जाता है, कुछ कुछ वैसी ही हरकत मनोज झा ने संसद में कर डाली। महिलाओं के लिए आरक्षण की बात हो रही थी तो उसी मुद्दे पर रहते। इसका ठाकुरों से कहीं कोई सम्बन्ध ही नहीं था लेकिन प्रोफेसर मनोज झा ने ओम प्रकाश वाल्मिकी की एक कविता सुनाकर न केवल जातीय संघर्ष को हवा दे दी, बल्कि बिहार की राजनीति में उथल पुथल पैदा कर दी है। मनोज झा राजद के कोटे से राज्यसभा में भेजे गए हैं और जिस आनंद मोहन सिंह ने उनके खिलाफ मोर्चा खोल रखा है, उस आनंद मोहन सिंह के सुपुत्र आजकल राजद के टिकट पर ही विधायक हैं। कहा जा सकता है कि सामाजिक न्याय के नाम पर कथित सवर्णों को बिहार से पलायन पर मजबूर करने का आरोप जिस राजद पर अक्सर बिहार में लोग लगाते हैं, उस राजद के नेताओं ने बिहार की दो सवर्ण मानी जाने वाली जातियों को आपस में लड़वा कर, अपने तयशुदा माय समीकरण (एम-मुस्लिम और वाय-यादव वोट) के जरिये जीत सुनिश्चित करने का अच्छा प्रयास किया है। यहाँ ये भी गौर करने लायक है कि राजद और उसके जैसे कई क्षेत्रीय दल जो जातिवाद की राजनीति पर ही जीवित हैं, वो पहले भी राम-जन्मभूमि मंदिर आन्दोलन के दौर में नब्बे के दशक में भाजपा की कमंडल की राजनीति का सामना करने के लिए मंडल लेकर आये थे। मंडल कमीशन ने जिस आरक्षण की सिफारिश की थी उसे लागू करने के लिए तब वीपी सिंह की सरकार ने सख्ती से काम लिया था। अख़बारों और पुराने दौर के लोगों की मानें तो मंडल कमीशन का विरोध करते हुए कम से कम सवा सौ युवकों ने आत्मदाह किया था। इस मंडल कमीशन का भी मनोज झा द्वारा सुनाई गयी कविता से सम्बन्ध निकल आता है। मंडल कमीशन के प्रमुख राजा बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल थे, जिन्हें आजकल बी.पी. मंडल बुलाया जाता है। ये मुरहो एस्टेट के राजा थे और मधेपुरा क्षेत्र से थे जो 1990 के दशक के बाद के हिस्से तक भी उसी सहरसा जिले का हुआ करता था जिसके खुद मनोज झा हैं। यानी कि वो जो कुआं-खेत किसी ठाकुर का बता रहे थे, वो उन्हीं के इलाके में किसी यादव जी का होता था, जिसे बाद में स्वयं यादव जाति से आने वाले राजा बी.पी. मंडल की सिफारिश पर ओबीसी मान कर आरक्षण दे दिया गया। आज भी मधेपुरा की बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी के नाम में दिख जाता है कि ठाकुर असल में कौन था! ये आपको सहरसा जिले में भी दिख जायेगा क्योंकि सहरसा में सबसे बड़े कॉलेज की जमीन मनोहर लाल टेकरीवाल के दान की वजह से उन्हीं के नाम पर एम.एल.टी. सहरसा कॉलेज है। आज भी कॉलेज के बगल में उसी परिवार का पेट्रोल पंप है और राजद से ही लम्बे समय तक टेकरीवाल परिवार के सदस्य विधायक भी रहे हैं, इसलिए वो भी मनोज झा के परिचित होंगे। बिहार में हाल ही में करवाई गयी जाति-जनगणना से इसे जोड़कर देखें तो मामला थोड़ा और साफ़ होता है। नीतीश कुमार की जद (यू) के बिहार में 16 सांसद हैं, मगर विधायक केवल 45 हैं। इसकी तुलना में राजद के पास 79 विधायक हैं, भले ही सांसद एक भी न हो। अगले लोकसभा चुनावों में भाजपा की तरह राजद तो मानेगी नहीं और जद(यू) को 17 सीटें मिलना मुश्किल है। राजद अपना हिस्सा लेगी, दस कांग्रेस भी मांगेगी, फिर वामपंथी दल भी हैं। ऐसे में जिस वोट बैंक के ज़रिये नीतीश ने लालू को पछाड़ा था, केवल उसके जरिये चुनावी जीत संभव नहीं। जद (यू) और राजद दोनों के वोट बैंक मुख्यत: ओबीसी समुदाय (क्रमश: कुर्मी और यादव) से आते हैं। संख्या बल में दोनों करीब बराबर ही बैठेंगे इसलिए सवर्ण मतों के जरिये ही हार-जीत तय हो सकती है। जिसके पक्ष में सवर्णों के मत जायेंगे, उसकी जीत की संभावना बढ़ती है। ये मत किसी तरह से टूटें तो लालू यादव और राजद को सीधा फायदा होता है। इसके लिए उसे अपनी ही पार्टी के एक सांसद और एक विधायक के पिता को आपस में भिड़ाना पड़े, तो क्या हर्ज है? गौर करने लायक है कि मनोज झा ने अपने बयान में स्पष्ट नहीं किया था कि ठाकुर मतलब राजपूत/क्षत्रिय बिरादरी ही है! मनोज झा और उनकी जबान खींचने की बात करने वाले आनंद मोहन सिंह, दोनों ही सहरसा क्षेत्र के हैं। इस इलाके में ठाकुर का अर्थ मैथिल ब्राह्मण होता है जो मनोज झा की खुद की बिरादरी है। बिहार के अन्य क्षेत्रों में ठाकुर का अर्थ नाई होता है। यानी राजद के इस एक तीर से कई शिकार होते हैं। बिहार से कर्पूरी ठाकुर एक कद्दावर नेता रहे जो अति पिछड़ा मानी जाने वाली नाई बिरादरी से आते थे। नीतीश कुमार हाल ही में उनके सम्मान में एक आयोजन में नजर आये थे।

# आजादी के अमृतकाल में नारीशक्ति का जागरण बहुत सुखद संकेत

**बृजनन्दन राजू।**

अमृतकाल में नये संसद भवन में प्रवेश करते ही महिलाओं को सक्षम बनाने के उद्देश्य से नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 पारित कर भारत सरकार ने इतिहास रचने का काम किया है। निश्चित ही यह नये व विकसित भारत का प्रतिबिम्ब है। महिलाओं के लिए लोकसभा व विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण के विधेयक का सभी दलों ने एकजुट होकर समर्थन किया। महिलाओं के लिए यह गौरव का क्षण है। विधेयक के पक्ष में 454 और विपक्ष में मात्र दो वोट पड़े। यह भारतीय लोकतंत्र की महिलाओं के प्रति कृतज्ञता को दर्शाता है। महिला आरक्षण बिल के विरोध में एआईएमआईएम के असद्दुदीन ओवैसी व इम्तिआज जलीन ने ही वोट किया। इस बिल के विरोध में आने से उनकी मानसिकता उजागर होती है। ऐसे लोग महिलाओं को अपना गुलाम समझते हैं। वह उन्हें उपभोग की वस्तु समझते हैं। जबकि भारत के अन्य दलों ने जिस प्रकार महिला सशक्तीकरण के मुद्दे पर दुनिया को एकजुटता का संदेश दिया है। इससे भारत का मस्तक ऊंचा हुआ है। महिला आरक्षण बिल पिछले 27 वर्षों से लंबित था। 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद जनगणना और परिसीमन दोनों का काम शुरू हो जायेगा। इसके पूरा होने के बाद विधानसभा और लोकसभा के चुनाव महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों के साथ होंगे। सरकार इस विधेयक पर सुझावों को खुलेमन से स्वीकार करने को भी तैयार है। जरूरत पड़ने पर इसमें आवश्यक संशोधन भी किया जायेगा। स्वाधीनता के अमृतपर्व पर महलाओं को यह सुअवसर प्रदान करने के लिए राष्ट्र सेविका समिति, दुर्गा वाहिनी, वीरांगना वाहिनी ने भारत सरकार का अभिनंदन किया है। राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका शांतक्का ने भारत सरकार व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संसद व विधान सभाओं में महिलाओं को जो सुअवसर प्राप्त हो रहे हैं, यह महिलाओं के लिए गौरव का क्षण है। क्योंकि आज निश्चित ही महिलाओं के लिए आरक्षण की आवश्यकता है। जब से केन्द्र में मोदी की सरकार बनी है तब से महिलाओं के लिए अनेक योजनाएं बनाई गयी हैं। उन योजनाओं का लाभ महिलाओं मिल भी रहा है। राष्ट्र की आधारशक्ति नारी है। प्राचीनकाल में भारत में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। नारी को उपनयन का अधिकार प्राप्त था। नारियां गुरुकुलों में जाती थी और उन्हें वेदों की शिक्षा दी जाती थी। राजाओं के राज्याभिषेक के समय रानियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। धर्म व अध्यात्म के विषयों पर व पुरूषों से शास्तार्थ करती थीं। हमारे यहां महिला व पुरूष में भेद नहीं था। महिलाएं भी युद्ध कौशल में प्रवीण होती थीं और समरांगण में भी जाती थीं। भारतीय नारी अबला नहीं सबला है। नारी शक्ति समाज को शुद्ध और प्रबुद्ध करने में सक्षम है। राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने समाज धारणा के लिए नारी की सुप्त शक्तियोंको आधार रूप माना है। हम देखते है की प्रत्येक कार्य में शक्ति अंतरनिहीत होती है। स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था महिलाएं अपनी समस्याएं हल करने में खुद तो सक्षम हैं ही साथ ही समाज की समस्याओं को हल करने में अपना योगदान दे सकती हैं। संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी भी कहते थे कि महिलाओं को केवल घर तक सीमित रखना ठीक नहीं है। श्रीगुरुजी स्त्रियों को शक्तिस्वरूपा मानते थे। वे कहते थे कि महिलाएं अपनी समस्याओं को सुलझाने में स्वयं सक्षम हैं।

# महिला आरक्षण के पक्ष में रहा है आरएसएस

**अरुण आनंद**

केंद्र सरकार की ओर से महिलाओं के लिए संसद और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण देने की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने भी प्रशंसा की है। संघ ने इस विधेयक के आने से कुछ दिन पहले ही 16 सितंबर को औपचारिक रूप से कहा था कि सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़े, इसके लिए संघ प्रेरित संगठन प्रयास करेंगे। पुणे में 14 सितंबर से आरंभ हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय समन्वय बैठक में इस विषय पर चर्चा की गई। तीन दिवसीय इस बैठक के बाद आरएसएस के सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह जानकारी दी। आलोचक अक्सर आरोप लगाते हैं कि संघ महिलाओं को रूढ़िवादी नजरिए से देखता है, इसलिए संघ में महिलाओं का प्रतिनिधित्व नहीं है। वास्तव में इन आरोपों की सचाई क्या है? क्या संघ वाकई महिला विरोधी है और उनके प्रति दकियानूसी सोच रखता है? या संघ पर लगाए गए ये आरोप झूठे और बेबुनियाद हैं?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रेरित होकर महिलाओं में काम करने वाला एक समानांतर संगठन है जिसका नाम है- राष्ट्र सेविका समिति। इसकी स्थापना 1936 में लक्ष्मीबाई केलकर ने की थी। संघ की तर्ज पर समिति में भी पूर्णकालिक सदस्य होते हैं, जिन्हें प्रचारिका कहा जाता है। समिति 5000 से अधिक दैनिक शाखाएं चला रही है और समय-समय पर प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित करती है। बीस से अधिक देशों में इसकी उपस्थिति है। देश भर में समिति 22 छात्रावास चलाती है, जिसमें प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर रही बालिकाओं की पढ़ाई, रोजगार आदि की व्यवस्था की जाती है। देश के लगभग 70 प्रतिशत जिलों में समिति की उपस्थिति है। साल 2025 तक प्रत्येक जिले में इसकी कम से कम पांच शाखाएं स्थापित करने का

लक्ष्य है। इस संगठन के सभी पद महिलाओं के पास हैं।

यही नहीं संघ से प्रेरित लगभग तीन दर्जन संगठन हैं, जिनमें महिलाओं की अच्छी सहभागिता है। संघ में निर्णय लेने वाली सर्वोच्च संस्था अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में भी वे न केवल उपस्थित रहती हैं, बल्कि उनकी संख्या भी लगातार बढ़ रही है। आरएसएस ने बहुत पहले ही महिलाओं से जुड़ी गतिविधियों के लिए विशेष रूप से वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के एक समूह का गठन कर दिया था जिसे महिला समन्वय कहा जाता है। एबीव्हीपी भारतीय मजदूर संघ, विश्व हिंदू परिषद और वनवासी कल्याण आश्रम जैसे आरएसएस प्रेरित 36 संगठनों की महिला कार्यकर्ताओं की एक पूरी टीम महिला समन्वय समूह के साथ काम करती है। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ- स्वर्णिम भारत के दिशा सूत्र' में महिलाओं को लेकर संघ के दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से बताया है। वह लिखते हैं- महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर काम करने का प्रभाव आरएसएस और उससे प्रेरित संगठनों पर महसूस किया जाता है।

आरएसएस प्रेरित वकीलों की संस्था, अधिवक्ता परिषद, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के कानूनी अधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए सम्मेलन आयोजित करती है। इसमें पुरुष और महिला दोनों शामिल होते हैं। क्रीड़ा भारती ने महिला एथलीटों और खिलाड़ियों के लिए सुविधाओं के निर्माण के अभियान पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। इतिहास संकलन समिति भारतीय महिलाओं के इतिहास और महिला इतिहासकारों के सम्मेलन प्रस्तुत करने पर काम कर रही है। 2017 में, भारतीय मजदूर संघ ने दिल्ली में दो लाख लोगों के साथ एक विशाल मार्च का आयोजन किया, जिसमें एक लाख कार्यकर्ता महिलाएं थीं। विज्ञान भारती ने महिला वैज्ञानिकों का एक सम्मेलन 'शक्ति' शुरू किया। वनवासी कल्याण आश्रम और संस्कार भारती में कई महिलाएं पूर्णकालिक हैं।

2010 में महिलाओं से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर संगठन का रुख तय करने के लिए संघ के प्रमुख अधिकारियों ने दो दिवसीय विचार-मंथन सत्र में भाग लिया था। फिर 23-24 मार्च 2019 को 'महिला समन्वय' के तत्वावधान में एक और महत्वपूर्ण बैठक दिल्ली में हुई। इसका शीर्षक था 'भारतीय स्त्री विमर्श'। आंबेकर के अनुसार, 'इसमें मुख्य रूप से इस बात पर विचार किया गया कि वर्तमान समय के मुद्दों और चुनौतियों को हिंदू विचार और परिवार प्रणाली के आधार पर कैसे हल किया जा सकता है। यह संघ के भीतर एक सतत और रचनात्मक संवाद है।' आरएसएस फेमिनिज्म के पश्चिमी ढांचे को खारिज करता है। इसका मानना है कि पश्चिम का नारीवादी आंदोलन भारतीय समाज के लिए उपयुक्त नहीं है और देश को महिला सशक्तीकरण की भारतीय अवधारणा की आवश्यकता है। आंबेकर संघ की नारी सशक्तिकरण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहते हैं, 'संघ हथकंडों और वाद-विवाद में विश्वास नहीं करता है। यह महिलाओं को सशक्त बनाने, पर्दा प्रथा के प्रतिबंधों को हटाने (जो आक्रमणों के लंबे इतिहास के कारण आया था), शैक्षिक स्तर और आर्थिक क्षमता को बढ़ाने के लिए समाज का एक व्यापक मिशन है।'

# छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान विधानसभा चुनावों में भाजपा की तैयारियां

**अजय सेतिया**

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और राजस्थान में विधानसभा चुनावों की तैयारियां चल रही हैं। वैसे तो हिन्दीभाषी इन तीनों राज्यों के चुनाव भाजपा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इन तीनों राज्यों में भाजपा की लंबे समय तक सरकारें रही हैं। हालांकि नरेंद्र मोदी के केंद्र में सरकार बनाने के बाद 2018 के विधानसभा चुनावों में भाजपा तीनों राज्य हार गई थी। 2020 में दलबदल से मध्यप्रदेश में तो सरकार बन गई थी, लेकिन 2021 में राजस्थान में सरकार गिराने की कोशिश नाकाम हो गई थी।

अब मोदी के नेतृत्व में भाजपा को मध्यप्रदेश में सरकार बचानी है और राजस्थान, छत्तीसगढ़ में सरकार बनानी है। पिछले एक साल में लगातार हिमाचल और कर्नाटक की दो सरकारें और दिल्ली नगर निगम गंवाने के बाद भाजपा के शीर्ष नेताओं की चिंताएं बढ़ी हुई हैं। क्योंकि कर्नाटक में केंद्र से थोपा गया नेतृत्व फेल हो गया। हम आगामी चुनाव वाले तीन राज्यों के साथ हिमाचल और कर्नाटक को भी सामने कर देखेंगे, तो पाएंगे कि इन सभी राज्यों में कुछ नेताओं की लगातार मेहनत के बूते पार्टी सत्ता तक पहुंची थी। हिमाचल प्रदेश में शांता कुमार की मेहनत, राजस्थान में भैरोसिंह शेखावत की मेहनत, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में कुशाभाऊ ठाकरे की मेहनत और कर्नाटक में येदियुरप्पा की मेहनत। शांता कुमार के विकल्प के रूप में प्रेमकुमार धूमल स्वाभाविक नेता के रूप में उभरे थे, उन्हें केंद्र में किसी के नजदीक होने के कारण मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया था। इसी तरह राजस्थान में जब भैरोसिंह शेखावत उपराष्ट्रपति बन कर दिल्ली आ गए थे, तब अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हीं की सलाह के बाद वसुंधरा राजे को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बनवाया था।

लेकिन भैरोसिंह शेखावत के कहने मात्र से अटल-आडवाणी ने वसुंधरा राजे को प्रदेश अध्यक्ष नहीं बनाया था। उन्होंने काउंटर चेक के लिए प्रमोद महाजन को सर्वेक्षण करवाने का जिम्मा सौंपा था। प्रमोद महाजन ने मुम्बई की एक कंपनी से राजस्थान में सर्वे करवाया कि प्रदेश भाजपा के नेताओं में से कौन भैरोसिंह शेखावत का विकल्प हो सकता है। इस सर्वे में भी वसुंधरा राजे का नाम सबसे ऊपर था। वाजपेयी और आडवाणी ने यों ही वसुंधरा राजे के हाथ में कमान नहीं सौंपी थी। राजस्थान में वसुंधरा राजे ही पहली नेता बनी, जो 2003 में भाजपा की पहली पूर्ण बहुमत वाली सरकार की मुख्यमंत्री बनी। मध्यप्रदेश में भी कैलाश जोशी, वीरेन्द्र सकलेचा और सुंदर लाल पटवा वहां के स्वाभाविक नेता थे। इनमें से कोई भी केंद्र से थोपा नहीं गया था। भाजपा के संगठन मंत्री कुशाभाऊ ठाकरे जब केंद्र में आ गए थे, तो शिवराज सिंह चौहान ने एक बार प्रदेश अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ कर उन्हें नाराज कर लिया था। वह प्रदेश अध्यक्ष पद का चुनाव हार गए थे। कायदे से उन्हें मुख्यधारा से बाहर कर दिया जाना चाहिए था, क्योंकि वह केन्द्रीय नेतृत्व की इच्छा के खिलाफ प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव लड़े थे, लेकिन वह मध्यप्रदेश के सबसे ज्यादा समय तक बने रहने वाले मुख्यमंत्री बन गए हैं। यह पार्टी का आंतरिक लोकतंत्र ही था कि आपसी टकराव के चलते 1977 से 1980 की एक ही टर्म में कैलाश जोशी, सकलेचा और पटवा मुख्यमंत्री बने। मध्यप्रदेश भाजपा के

आंतरिक लोकतंत्र के कारण ही 2018 को छोड़कर 2003 से लगातार चुनाव जीत रही है।

2018 में हारने के बाद भाजपा आलाकमान ने कर्नाटक में अपने क्षत्रप येदियुरप्पा पर और मध्यप्रदेश में अपने क्षत्रप शिवराज सिंह चौहान पर भरोसा किया। तो दोनों राज्यों में दलबदल से भाजपा की सरकारें बनीं। अगर दलबदल के बाद भाजपा आलाकमान इन दोनों को मुख्यमंत्री नहीं बनाता, तो क्या इन दोनों राज्यों में चुनाव तक सरकारें बनी रह सकती थीं। कर्नाटक में तो 2019 में येदियुरप्पा ने ही सरकार बनवाई थी, उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटा कर भाजपा आलाकमान ने जो गलती की थी, उसका परिणाम सत्ता गंवाकर भुगतना पड़ा। राजस्थान में जब सचिन पायलट ने विद्रोह किया था, तब अगर भाजपा आलाकमान कर्नाटक और मध्यप्रदेश की तरह वसुंधरा राजे को कमान सौंप देता तो आज वहां भाजपा की सरकार होती। ज्योतिरादित्या सिंधिया की तरह सचिन पायलट केंद्र में मंत्री होते। जैसी स्थिति आज चुनावों से पहले बनी हुई है, वह स्थिति भी नहीं बनती।

भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी चिंता राजस्थान की है। भाजपा के पास वसुंधरा राजे के कद का कोई नेता नहीं है, लेकिन आलाकमान की शह पर कुकुरमुते की तरह मझौले कद के कई नेता मुख्यमंत्री पद के दावेदार बन चुके हैं। अगर 2003 में वसुंधरा राजे के हाथ में कमान नहीं दी होती, उस समय के शेखावत विरोधी नेताओं के हाथ में नेतृत्व दिया होता, तो क्या 2003 में भाजपा पहली बार पूर्ण बहुमत की सरकार बना पाती। जैसे 2003 में यह संभव नहीं था, वैसे आज भी संभव नहीं है, जब तक प्रेम कुमार धूमल और शिवराज सिंह चौहान की तरह राजस्थान में वसुंधरा राजे का विकल्प नहीं उभरता, तब तक उन्हीं के हाथ में कमान देना ही भाजपा की बुद्धिमता होगी।

राजस्थान को लेकर भाजपा आलाकमान दुविधा में है। पिछले चार साल तक भाजपा आलाकमान की शह पर ही प्रदेश के नेता वसुंधरा राजे को किनारे लगाए रहे। प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष खुलकर कहते रहे कि वह वही कर रहे हैं, जो हाईकमान ने उन्हें करने को कहा है। नरेंद्र मोदी जयपुर की रैली में अपने भाषण में एक बार भी मंच पर बैठी वसुंधरा राजे का नाम नहीं लेते, उनके शासनकाल की उपलब्धियां नहीं गिनाते, जबकि छत्तीसगढ़ में राजनीतिक हाशिए पर जा चुके रमन सिंह का नाम लेते हैं, उनकी सरकार की उपलब्धियां गिनाते हैं, तो राजस्थान प्रदेश भाजपा अध्यक्ष का कथन सही लगता है। भाजपा में आलाकमान या हाईकमान की बीमारी नई है, यह पहले नहीं थी। पहले कांग्रेस में हाईकमान हुआ करता था, लेकिन भाजपा में सामूहिक नेतृत्व हुआ करता था। आज भाजपा की सबसे बड़ी चिंता भी राजस्थान को लेकर है, क्योंकि वहां वसुंधरा राजे बड़ी चुनौती है। अब तक अति आत्मविश्वास था, लेकिन शायद अब यह एहसास हो गया है कि चुनावों में उनको किनारे करके जीतना आसान नहीं है। इसलिए 27 सितंबर को जब अमित शाह और जेपी नड्डा जयपुर गए तो उन दोनों ने वसुंधरा राजे के साथ लंबी बातचीत की, जिसमें वसुंधरा राजे ने उनकी और उनके समर्थकों की उपेक्षा किए जाने का मुद्दा जोरदार ढंग से उठाया। वसुंधरा राजे ने यह भी कहा कि जहां कांग्रेसियों को भाजपा में लिया जा रहा है, वहीं देवी सिंह भाटी जैसे भाजपा के पुराने और कद्दावर नेताओं की उपेक्षा हो रही है। वसुंधरा राजे की कोशिशों के बावजूद अर्जुन राम मेघवाल बड़ी रुकावट बने हुए थे, लेकिन जैसे ही वसुंधरा ने यह मामला अमित शाह के सामने उठाया, अगले ही दिन देवीसिंह भाटी को बुलाकर भाजपा में शामिल कर लिया गया। पहली अक्टूबर को दिल्ली में केन्द्रीय चुनाव समिति की बैठक से पहले जेपी नड्डा के घर पर हुई कोर कमेटी की बैठक में वसुंधरा राजे को ख़ास तौर पर बुलाया गया था। बैठक में अमित शाह भी शामिल थे, उनके अलावा चुनाव प्रभारी प्रहलाद जोशी, सह प्रभारी कुलदीप बिश्नोई, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सीपी जोशी, विधायक दल के नेता राजेन्द्र राठौड़ भी बैठक में शामिल थे। इसी से अंदाज लगाया जा सकता है कि भाजपा का केन्द्रीय नेतृत्व जमीनी हकीकत और परिस्थितियों से अनभिज्ञ नहीं है। जैसा गंभीर मंथन राजस्थान को लेकर हो रहा है, वैसा मध्यप्रदेश या छत्तीसगढ़ को लेकर नहीं है। इस बैठक से पहले 30 सितंबर की रात को जेपी नड्डा के घर पर नरेंद्र मोदी, अमित शाह और नड्डा ने तीन घंटे तक मंथन किया था।

# माता-पिता ऐसे समझें अपने बच्चों के 'मन की बात'

**अभिभावकों से दूर** रहकर बच्चे गलत फैसले कर सकते हैं, जिससे उनकी जिन्दगी पटरी से उतरकर, भूल के जंगल में खो सकती है इसलिए, जरूरी है कि माता- पिता उनके अड़ियलपन को नजरअंदाज न करें, उन्हें समझें, उन्हें अकेला न छोड़ें मनोविज्ञान की दृष्टि से इस सामाजिक आपातकाल को देखें-समझें। अभिभावक मनोविज्ञान के सुझाए गए सरल सिद्धान्तों पर अमल करके बच्चों के साथ बहुत मधुर और भावनात्मक सम्बन्ध विकसित कर सकते हैं। आइए डालते हैं एक नजर मनोविज्ञान के उन सिद्धान्तों पर, जिनकी नींव पर मजबूत रिश्ते कायम हो सकते हैं।

**बच्चों के करीब रहें**

बच्चों की विकासशील अवस्था में कदम-कदम पर उन्हें आपकी जरूरत होती है। आपके द्वारा उपलब्ध कराए गए साधन आपकी कमी पूरी नहीं कर पाएंगे। उनके लिए आपका मौजूद होना, उनकी बात सुनने के लिए तत्पर रहना, उनकी बात के जरिए उन्हें समझना, उनके लिए अनमोल है।

भाषण नहीं, संवाद करें तुम यह क्यों कर रहे हो, तुम्हें यह नहीं करना चाहिए, पागल है क्या करने से पहले कुछ सोचता नहीं, तुम्हें ऐसा करना चाहिए आदि जैसे निर्देशों से बच्चे जल्दी उकता जाते हैं। बढ़ते बच्चों के साथ विशेष रूप से, किशोरावस्था में आ चुके बच्चों के साथ ऐसा संवाद स्थापित करना उन्हें स्वयं से दूर करने का सबसे बड़ा कारण है। बढ़ते बच्चों के साथ ऐसा संवाद स्थापित करना चाहिए, जिसमें आप उन्हें अपने समानान्तर रखकर उनके मत का भी सम्मान कर पाएं। ऐसा करने से बच्चे अपनी बात आपके सामने खुलकर रख पाएंगे। उनके साथ आप स्वयं को और अपनी सोच को भी विकसित होने का मौका देंगे। उनके जीवन में रुचि लें बच्चों के जीवन में क्या हो रहा है, उनके मोबाइल गेम, उनके कार्टून, उनके सोशल मीडिया एप्स, उनके रियल और वर्चुअल दोस्त, उनकी पसंदीदा वैब सीरीज, पसंदीदा खेल और खिलाड़ी, इनकी जानकारी रखना, इनके बारे में जानने की उत्सुकता दिखाना, उनकी दुनिया में जाकर उनके साथ समय बिताना, परिचित होना ये सब ऐसे कदम हैं, जो निश्चित रूप से उन्हें आपके करीब लाने का काम करेंगे।

**संवेदना**

बच्चों के मन को पढ़ पाना, उसे समझ पाना, बिना प्रतिक्रिया दिए, उनके मन की बात को पूरी संवेदना के साथ सुन पाना अभिभावक के लिए बच्चों के मन में सदा के लिए घर बनाने के बराबर है। अगर आपसे उन्हें संवेदना नहीं मिली तो वे किसी और से भी इसकी उम्मीद नहीं कर पाएंगे।

अगर मां-बाप के साथ ही उनके मन में असुरक्षा की भावना रही तो आगे आने वाले सारे सम्बन्धों में असुरक्षित ही महसूस करेंगे और किसी पर भी जल्दी से बिना जांचे-परखे विश्वास कर लेंगे या फिर किसी पर भी विश्वास नहीं कर पाएंगे। ऐसे में वे जीवन से और लोगों से असन्तुष्ट और नाखुश बने रहेंगे।

# केले के 'तने' का फाइबर भी है फायदेमंद बन सकती हैं कई तरह की चीजें

**यूपी एवं बिहार** में कुछएक 7 से 18 लाख लोग केले की खेती, कटाई, हैंडलिंग और केले के परिवहन पर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। लगभग 70-80 मीट्रिक टन प्रति हैक्टेयर केले के घौद (बंच) की कटाई के बाद केले के तने, जिसे 'स्यूडोस्टेम' अथवा 'आभासी तना' कहा जाता है, को खेत के बाहर फेंक दिया जाता है, जो बाद में बर्बाद हो जाता है और अंततः जला दिया जाता है, जिससे वातावरण को भारी नुक्सान पहुंचता है।

केला उत्पादक किसानों के सामने आभासी तना का उचित निस्तारण एक बहुत बड़ी समस्या है और बिना कोई अतिरिक्त आय प्राप्त किए, इसके निस्तारण पर अच्छा- खासा भारी खर्च करना पड़ता है। एक अनुमान के अनुसार लगभग 10 से 15 हजार रुपए / हैक्टेयर इन आभासी तनों के निस्तारण पर खर्च करने पड़ते हैं। अनुमान के अनुसार उत्तर प्रदेश और बिहार में हर साल मात्र केले के आभासी तने से लगभग, 45,00,000 मीट्रिक टन बायोमास उत्पन्न होता है। केला उत्पाद क किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती केले के आभासी तने के इस विशाल बायोमास को मूल्य वर्धित उत्पादों में बदलना है। केले का आभासी तना सोने की खान है। इसको आर्थिक रूप से संसाधित करना और स्थानीय ग्राम स्तरों पर ही फाइबर निकालना ज्यादा उचित होगा। आइए जानते हैं कि केले के आभासी तने से रेशा कैसे निकाला जाएगा एवं उसका आर्थिक विश्लेषण।

**केले के आभासी तने से रेशा (फाइबर) निकलना**

सामान्यतः केले के आभासी तने से रेशा से लेकर डेढ़ लाख रुपए के बीच है। एक मशीन से दिन में लगभग 15 से 20 कि.ग्रा. सुखे रेशे निकाले जा 8 घंटे की श्रम लागत परिसंपत्ति मूल्य, ओवर है इस (बिजली पानी) आदि को ध्यान में रखते हुए, रेशे की निकासी लगभग 70 80 रुपए प्रति कि.ग्रा. है। इसका मतलब है कि अगर फाइबर बेचना है तो बाजार में कुछ लाभ मार्जिन के साथ, सुखे फाइबर की लागत प्रति किलो लगभग 150 रुपए से कम नहीं होनी चाहिए।

चूंकि केले का फाइबर जूट के रेशों के समान है और इसका उपयोग उन वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जा सकता है, जिनमें जूट के रेशों का उपयोग होता है, जूट के रेशों की कीमत एवं केले के स्यूडोस्टेम से बने रेशों की लागत समान होने से केलों के रेशो का महत्व बढेगा।

आवश्यकता इस बात की है कि केले से निकलने वाली मशीन की कीमत 50 हजार रेशे निकालने में होने वाले खर्च को और कम किया जाए। इस पर अनुसंधान की आवश्यकता है। जूट के रेशों की वर्तमान कीमत करीब 30 से 35 रुपए प्रति किलो है। केले के रेशे से और कीमती सामान बनाया जाए।

फाइबर के उप-उत्पाद हैं- कपड़े, बैग, विभिन्न प्रकार के मैट, आंतरिक सजावट के सामान, खिड़की के पर्दे, कुशन कवर, बोल्स्टर कवर, टेबल लैंप और फोल्डर्स इत्यादि । सिथेटिक फाइबर की अपेक्षाकृत उच्च लागत और स्वास्थ्य संबंधी खतरों के कारण, प्राकृतिक रेशों का पता लगाना आवश्यक हो जाता है। केला फाइबर इसका एक अच्छा विकल्प है। केले का रेशा (फाइबर) पर्यावरण के अनुकूल (इको फ्रैंडली) और रसायन मुक्त (कैमिकल फ्री) और होता है। आजकल केले के रेशा से महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले सैनिटरी पैड भी बनाए जा रहे हैं।

यह बहुत ही लोकप्रिय हो रहा है। यह ग्रीस प्रूफ, पानी और आग प्रतिरोधी और पूरी तरह से बायो-डिग्रेडेबल है। केले के रेशे से बने कागज के यूरोपीय देशों सहित 25 देशों के लिए निर्यात की बहुत अच्छी संभावनाएं हैं।

## सफलता के लिए समझिए 'प्रेरणा का महत्व'

आप जितने उत्साहित रहेंगे, उतना ही विश्वास करके ही जीवन में सफलता अधिक प्रेरित भी महसूस करेंगे। किसी हासिल की जा सकती है। भी काम में भावनाएं महत्वपूर्ण भूमिका जरूरी है काम से लगाव निभाती हैं। सही भावनाओं की सहायता से आप अपने आसपास मौजूद लोगों को भी प्रेरित करते हैं।

**सकारात्मक सोच**

जो लोग अपनी या अपने काम से जुड़ी कमियों के बारे में चिंता करते रहते हैं, उनके भीतर मौजूद रही-सही प्रेरणा भी जाती लगती है। हमेशा सकारात्मक सोच का पालन करें। कमियों पर अफसोस करने के स्थान पर सोचें कि किस तरह से आप उन्हें दूर करके किसी काम को पूरा कर सकते हैं। अपनी क्षमताओं पर जो लोग काम को कर्त्तव्य मानते हैं, वे दिन भर प्रेरित महसूस करते हैं। अपने काम को अपनी जिम्मेदारी समझ कर करने वाले लोगों की प्रेरणा उनकी आदत बन जाती है और लगने लगता है कि वह उनके स्वभाव का ही एक हिस्सा है जो हमेशा एक दोस्त की तरह उनके साथ खड़ा रहता है।

**सर्वोत्तम की अपेक्षा करें**

जो लोग उत्तम परिणाम की अपेक्षा रखते हैं वे हमेशा प्रेरित और पूरे जोश से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं।

# 12वीं के बाद करें कंप्यूटर साइंस के ये कोर्स, बनेगा बेहतरीन करियर

कंप्यूटर साइंस में पढ़ाई करने वालों को अच्छी सैलरी वाली नौकरी पाने का स्कोप अच्छा है. 12वीं के बाद कंप्यूटर साइंस से जुड़ी पढ़ाई करने के लिए डिप्लोमा भी कर सकते हैं और डिग्री भी ले सकते हैं.

डिप्लोमा के जरिए भी इंटरडिस्प्लीनरी फील्ड्स में बेसिक को समझा जा सकता है. हालांकि इस डोमिन की गहराई से नॉलेज के लिए अंडरग्रेजुएट डिग्री ले सकते हैं. अंडरग्रेजुएट डिग्री में BSc/ BTech/ BE प्रोग्राम्स शामिल हैं. जबकि डिप्लोमा के लिए अलग ऑप्शन हैं. यहां जानिए डिप्लोमा और डिग्री के नाम और उसके ड्यूरेशन.

कंप्यूटर साइंस में डिप्लोमा

1 -कंप्यूटर टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा (3 साल)

2 -कंप्यूटर इंजीनियरिंग में डिप्लोमा (3 साल)

3 -कंप्यूटर साइंस में डिप्लोमा (2-3 साल)

4 -सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में डिप्लोमा (3 साल)

5 -कंप्यूटर हार्डवेयर टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा (3 साल)

6 -कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग में डिप्लोमा (3 साल)

7 -हार्डवेयर और नेटवर्किंग में डिप्लोमा (3 साल)

डिप्लोमा प्रोग्राम के जरिए कैंडिडेट्स बेसिक कॉन्सेप्ट्स और कंप्यूटर साइंस के तहत आने वाले वास्ट डोमेन के टॉपिक्स को कवर करते हैं. छात्रों को ऑपरेटिंग सिस्टम, नेटवर्किंग के साथ-साथ बुनियादी प्रोग्रामिंग और कंप्यूटिंग के बारे में बुनियादी जानकारी मिलती है. 12वीं कंप्यूटर साइंस के बाद डिप्लोमा का विकल्प चुनने से कंप्यूटर के हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर के अच्छे ज्ञान के साथ-साथ इस क्षेत्र में एंट्री लेवल जॉब्स पाने लायक काबिलियत आ जाती है.

कंप्यूटर साइंस में डिग्री

1 -कंप्यूटर इंजीनियरिंग में बीटेक या बीई (4 साल)

2-कंप्यूटर साइंस में बीटेक या बीई (4 साल)

3 -कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में बीटेक या बीई (4 साल)

4 -कंप्यूटर एंड कम्यूनिकेशन साइंस और इंजीनियरिंग में बीटेक या बीई (4 साल)

5-सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में बीटेक या बीई (4 साल)

6 -बीएससी कंप्यूटर साइंस (3 साल)

7 – सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी में बीएससी (3 साल)

8 -कंप्यूटर इंजीनियरिंग में बीएससी (3 साल)

9 -बीसीए (बैचलर ऑफ कंप्यूटर एप्लीकेशन) 3 साल

10 -कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में इंटीग्रेटेड (बीई/बीटेक + एमई/एमटेक) (5 साल)

अंडरग्रेजुएट कोर्सेज के जरिए कंप्यूटर हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन, ऑपरेटिंग सिस्टम, नेटवर्किंग की जानकारी गहराई से मिलती है.

## दिल्ली पुलिस में 12वीं पास के लिए नौकरी का बेहतरीन मौका, 69000 होगी सैलरी

दिल्ली पुलिस की नौकरी करना हर युवाओं की चाहत होती है. सभी राज्यों की पुलिस की नौकरियों से दिल्ली पुलिस की नौकरी को अधिकांश युवा बेहतर मानते हैं. दिल्ली पुलिस में नौकरी पाने के लिए युवा लगातार मेहनत भी करते हैं. इसके लिए कर्मचारी चयन आयोग लगभग हर साल कांस्टेबल के पदों पर बहाली के लिए वैकेंसी निकालती रहती है. अगर आप भी इन पदों के लिए अभी तक आवेदन नहीं किए हैं, तो बिना समय गवाएं आज ही आवेदन कर सकते हैं.

कर्मचारी चयन आयोग द्वारा दिल्ली पुलिस कांस्टेबल भर्ती 2023 के लिए आवेदन प्रक्रिया 30 सितंबर, 2023 को बंद कर दिया जाएगा. जो भी पुरुष और महिला उम्मीदवार दिल्ली पुलिस कांस्टेबल भर्ती 2023 के लिए अप्लाई करना चाहते हैं, वे SSC की आधिकारिक वेबसाइट ssc.nic.in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं. SSC दिल्ली पुलिस भर्ती के लिए सुधार विंडो 3 अक्टूबर को खुलेगी और 4 अक्टूबर, 2023 को बंद हो जाएगी. परीक्षा दिसंबर 2023 में निर्धारित की गई है. इस भर्ती के जरिए दिल्ली पुलिस में 7547 पदों को भरा जाएगा.

SSC दिल्ली पुलिस भर्ती 2023 के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों की आयु सीमा 18 वर्ष से 25 वर्ष के बीच होनी चाहिए.

12वीं पास करें अप्लाई

उम्मीदवारों को किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10+2 (सीनियर सेकेंडरी) उत्तीर्ण होना चाहिए. साथ ही PE&MT की तिथि पर पुरुष उम्मीदवारों के पास एलएमवी (मोटर साइकिल या कार) के लिए वैध ड्राइविंग लाइसेंस होना चाहिए. इसके लिए लर्नर लाइसेंस स्वीकार्य नहीं होगा.

## एमसीए करने के बाद कहां मिलती है नौकरी, क्या हैं करियर ऑप्शन्स?

एमसीए यानि मास्टर ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन. यह एक पोस्ट ग्रेजुएशन कोर्स है जो विद्यार्थियों को कंप्यूटर प्रोग्राम, एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर, कंप्यूटर आर्टिटेक्चर और ऑपरेटिंग सिस्टम जैसे विषयों में ट्रेन करता है. एमसीए कोर्स को पूरा करने में दो साल का वक्त लगता है. देश के ज्यादातर संस्थानों में मेरिट और एंट्रेंस एग्जाम के बेसिस पर दाखिला मिलता है. अगर आपने भी एमसीए कोर्स पूरा कर लिया है और करियर ऑप्शन की जानकारी लेना चाहते हैं तो आर्टिकल आपके लिए है. आइए जानते हैं एमसीए का करियर स्कोप क्या है, जॉब प्रोफाइल क्या होती है और सैलरी कितनी मिलती है.

मास्टर ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन प्रोफेशनल का स्कोप क्या है?

देश-दुनिया में आईटी इंडस्ट्री तेजी से ग्रो कर रही है. जिसकी वजह से एमसीए प्रोफेशनल के लिए कई करियर के अवसर बन रहे हैं. कई आईटी कंपनियों में टॉप लेवल पर एमसीए प्रोफेशनल की जरूरत पड़ती है. एमसीए प्रोफेशनल को स्टार्ट-अप में अच्छे अवसर मिलते हैं. एमसीए प्रोफेशनल को भारत में एक हैंडसम सैलरी मिलती है.

मास्टर ऑफ कंप्यूटर एप्लिकेशन प्रोफेशनल किन जॉब प्रोफाइल पर काम करते हैं?

टेक्नीकल राइटरः हार्डवेयर इंजीनियरः सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटरः मोबाइल एप डेवलपरः नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटरः सिस्टम एनालिस्टः वेब डेपलपरः

सॉफ्टवेयर डेवलपरः सालाना औसत सैलरी 3 से 7 लाख रुपये.

# युवा व बच्चों को 'बीमार' बना रहा सोशल मीडिया

**वर्तमान में अधिकतर युवा** और बच्चे हमेशा मोबाइल डेस्कटॉप या लैपटॉप आदि पर व्यस्त दिखते हैं। इससे उनमें शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होने लगी हैं।

हाल ही में एक राष्ट्रीय सर्वे में पता चला है कि लगभग 60 प्रतिशत बच्चे हमेशा सोशल मीडिया से चिपके रहते हैं। इस आयु में उन्हें खेलने-कूदने, मैदानों पर दिखने के साथ सामुदायिक जीवन बिताना चाहिए। इससे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक हर तरह का विकास होता है लेकिन इन सबसे दूर, एकांत में केवल सोशल मीडिया पर व्यस्त रहने से बच्चे डिप्रेशन व अन्य प्रकार की समस्याओं का शिकार बनते जा रहे हैं। मनोचिकित्सकों व अन्य ने भी इसे बड़ी समस्या बताया है। यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि सारे विश्व की समस्या है।

खैर, केंद्र सरकार द्वारा शीघ्र ही 'डिजिटल प्राइवेट डाटा प्रोटेक्शन लॉ' लाए जाने की उम्मीद है। इसके आने से बच्चों की ऑनलाइन मनमानी पर कुछ लगाम संभव होगी। इस कानून से 18 साल से कम आयु के बच्चों को इंटरनेट पर कुछएप्लीकेशन्स (एप्स) का इस्तेमाल करने के लिए माता-पिता (अभिभावकों) की अनुमति अनिवार्य होगी। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इन दिनों सोशल मीडिया का जबरदस्त बोलबाला है क्योंकि डैस्कटॉप, लैपटॉप आदि अनेक प्रकार के गैजेट्स से लेकर मोबाइल तक लगभग हर हाथ में उपलब्ध है। घर-घर में इंटरनेट की सुविधा है।

साथ ही अनेक प्रकार के गेम्स, फिल्में, सोशल मीडिया के तमाम प्लेटफॉर्म और एप्स बड़ी सहजता से उपलब्ध हैं। केवल एक क्लिक मात्र से मनचाही चीजें हासिल हो रही हैं। केवल इन गैजेट्स पर घंटों आंखें टिकाए रखना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के प्रतिकूल है। इस कारण घर-परिवार और समाज से भी प्रत्यक्ष होने वाला संवाद कम होता जा रहा है। बच्चे सामाजिक व्यवहार से दूर होते जा रहे हैं। हालांकि सोशल मीडिया कनेक्टिविटी में ढेर सारी अच्छाइयां भी हैं, लेकिन जो दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं, वे चिंताजनक हैं।

रिश्ते बनते हैं, वे सोशल मीडिया वाले बच्चों की समझ से बाहर की बात होते जा रहे हैं। मानवीय जीवन में परस्पर भावुकता, स्नेह और संवेदनाओं को प्रत्यक्ष महसूस किया जाता है, सोशल मीडिया पर परोक्ष रूप से ऐसा होने में बहुत फर्क है। सामाजिक मान- मर्यादा और अनुशासन के साथ ही अनेक प्रकार के संस्कारों के गुण सामाजिक व्यवहार से हम सीखते हैं। सोशल मीडिया संपर्क, जानकारियों और ज्ञानवर्धन का बड़ा माध्यम अवश्य है लेकिन वह केवल साधन है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए उन्हें पारिवारिक, सामाजिक और सामुदायिक परिवेश में बनाए रखना ज्यादा जरूरी है। इसीलिए बच्चों की आदतों पर लगाम लगाने के लिए कानून बनने जा रहा है। देश को सुसंस्कारी पीढ़ी देने के लिए कुछ अनुशासन और मर्यादाएं आवश्यक हैं। घर-परिवार भी बच्चों को आधुनिक अवश्य बनाएं, पर उनमें संस्कारों, परंपराओं, लोक मान-मर्यादा और सामाजिकता के गुणों के सामाजिक परिवेश के व्यावहारिक जीवन और विकास पर विशेष ध्यान दें। इसी से भविष्य में बेहतर संवाद से व्यक्ति व्यक्ति के बीच परस्पर जो बेहतर पीढ़ी बनेगी।

## इनकम टैक्स में बिना परीक्षा नौकरी पाने का सुनहरा मौका, 10वीं, ग्रेजुएट करें आवेदन

अगर आप 10वीं पास, ग्रेजुएट हैं और नौकरी की तलाश में हैं, तो आपके लिए एक सुनहरा मौका है. इनकम टैक्स विभाग के प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, अहमदाबाद के कार्यालय में इनकम टैक्स इंस्पेक्टर, टैक्स असिस्टेंट और मल्टी-टास्किंग स्टाफ के पदों पर बहाली की जा रही है. इसके लिए, आवेदन प्रक्रिया कल यानी 1 अक्टूबर से शुरू हो रही है और आवेदन फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर है. इन पदों पर आवेदन करने के इच्छुक उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट incometaxgujrat.gov.in के माध्यम से अप्लाई कर सकते हैं.

इस भर्ती प्रक्रिया के तहत कुल 59 पदों को भरा जाएगा. जो भी उम्मीदवार इन पदों पर आवेदन करने के इच्छुक हैं, वे सबसे पहले दिए गए इन बातों को ध्यान से जरूर पढ़ें.

इनकम टैक्स भर्ती के लिए आयु सीमा

इनकम टैक्स पद के लिए उम्मीदवारों की आयुसीमा 18 वर्ष से 30 वर्ष के बीच होनी चाहिए. टैक्स असिस्टेंट और मल्टी-टास्किंग स्टाफ पद के लिए उम्मीदवारों की आयुसीमा 18 से 27 वर्ष के बीच होनी चाहिए.

फॉर्म भरने की योग्यता :इनकम टैक्स इंस्पेक्टर के पद के लिए उम्मीदवारों के पास किसी मान्यता प्राप्त कॉलेज से ग्रेजुएशन की डिग्री होनी चाहिए. टैक्स असिस्टेंट के पद के लिए उम्मीदवारों के पास किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या समकक्ष से ग्रेजुएट की डिग्री होनी चाहिए.

मल्टी टास्किंग स्टाफ पद के लिए उम्मीदवार को मान्यता प्राप्त बोर्ड से मैट्रिकुलेशन या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए.

देखें यहां नोटिफिकेशन और आवेदन लिंक

चयन होने पर मिलेगी सैलरी : इनकम टैक्स इंस्पेक्टर- लेवल 7 (रु. 44,900/- से रु. 1,42,400/-)टैक्स असिस्टेंट- लेवल 4 (रु. 25,500/- से रु. 81,100/-) मल्टी-टास्किंग स्टाफ- लेवल 1 (रु. 18,000/- से रु. 56,900/-)

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय प्रमुख समाचार

## गांधी जयंती पर अमित शाह ने 'बापू' को किया नमन

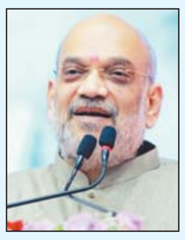

**नयी दिल्ली।** केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को गांधी जयंती के मौके पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को नमन किया और कहा कि उन्होंने स्वदेशी, स्वराज, स्वावलंबन और स्वच्छता के दर्शन से जिस तरह स्वाधीनता आंदोलन के दौरान देश का नेतृत्व कर जनजागरण किया, वह आज भी सभी के लिए प्रेरणीय है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती पर उन्हें भी श्रद्धांजलि अर्पित की। शाह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर किए एक पोस्ट में कहा, ''महात्मा गांधी ने स्वदेशी, स्वराज, स्वावलंबन और स्वच्छता के दर्शन से जिस तरह स्वाधीनता के दौरान देश का नेतृत्व कर जनजागरण किया, वह आज भी हम सभी के लिए प्रेरणीय है। पूरे विश्व को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाले महात्मा गांधी जी की जयंती पर उन्हें कोटिशः वंदन करता हूं।''

## जदयू टूट रही है तो भाजपा तोड़ ले : नीतीश कुमार

**पटना।** राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के मौके पर गांधी जी को नमन करने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने लालू बहादुर शास्त्री की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा के लोगों ने सबको बर्बाद कर दिया है और अब हमको (जदयू) बर्बाद करने पर लगे हुए हैं। नीतीश ने कहा कि उन लोगों को जो करना है करने दीजिए। उन्होंने कहा कि भाजपा को कौन रोक रहा है। जदयू टूट रही है तो तोड़ ले। बहुत अच्छा होगा। मीडियाकर्मियों ने पूछा था कि भाजपा कह रही है कि जदयू टूट रहा है। इसके लिए वे लोग मंत्री अशोक चौधरी और विधायक सुदर्शन के बीच चल रहे आरोप-प्रत्यारोप का हवाला दे रहे हैं। नीतीश कुमार ने कहा कि भाजपा अगर उनकी पार्टी को तोड़ना चाहती है तो तोड़ ले। हम लोगों को बर्बाद करने के चक्कर में हैं। छोड़ दीजिए कोई मतलब नहीं है। लेकिन इन सब चीजों का प्रचार करता है।

## कांग्रेस और आप के बीच गठबंधन का कांटा साफ

**नईदिल्ली।** दिल्ली और पंजाब में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच लोकसभा चुनाव में गठबंधन होने को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई थी। लेकिन कांग्रेस के शीर्ष नेता अजय माकन को पार्टी का कोषाध्यक्ष नियुक्त किए जाने से दिल्ली में दोनों दलों के साथ आने की संभावनाएं बढ़ गई हैं। अजय माकन दिल्ली में पार्टी के भविष्य को लेकर अरविंद केजरीवाल से किसी भी तरह का समझौता न करने को लेकर अड़े हुए थे, लेकिन अब उन्हें पूरी तरह केंद्रीय इकाई में जिम्मेदारी मिल जाने के बाद दिल्ली में उनका दखल कम होगा और इसका परिणाम दोनों दलों में समझौते के रूप में सामने आ सकता है। दरअसल, 2019 के लोकसभा चुनाव में भी आम आदमी पार्टी हर हालत में कांग्रेस से समझौता करना चाहती थी। कांग्रेस के भी कई नेता चाहते थे कि आम आदमी पार्टी से समझौता करके दिल्ली में भाजपा को कड़ी टक्कर दी जाए। लेकिन दिल्ली कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष अजय माकन और पूर्व सांसद संदीप दीक्षित अरविंद केजरीवाल से किसी भी तरह का समझौता करने के विरोध में थे।

## विधानसभा चुनावों में एनडीए की हार निश्चितः सचिन पायलट

**जयपुर।** राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने भाजपा को घेरते हुए कहा है कि एनडीए को आने वाले चुनावों में हार का सामना करना पड़ेगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी तीन दशक की परिपाटी को तोड़ते हुए इस बार दोबारा सरकार बनाने जा रही है। इसके साथ ही पायलट ने कहा, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और मिजोरम से भी पार्टी को अच्छे फीडबैक मिल रहे हैं। फीडबैक के आधार पर उन्होंने कहा कि कांग्रेस इस बार फिर से विधानसभा चुनावों को जीतकर राजस्थान में एक बार फिर सरकार बनाएगी। उन्होंने कहा कि भारत जनता पार्टी क्या रणनीति बनाती है, उसका क्या फॉर्मूला है और वो किसे टिकट दे रही है या नहीं दे रही वो उनका अंदरुनी मामला है। सचिन ने आगे कहा कि मध्य प्रदेश में जिनको भी अब तक टिकट मिले हैं वे सभी काफी उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी, प्रियंका गांधी के लगातार हो रहे दौरों से भी माहौल में बदलाव हुआ है।

## प्रदर्शन के दौरान अभिषेक बनर्जी ने सरकार को दी चुनौती

**नई दिल्ली/कोलकाता।** अभिषेक बनर्जी ने कहा कि आज दिल्ली में गांधी जयंती के दिन हम भाजपा को चुनौती देते हैं कि आगामी दिनों में जोरदार लड़ाई के लिए तैयार रहिएगा। मैदान आपका, रेफरी आपका लेकिन चुनौती हम दे रहे हैं। आने वाले दिनों में पता चलेगा कि आपकी कितनी क्षमता है और आम जनता की क्षमता कितनी है। बता दें कि पश्चिम बंगाल की सत्ताधारी पार्टी तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता गांधी जयंती के अवसर पर दिल्ली के राजघाट पर इकट्ठा हुए। यहां उन्होंने पश्चिम बंगाल के लिए मनरेगा और अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के लिए धन आवंटित करने की मांग करते हुए केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। टीएमसी का आरोप है कि केंद्र सरकार की तरफ से मनरेगा, आवास योजना और अन्य केंद्रीय योजनाओं के लिए राज्य को धन का वितरण नहीं किया गया।

# सरकार खुफिया जानकारी एकत्र करने के लिए चीन सीमा के पास चौकियां स्थापित करेगी

**नईदिल्ली।** अरुणाचल पश्चिम निर्वाचन क्षेत्र से सांसद रीजीजू ने कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक भी गांव ऐसा नहीं बचा है जहां वाहन नहीं पहुंच सकते। इन सीमावर्ती गांवों को पहले उपेक्षित किया गया था। मैं आपको यह भी आश्वासन देता हूं कि अगले छह महीनों में अरुणाचल प्रदेश के सभी सीमावर्ती गांवों में 5जी मोबाइल कनेक्टिविटी होगी।

लद्दाख से अरुणाचल प्रदेश तक वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) की चौकियों पर निगरानी और सूचना एकत्र करने के लिए खुफिया अधिकारियों की एक अतिरिक्त टीम तैनात की जाएगी। एक उच्च पदस्थ सूत्र ने कहा कि केंद्र सरकार ने उन चौकियों की स्थापना के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है, जिसे 'बॉर्डर इंटेलिजेंस पोस्ट' (बीआईपी) के नाम से जाना जाएगा। सीमा पर बढ़ती चीनी गतिविधियों और चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के सीमा उल्लंघन को देखते हुए यह कदम महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारतीय सेना और पीएलए के बीच जून 2020 से लद्दाख में गतिरोध जारी है। एक सूत्र ने बताया कि प्रत्येक

बीआईपी पर खुफिया ब्यूरो के चार-पांच अधिकारी तैनात रहेंगे और आईटीबीपी के जवान उनकी सुरक्षा करेंगे।

सूत्र ने बताया कि जिन कर्मियों को बीआईपी पर तैनात किया जाएगा, वे सीमा पार की गतिविधियों पर नजर रखेंगे और उच्च अधिकारियों एवं सरकार के साथ अद्यतन सूचनाएं साझा करेंगे। सूत्र ने योजना की संवेदनशील प्रकृति का हवाला देते हुए केंद्र सरकार द्वारा इसके लिए स्वीकृत राशि का खुलासा करने से इनकार कर दिया। भारत-चीन की संपूर्ण सीमा पर आईटीबीपी की लगभग 180 सीमा चौकियां हैं तथा 45 और बनाने के लिए हाल ही में मंजूरी दी गई है। जून 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में पीएलए के साथ झड़प में भारतीय सेना के 20 जवान शहीद हो गए थे।

पिछले साल नौ दिसंबर को पीएलए सैनिकों ने अरुणाचल प्रदेश के यांगस्टे में सीमा का उल्लंघन किया था, जिसके कारण दोनों देशों के सैनिकों के बीच झड़प हुई और दोनों पक्षों के सैनिक घायल हुए। मागो अरुणाचल प्रदेश के तवांग जिले के चुना सेक्टर में चीन की सीमा के करीब पहला गांव है। सोमवार को यहां एक समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री किरेन रीजीजू ने कहा कि कोई देश तब सुरक्षित होता है, जब उसकी सीमाएं सुरक्षित होती हैं।

अरुणाचल पश्चिम निर्वाचन क्षेत्र से सांसद रीजीजू ने कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक भी गांव ऐसा नहीं बचा है जहां वाहन नहीं पहुंच सकते। इन सीमावर्ती गांवों को पहले उपेक्षित किया गया था। मैं आपको यह भी आश्वासन देता हूं कि अगले छह महीनों में अरुणाचल प्रदेश के सभी सीमावर्ती गांवों में 5जी मोबाइल कनेक्टिविटी होगी।

### चित्तौड़गढ़ में कांग्रेस पर गरजे प्रधानमंत्री

# महिलाओं पर सबसे ज्यादा अत्याचार राजस्थान में : मोदी

**जयपुर।** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में कांग्रेस पर जोरदार हमला किया। उन्होंने यहां एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि रैली का पंडाल छोटा पड़ गया है जिन्हें जगह नहीं मिली वो निराश ना हों। जिन्हें जगह नहीं मिली उनकी जगह मोदी के दिल में है। कांग्रेस पर हमला करते हुए उन्होंने कहा कि जनता ने मूड बना लिया है कि इस बार बीजेपी की सरकार बनाना है। कांग्रेस ने राजस्थान की साख को खराब कर दिया है। राजस्थान बर्बाद होता गया और अशोक गहलोत अपनी कुर्सी बचाते रहे। चित्तौड़गढ़ में जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पांच साल में कांग्रेस सरकार ने राजस्थान की साख को तबाह कर दिया है। मैं बहुत दुखी मन से कहता हूं कि जब अपराध, दंगे, महिलाओं-दलितों पर अत्याचार की बात होती है तो राजस्थान टॉप पर आता है। मैं बहुत दुख के साथ आपने पूछता हूं कि क्या 5 साल पहले आपने इसलिए राजस्थान को वोट दिया था?

उन्होंने कहा कि यहां अशोक गहलोत सोते-जागते मुख्यमंत्री की कुर्सी बचाने में लगे थे और आधी कांग्रेस उनकी कुर्सी गिराने में जुटी थी। जनता को अपने हाल पर छोड़कर ये लोग आपसी लड़ाई में व्यस्त रहे। कांग्रेस ने राजस्थान को लूटने में कोई कमी नहीं छोड़ी। पांच साल में कांग्रेस की सरकार ने राजस्थान की साख को तबाह कर दिया है। राजस्थान के लोगों को भ्रम में डालकर कांग्रेस ने यहां सरकार तो बना ली लेकिन सरकार चला नहीं पाई। उन्होंने कहा कि राजस्थान ने आह्वान किया है। राजस्थान को बचाएंगे, भाजपा सरकार को लाएंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राजस्थान के नौजवानों के साथ जो धोखा किया गया है भाजपा उसकी तह तक जाएगी। यहां के पेपर लीक माफिया का पाताल में भी जाकर हिसाब किया जाएगा। मैं आपको भरोसा देता हूं नौजवानों के भविष्य के साथ जिसने खिलवाड़ किया है ऐसे पेपर लीक माफिया को छोड़ा नहीं जाएगा, कड़ी सज़ा दिलाई जाएगी। मैं राजस्थान

की जनता को विश्वास दिलाता हूं कि जनहित की किसी भी योजना को बीजेपी रोकेगी नहीं बल्कि उसे ज्यादा बेहतर, अच्छा बनाने का प्रयास करेगी, यह मोदी की गारंटी है। पीएम मोदी ने कहा कि अशोक गहलोत को पता है कि कांग्रेस की विदाई की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। खुद गहलोत जी को भरोसा है कि वो जा रहे हैं और इसीलिए उन्होंने पहले ही बीजेपी को बधाई दे दी है। उनकी गुजारिश है कि राजस्थान में बीजेपी की सरकार बनने के बाद उनकी योजनाएं बंद न की जाएं। मैं सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने के लिए गहलोत जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि राजस्थान में बीजेपी सत्ता में आएगी।

पीएम मोदी ने कहा कि आज मैं राजस्थान के हर गरीब, दलित, पिछड़े और आदिवासी परिवारों को गारंटी दे रहा हूं कि हर गरीब को पक्की छत, पक्का घर दिया जाएगा। हमने राजस्थान के लाखों लोगों को पाइप से पानी पहुंचाने की गारंटी दी है। आज एक राज्य दूसरे राज्य को पानी देने से मना करता है, दोनों राज्यों में लड़ाई होती है लेकिन ये मेरी गारंटी थी कि अगर नर्मदा का पानी गुजरात को मिलता है और राजस्थान को जरूरत है तो राजस्थान को भी मिलेगा। आज बिना किसी विवाद के राजस्थान के कई गांव, जिलों में नर्मदा का पानी पहुंच रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि महिलाओं पर अत्याचार सबसे ज्यादा राजस्थान में हो रहा है। कन्हैयालाल हत्याकांड पर पीएम मोदी ने कहा कि उदयपुर की घटना की कल्पना किसी ने नहीं की थी।

# राजस्थान में वंदे भारत का बड़ा हादसा टला, ड्राइवर की समझदारी से एक्सीडेंट होने से बचा

**राजस्थान।** राजस्थान में उदयपुर जयपुर वंदे भारत ट्रेन 2 अक्टूबर को बड़े हादसे का शिकार हो सकती थी। हालांकि यह हादसा टल गया जिसका पूरा श्रेय ड्राइवर को जाता है। वंदे भारत ट्रेन उदयपुर से निकलने के बाद चित्तौड़गढ़ जिले में गंगरार स्टेशन से जैसे ही निकली, ड्राइवर को ट्रैक पर किसी के द्वारा रखे गए बड़े पत्थर दिखाई दिए। बड़े पत्थरों को देखने के बाद ड्राइवर ने तत्काल ही ब्रेक लगाए। ड्राइवर द्वारा बिना किसी देर के लगाए गए ब्रेक से सैकड़ों लोगों की जान बच गई और एक बड़ा हादसा होने से टल गया।

इस पूरे मामले की जांच रेलवे पुलिस फोर्स चित्तौड़गढ़ में शुरू कर दी है। बता दें कि उदयपुर जयपुर वंदे भारत ट्रेन को 24 सितंबर को ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया था। इस दौरान देशभर में कुल 9 वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई गई थी। वंदे भारत ट्रेन मंगलवार को छोड़कर पूरे सप्ताह भर में सुबह अपने तय समय पर निकलती है और दोपहर तक जयपुर पहुंच रही है। इसी बीच दो अक्टूबर को यह बड़ा हादसा होने से टल गया जिसमें मुख्य भूमिका ड्राइवर की सूझबूझ की रही। जानकारी के मुताबिक वंदे भारत ट्रेन उदयपुर से 2 अक्टूबर की सुबह निकाली। इसके बाद चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार स्टेशन के आगे पहुंची। इसी दौरान सोनिया ना स्टेशन से पहले ड्राइवर ने ट्रैक पर कुछ देखा और अचानक ब्रेक लगा दिए। ड्राइवर और स्टाफ पुत्री पर देखने के लिए उतरे तभी उन्हें ट्रैक पर पत्थर बिछाए हुए दिखाई दिए। बता दें की ट्रेन को जहां रुक गया था उसे 20 मीटर के दायरे में तीन से चार जगह पर पत्थरों को बिछाया हुआ था। हालांकि बाद में कर्मचारियों ने पत्थरों को हटाया। वही पत्थरों को रखने से साफ जाहिर होता है की ट्रेन को पटरी से उतरने की साजिश रची गई थी इस षड्यंत्र को ड्राइवर की सूझबूझ से नाकाम कर दिया गया। इस मामले पर रेलवे के परामर्श दात्रि समिति अजमेर रेलवे मंडल के सदस्यों का कहना है कि आपराधिक तत्व षडयंत्रों के तहत यह काम कर रए हैं।

## खेल

प्रमुख समाचार

### सुतीर्था और अहिका ने टेबल टेनिस युगल में जीता ब्रॉन्ज मेडल

**हांगझोऊ।** सुतीर्था मुखर्जी और अहिका मुखर्जी को एशियाई खेलों में सोमवार को टेबल टेनिस महिला युगल सेमीफाइनल में कोरिया से कड़े मुकाबले में 3 . 4 से हारने के बाद कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा।

सुतीर्था और अहिका ने 2 . 3 से पिछड़ने के बाद वापसी की लेकिन कोरिया की सुगियोंग पाक और सुयोंग चा ने निर्णायक गेम में बाजी मार ली। उन्होंने एक घंटे तक चला मुकाबला 7 . 11, 11 . 8, 7 . 11, 11 . 8, 11 . 9, 5 . 11, 11 . 2 से जीता। इससे पहले भारतीय जोड़ी ने क्वार्टर फाइनल में विश्व चैम्पियन चीन की चेन मेंग और विडि वांग को हराया था। इसके साथ ही टेबल टेनिस में अब भारत की चुनौती समाप्त हो गई। इस बार भारत ने टेबल टेनिस में यही एक पदक जीता है।

### विथ्या रामराज ने पीटी उषा के 39 साल पुराने नेशनल रिकॉर्ड की बराबरी की

चीन में जारी एशियन गेम्स 2023 में भारत की एथलीट विथ्या रामराज ने कमाल कर दिया। उन्होंने महिलाओं की 400 मीटर बाधा दौड़ में अगले दौर के लिए क्वालिफाई किया है और साथ ही साथ नेशनल रिकॉर्ड की भी बराबरी कर ली है। भारत के लिए ये रिकॉर्ड महान एथलीट पीटी उषा ने 39 साल पहले 1984 में बनाया था। भारत के लिए 100 मीटर, 400 मीटर और 400 मीटर बाधा दौड़ में भाग लेने वाली विथ्या रामराज ने सोमवार 2 अक्टूबर की सुबह विमेंस 400 मीटर हर्डल्स रेस में हीट 1 में हिस्सा लिया और उन्होंने 0.184 के रिएक्शन टाइम के साथ 55.42 सेकेंड में अपनी रेस को पूरा किया। वे अपनी हीट में पहले नंबर पर रहीं और फाइनल के लिए क्वॉलिफाई कर लिया। विथ्या के बाद दूसरे स्थान पर बहरीन की जमाल अमीनत थीं।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/ प्रमुख समाचार

### कोल इंडिया का उत्पादन 5.14 करोड़ टन पर पहुंचा सितंबर में

**नईदिल्ली।** सार्वजनिक क्षेत्र की कोल इंडिया लि. (सीआईएल) का कोयला उत्पादन सितंबर में सालाना आधार पर 12.6 प्रतिशत बढ़कर 5.14 करोड़ टन पर पहुंच गया। इससे पिछले साल के समान महीने में कंपनी ने 4.57 करोड़ टन कोयले का उत्पादन किया था। बीएसई को भेजी सूचना में कंपनी ने कहा कि चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही (अप्रैल-सितंबर) में उसका उत्पादन 11.3 प्रतिशत बढ़कर 33.29 करोड़ टन हो गया, जो एक साल पहले समान अवधि में 29.9 करोड़ टन था। सितंबर में सीआईएल का कोयला उठाव 12.6 प्रतिशत बढ़कर 5.51 करोड़ टन रहा, जो पिछले वित्त वर्ष के इसी महीने में 4.89 करोड़ टन था। अप्रैल-सितंबर की अवधि में महारत्न कंपनी का कोयला उठाव भी 8.6 प्रतिशत बढ़कर 36.07 करोड़ टन हो गया, जो एक साल पहले की समान अवधि में 33.2 करोड़ टन था। घरेलू कोयला उत्पादन में कोल इंडिया का योगदान 80 प्रतिशत से अधिक है।

### डीजल की बिक्री सितंबर में 3% घटी, पेट्रोल 5.4% बढ़ी

**नईदिल्ली।** कमजोर मांग और देश के कुछ हिस्सों में औद्योगिक गतिविधियां सुस्त पड़ने से डीजल की बिक्री सितंबर में तीन प्रतिशत घटी है। सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियों के शुरुआती आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। सितंबर में सार्वजनिक क्षेत्र की तीनों.. पेट्रोलियम कंपनियों की डीजल बिक्री घटी है। हालांकि, पेट्रोल की बिक्री में बढ़ोतरी हुई है। देश में सबसे ज्यादा खपत वाले ईंधन डीजल की बिक्री सितंबर में घटकर 58.1 लाख टन रह गई, जो एक साल पहले की समान अवधि में 59.9 लाख टन थी। सितंबर के पहले पखवाड़े में डीजल की मांग में पांच प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई, जबकि बारिश कम होने से दूसरे पखवाड़े में डीजल की मांग बढ़ी। मासिक आधार पर डीजल की बिक्री ढाई प्रतिशत अधिक रही है। अगस्त में डीजल की बिक्री 56.7 लाख टन रही थी।

### अल्ट्राटेक सीमेंट की बिक्री दूसरी तिमाही में 16% बढ़ी

**नईदिल्ली।** अल्ट्राटेक सीमेंट ने 30 सितंबर, 2023 को समाप्त दूसरी तिमाही में 26.69 मीट्रिक टन की कंसोलिडेटेड बिक्री दर्ज की, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि से 15.54 फीसदी ज्यादा है। आदित्य बिड़ला ग्रुप की कंपनी ने स्टॉक एक्सचेंजों में फाइल किए गए बिक्री मात्रा के आंकड़ों में कहा कि कंपनी ने एक साल पहले जुलाई-सितंबर की अवधि में 23.10 मीट्रिक टन सीमेंट का उत्पादन किया था। घरेलू बाजार में वित्त वर्ष 2024 की सितंबर तिमाही में कंपनी की कुल बिक्री मात्रा 15.37 फीसदी से बढ़कर 25.66 मीट्रिक टन पर पहुंच गई। एक साल पहले की समान अवधि में यह 22.24 मीट्रिक टन था। वित्त वर्ष 2024 की सितंबर तिमाही में घरेलू बाजार में इसका ग्रे सीमेंट उत्पादन 15.46 फीसदी की वृद्धि दर्ज करते हुए 25.24 मीट्रिक टन था, जबकि इसका सफेद सीमेंट उत्पादन 10.52 फीसदी बढ़कर 0.42 मीट्रिक टन हो गया।

### टीव्हीएस मोटर ने सितंबर में बेचे 4,02,553 वाहन

**नईदिल्ली।** टीव्हीएस मोटर कंपनी की कुल बिक्री सितंबर में सालाना आधार पर छह प्रतिशत बढ़कर 4,02,553 यूनिट पर पहुंच गई। कंपनी ने सितंबर, 2022 में डीलरों को 3,79,011 वाहन भेजे थे। कंपनी ने सोमवार को बयान में कहा कि उसकी कुल दोपहिया वाहनों की बिक्री पिछले महीने सात प्रतिशत बढ़कर 3,86,955 यूनिट पर पहुंच गई, जो सितंबर, 2022 में 3,61,729 इकाई थी। घरेलू बाजार में कंपनी की बिक्री छह प्रतिशत बढ़कर 2,83,878 यूनिट से 3,00,493 यूनिट हो गई। निर्यात के मोर्चे पर, कंपनी ने कहा कि सितंबर में उसने 1,00,294 वाहनों का निर्यात किया। एक साल पहले समान महीने में निर्यात का आंकड़ा 86,462 यूनिट रहा था। समीक्षाधीन महीने में कंपनी का दोपहिया निर्यात बढ़कर 86,462 यूनिट हो गया, जो सितंबर, 2022 में 77,851 इकाई था।

# भारत के लिए विश्व कप जीतने का सुनहरा मौका

**आशुतोष चतुर्वेदी**

देश में वायरल बुखार तो चल ही रहा है, पर चुनाव और क्रिकेट का बुखार भी चढ़ता जा रहा है। इस सप्ताह भारत में वनडे विश्व कप का आगाज होने जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, बांग्लादेश, श्रीलंका, अफगानिस्तान और नीदरलैंड की टीमें भारत पहुंच चुकी हैं। क्रिकेट प्रेमी तो इसे क्रिकेट का महाकुंभ भी करार देते हैं, और यह तुलना गलत भी नहीं है। हम सब जानते हैं कि यह देश क्रिकेट का दीवाना है। हम सब इस बार भारत के विश्व कप जीतने की उम्मीद लगाये बैठे हैं। खेल विशेषज्ञों का भी मानना है कि इन अपेक्षाओं में दम है। टीम इंडिया वनडे रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर है। साथ ही प्रतियोगिता आपके घर में हो रही है। आप यहां की पिच से भी वाकिफ हैं और टीम भी कमोबेश ठीक बन गयी है। वैसे तो इसे लेकर काफी दिनों से मशक्कत चल रही थी।

अलग-अलग खिलाड़ियों को आजमाया जाता रहा। राहुल द्रविड़ की अगुआई में टीम में इतने प्रयोग हुए हैं कि कहा जाने लगा कि भारतीय टीम प्रयोगों की कहानी बन गयी है। पता ही नहीं चलता था कि कौन खिलाड़ी कब खेलेगा और क्यों खेलेगा, लेकिन विश्व कप की टीम में अनुभवी और युवा खिलाड़ियों को स्थान दिया गया है और टीम ठीक-ठाक बन गयी है। बल्लेबाजी में रोहित शर्मा, शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल, ईशान किशन, सूर्यकुमार यादव जैसे खिलाड़ी हैं, तो तेज गेंदबाजी में बुमराह, शमी, सिराज की तिकड़ी और स्पिन में कुलदीप व अश्विन की जोड़ी है। ऑलराउंडर के रूप में हार्दिक, जडेजा और शार्दुल ठाकुर टीम में हैं। पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने विश्व कप के

सेमीफाइनल में चार के बजाए पांच संभावित टीमों का नाम लिया है। उनके अनुसार सेमीफाइनल में भारत, पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड पहुंच सकती हैं। गांगुली के अनुसार न्यूजीलैंड को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भारत का पहला मुकाबला आठ अक्टूबर को ऑस्ट्रेलिया के साथ है। भारत और पाकिस्तान 15 अक्टूबर को टकरायेंगे। गांगुली चाहते हैं कि सेमीफाइनल भारत और पाकिस्तान के बीच हो। ऐसा हुआ, तो यह मैच कोलकाता के ईडन गार्डन में खेला जायेगा, जिसका रोमांच अलग ही होगा।

हाल के एशिया कप को छोड़ दें, तो इस बात पर चिंतन की जरूरत है कि 2011 के बाद हम कोई बड़ा टूर्नामेंट क्यों नहीं जीत सके हैं। आज भारत के पास गेंदबाजी के कई विकल्प हैं। बल्लेबाजी में भी गहराई है, लेकिन विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में हर मैच में और सभी विधाओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होता है। एक कमी मुझे टीम में श्रेष्ठ ऑल-राउंडरों की लगती है। लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल, रवि बिश्नोई और ऑलराउंडर दीपक चाहर को टीम में स्थान नहीं देने के फैसले पर भी सवाल उठ रहे हैं।

जब भी कोई विश्व कप होता है, तो महेंद्र सिंह धौनी की याद आती है। धौनी भारत के सबसे सफल कप्तान रहे हैं। ऐसी कोई ट्रॉफी नहीं, जो उन्होंने अपनी कप्तानी में न जीती हो। धौनी की कप्तानी में भारतीय टीम ने सबसे पहले 2007 में टी20 विश्व कप का खिताब जीता था। उसके बाद उसने 2011 में वनडे विश्व कप जीता और 2013 में चैंपियंस ट्रॉफी भी जीती। इसमें कोई शक नहीं कि शुभमन गिल अथवा उस जैसे अन्य खिलाड़ी आयेंगे और रोहित शर्मा एवं विराट कोहली से ज्यादा शतक लगा देंगे, लेकिन मुझे नहीं लगता है कि कोई भी भारतीय कप्तान आइसीसी की तीनों ट्रॉफी जीत पायेगा। वर्ष 2016 तक कप्तान धौनी ने हमें किसी-न-किसी टूर्नामेंट का चैंपियन बनाये रखा। नतीजतन 2018 में रोहित शर्मा की कप्तानी में भी हम एशियाई चैंपियन बनने में सफल रहे, लेकिन उसके बाद टीम का प्रदर्शन गिरता चला गया। भारतीय टीम दो देशों की सीरीज तो जीत जाती है, लेकिन बड़ी प्रतियोगिताओं में हार जाती है, मगर इस बार भारतीय टीम के सामने विश्व कप जीतने का सुनहरा मौका है। उत्साह बढ़ाने वाले घरेलू दर्शक हैं, घरेलू मैदान है और घरेलू पिच है। हम उम्मीद करते हैं कि भारतीय खिलाड़ी निराश नहीं करेंगे।

# मूणत ने गांधी जयंती पर कांग्रेस की सद्बुद्धि के लिए प्रार्थना की

**रायपुर।** पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेश मूणत ने गांधी जयंती के अवसर पर रायपुर पश्चिम विधानसभा के भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ आज़ाद चौक स्थित गांधी प्रतिमा के सामने बैठकर कांग्रेस की सदबुद्धि के लिए प्रार्थना की। श्री मूणत ने सर्वप्रथम महात्मा गांधी को स्मरण करते हुए उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात रायपुर समेत संपूर्ण छत्तीसगढ़ में लगातार गौठानो में सामने आ रही अव्यवस्थावश हो रही गायों की मृत्यु पर दुख प्रकट करते हुए 2 मिनट का मौन धारण किया। ओस दौरान मूणत ने कार्यकर्ताओं से कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उनकी पार्टी कांग्रेस सरकार ने गौमाता की सेवा का झूठे प्रचार करके गौठानो के माध्यम से भारी भ्रष्टाचार किया है। चाहे जरवाय की घटना हो या नया रायपुर में राहुल गांधी की सभा के बाद बड़ी संख्या में गायों की मृत्यु का मामला हो, कांग्रेस को उसपर लगे गौहत्या पर जवाब देना ही चाहिए, लेकिन बेशर्म कांग्रेस को अपनी करनी पर जरा भी अफसोस नही हो रहा है। महात्मा गांधी जी सच्चाई के रास्ते पर चलते थे। भाजपाजन गांधी जी के विचारों को आज भी साथ लेकर चलते हैं,लेकिन खुद को गांधीवादी बताने वाली कांग्रेस पार्टी भ्रष्टाचार के आकंठ में इस कदर डूब चुकी है कि गौमाता के जीवन की भी परवाह नहीं है। श्री मूणत ने कहा कि कांग्रेस पर गौ हत्या का पाप लग चुका है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल समेत कांग्रेस को अगले चुनाव में करारी शिकस्त मिलेगी, यही उनके पापों का परिणाम होगा। श्री राजेश मूणत ने गांधी जी की प्रतिमा के पास भाजपा कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में रामधुन पर रघुपति राघव राजा राम भजन भी गया, कांग्रेस की लिए सद्बुद्धि की प्रार्थना की। *कांग्रेस की भरोसा यात्रा के जवाब में भाजपा शुरू करेगी दूरबीन से विकास ढूंढो अभियान* श्री राजेश मूणत ने बताया कि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री पूरे प्रदेश भर में घूम-घूम कर झूठ बोल रहे हैं कि कांग्रेस के शासनकाल में विकास कार्य किए गए हैं, जबकि उनका कोरा झूठ छत्तीसगढ़ का बच्चा-बच्चा आसानी से पकड़ सकता है। श्री मूणत ने कहा कि छत्तीसगढ़ में आधारभूत संरचनाओं के निर्माण के लिए जितने भी बड़े कार्य हुए हैं, वह सभी भाजपा शासनकाल की देन हैं। अगर मैं केवल रायपुर शहर और रायपुर पश्चिम की बात करूं,तो कांग्रेस के पास एक भी काम नही है,जिसे वह गिना पाए। मूणत ने कहा कि बीते 5 साल के दौरान कांग्रेस ने रायपुर को राजधानी से खोदापुर में तब्दील कर दिया है, जो विकास कार्य बीजेपी के शासनकाल में हुए थे। कांग्रेस उन्हें भी संभाल नहीं पाई है,क्योंकि कांग्रेस का सारा ध्यान केवल जनता की कमाई लूटने पर केंद्रित है। श्री मूणत ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भरी सभा में जनता के सामने यह झूठ बोला था कि उनके 3 महीने के कार्यकाल में बीजेपी के 15 साल के कार्यकाल की तुलना में अधिक कार्य हुए हैं। इसके बाद मैंने उनसे अपने साथ रायपुर पश्चिम विधानसभा में एक साथ घूम कर विकास कार्य को साबित करने के लिए आमंत्रण भेजा था किंतु भूपेश बघेल उम्मीद के मुताबिक भयभीत नजर आए और खुद के झूठ में फंस गए है। श्री मूणत ने आगे कहा कि भाजपा कल दोपहर 12:00 बजे रायपुर पश्चिम विधानसभा की सभी चारों दिशाओं में जाकर दूरबीन के माध्यम से कांग्रेस के शासनकाल में हुए विकास कार्यों को ढूंढने का प्रयास करेगी। धरना स्थल में प्रमुख रूप से भाजपा जिला अध्यक्ष जयंती पटेल ओंकार बैस प्रफुल्ल विश्वकर्मा अशोक पांडे गोवर्धन खंडेलवाल प्रभा दुबे चन्नी वर्मा सत्यम दुआ रमेश ठाकुर गोपी साहू नवीन शर्मा शैलेंद्र परगनिया आशु चंद्रवंशी अमित महेश्वरी कमलेश्वरी बसंत वर्मा सरिता दुबे दीपक जायसवाल भोलाराम साहू मनीष ध्रुव कामिनी देवांगन गज्जू साहू पुरुषोत्तम देवांगन बसंत बाग पुष्पेंद्र उपाध्याय बजरंग खंडेलवाल दीनबंधु ठाकुर अनिल सोनकर प्रीतम ठाकुर भूपेंद्र ठाकुर श्रीनिवास राव नीलम सिंह मनोरमा हनोतिया राजू श्रीवास रोहित द्विवेदी संजय सिंह संतोष साहू विकास सेठिया पवन केसरवानी सनी मोहल्ले गजानन साहू दिनेश शर्मा अशोक भल्ला एवं सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे

भाजपा प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व मंत्री श्री मूणत ने भूपेश सरकार पर जमकर प्रहार करते हुए कहा कि पौने पाँच साल से छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार चल रही है, लेकिन आज कांग्रेस पार्टी के अंदर भरोसा है कि नहीं? एक प्रश्नवाचक चिह्न कांग्रेस के नेताओं ने प्रदेश के मुख्यमंत्री पर लगाया है। कांग्रेस के नेताओं ने कहा कि हम सामूहिक रुप से चुनाव लड़ेंगे तो मुख्यमंत्री बघेल, जिनकी पार्टी के स्वयं नेताओं को यह भरोसा नहीं है कि उनके नेतृत्व में अगला चुनाव जीत पाएंगे या नहीं, हमारी क्या स्थिति रहेगी? कांग्रेस के प्रभारी से लेकर सब लोगों ने एक बात कही कि हम सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ेंगे।तो कहां गया भूपेश का भरोसा।श्री मूणत ने कहा कि छत्तीसगढ़ का बेरोजगार नौजवान पीएससी की परीक्षा में बैठता है और पीएससी में घोटाला होता है। हाईकोर्ट पुनः परीक्षण के लिए कहती है। तब मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पत्रवार्ता लेकर कहते हैं कि बीजेपी के पास कोई दस्तावेज हो तो लेकर आए। बीजेपी लगातार आरोप लगा रही है कि पीएससी में अनियमितताएं हुई हैं।

## मेरी बात

✍ गिरीश पंकज

# कैसा हो सरल लेखन

*गीत हो या के गजल हो दोस्तो*
*बात सीधी हो सरल हो दोस्तो*

पिछले दिनों उज्जैन में एक सम्वाद शाला में मुझे सरल, रंजक लेखन विषय पर बोलना था। सीधी सरल रेखा खींचना बहुत कठिन है। उसके लिए बहुत एकाग्रता चाहिए । आड़ी तिरछी रेखा कैसे भी खींच सकते हैं। सरल रेखा खींचने के लिए हमें स्केल का सहारा लेना पड़ता है उसी तरह लिखने के लिए हमें स्किल का सहारा लेना पड़ता है। यानी कौशल ।अपना कौशल बनाना पड़ेगा । कौशल कब बढ़ेगा यह सोचकर तो नहीं बड़ेगा कि हमारा कौशल बढ़ानाहै । कौशल बढ़ जाए। उसके लिए हमें सतत अध्ययन करना पड़ेगा ।अपनी परंपरा का, अपनी संस्कृति का ,अपने प्राचीनतम सद्ग्रन्थों का। रामचरितमानस में तुलसीदास ने कहा है न बिनु सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई। करत करत अभ्यास के जड़मति हो सुजान ,रसरी आवत जात से सिल पर परत निशान। कोई भी रचना तब तक पठनीय नहीं बन सकती जब तक उसमें हम रंजकता का समावेश न करें। कहीं लोकोक्ति आ जाए कहीं कोई विनोद का प्रसंग आ जाए। जैसे हम छुआछूत जाति प्रथा पर लिख रहे हैं तो उससे संबंध में कुछ उदाहरण हो सकते हैं। छुआछूत का सबसे सुंदर उदाहरण हम भगत सिंह का दे सकते हैं । वे जब जेल में बंद थे तो उनके मल मूत्र की सफाई करने के लिए एक व्यक्ति आता था ।उसका नाम था बोधा। भगत सिंह उसे बेबे कह कर बुलाए करते थे । बेबे पंजाबी में मां को कहते हैँ। एक बार भगतसिंह ने उससे कहा कि बेबे मुझे अपने हाथ का बनी रोटी खिलाओ। बोधा परेशान। बोला, नहीं मैं तो अछूत हूं आप ऊंची जाति के हैं। मैं आपको कैसे खाना खिलाया सकता हूं। लेकिन भगत सिंह ने कहा नहीं तुमको मुझे खाना खिलाना ही होगा। तुमको मैं बेबे कहता हूं। मां तो बचपन में मेरा मल मूत्र साफ क्या करती थी । तुम हमारा मलमूत्र साफ कर रहे हो, तो तुम तो मां की तरह बड़ा काम कर रहे हो। तुम्हें मुझे खाना खिलाना ही होगा। भगत सिंह की जिद के आगे बोधा की कुछ न चली और उसने भगत सिंह को अपने हाथों से खाना खिलाया ।यह उदाहरण अपने आप में छुआछूत को दूर भगाने के लिए हमेशा दिया जाना चाहिए। सब इसे अपने-अपने तरीके से लिख सकते हैं। हम रैदास को याद कर सकते हैं। जिन्होंने अपनी कठौतिया में गंगाजल को आहूत किया और गंगा वहाँ पहुंच गई । तभी तो कहावत बनी है मन चंगा तो कठौती में गंगा। मेरी पंक्तियां है, जिसका मन निर्मल होता है जीवन गंगा जल होता है मेहनत का साथ होगा यारों सदा सुनहरा कल होता है। निर्मल हृदय सरल लिख सकता है। कबीर ने कहा है,साधो सहज समाधि भली..। सरल दिखाने के लिए आपका जीवन भी ऐसा सरल होना चाहिए जैसा एक बच्चे का होता है निर्मल । हमारे लेखन में तत्सम नहीं, तद्भव शब्द अधिक आने चाहिए। तत्सम यानी संस्कृत के शब्द हम जस का तस अपने लेखन में डाल देंगे तो वह दूरह हो जाएंगे अगर तद्भव शब्दों को हम डालेंगे तो लोगों को आसानी होगी। कई बार हमारे कुछ मित्र विद्वता दिखाने के लिए संस्कृत के कठिन शब्दों का प्रयोग करते हैं इस कारण उनका लेख अपठनीय हो जाता है। जैसे एतदर्थ शब्द है उसकी जगह हम कह सकते हैं कि इसके अनुसार। सरल लेखन पठनीय और प्रभावी होता है। वह स्मृति में भी बस जाता है।

# मोदी की सभा में जाने से रोक रहे भूपेश: साव

**रायपुर ।** कांग्रेस के तीन अक्टूबर को बस्तर बंद करने के ऐलान को भाजपा ने लोकतंत्र की हत्या करार दिया है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष अरुण साव ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जगदलपुर दौरे पर कांग्रेस ने बस्तर बंद आयोजित कर ओछी राजनीति शुरू कर दी है।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सत्ता का दुरुपयोग कर प्रदेश की जनता को प्रधानमंत्री की सभा में जाने से रोक रहे हैं। यह लोकतंत्र पर कांग्रेस की तानाशाही है, जिसे बस्तर और छत्तीसगढ़ की जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। हर बाधा को पार कर बस्तर भाजपामय होगा। परिवर्तन यात्रा को पूरे प्रदेश में मिले अपार जनसमर्थन से कांग्रेस की नींद उड़ गई है। मुख्यमंत्री और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ही नहीं, बल्कि इनके राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और गांधी-नेहरू परिवार के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही है। छत्तीसगढ़ की सड़कों पर गड्ढे तक न भर पाने वाले मुख्यमंत्री नगरनार संयंत्र चलाने का दावा करने चले हैं। जिस तरह की भर्राशाही भूपेश बघेल सरकार ने घोटालेबाजी के लिए की है वैसा केंद्र सरकार नहीं कर सकती। नियम शर्तों के मुताबिक जो हो सकता है, वही होगा। भूपेश बघेल अगर चाहते हैं कि उन्हें घोटाले करने के लिए कोई केंद्रीय संस्थान सौंप दिया जाए तो यह संभव नहीं है। खुद की कुर्सी का ठिकाना नहीं। सरकार जाने वाली है और वे अब भी भ्रम पैदा कर रहे हैं।

# कांग्रेस विधायक विक्रम मंडावी सड़क हादसे में घायल

**बीजापुर.** विधायक विक्रम मंडावी सड़क दुर्घटना में घायल हो गए हैं. उनका इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है. बताया जा रहा है कि मंडावी के कंधे की हड्डी फैक्चर हुई है. उन्हें रायपुर रेफर करने की तैयारी की जा रही है. यह हादसा मोदकपाल थाना क्षेत्र में भरोसे की यात्रा के दौरान हुआ है.

मिली जानकारी के मुताबिक, विधायक मंडावी बीजापुर से भरोसे के सम्मेलन में शामिल होने कार्यकर्ताओं सहित जनप्रतिनिधियों के साथ मद्देड के लिए रवाना हुए थे. इस दौरान मोदकपाल के पास बाइक से गिरने से विधायक विक्रम मंडावी सहित नगर पालिका उपाध्यक्ष घायल हो गए.

बेहतर इलाज के लिए विधायक मंडावी और नगर पालिका अध्यक्ष को जिला चिकित्सालय लाया गया है. बताया जा रहा कि इस हादसे में विधायक विक्रम मंडवी का कालर बोन टूट गई है. उन्हें सड़क मार्ग से जगदलपुर लाया जा रहा है. यहां से एयर एंबुलेंस के जरिए रायपुर लाने की तैयारी की जा रही है.

# 65 सीटों पर कांग्रेस प्रत्याशियों के नाम तय

■ **पहली सूची नवरात्रि में, कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में बनी सहमति**

**रायपुर।** कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी ने विधानसभा चुनाव के लिए 65 सीटों पर सिंगल नाम तय कर दिए हैं। कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में रविवार को हुई कांग्रेस स्क्रीनिंग कमेटी की मैराथन बैठक में चार घंटे तक नामों पर मंथन किया गया। बैठक में 90 सीटों में से 65 पर सिंगल नाम तय हो गए हैं। अन्य एक से अधिक नाम वाली 25 सीटों को लेकर देर रात तक बैठक जारी रही।

जिन सीटों पर नाम तय हो चुका है, उसकी सूची अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के केंद्रीय चुनाव समिति को भेजी जाएगी। पार्टी सूत्रों के मुताबिक स्क्रीनिंग कमेटी के बाद केंद्रीय चुनाव समिति की अनुमति के बाद नामों पर मुहर लगेगी। पितृ पक्ष व 15 अक्टूबर के बाद नवरात्रि में कांग्रेस की पहली सूची जारी होगी। कांग्रेस सूत्रों के मुताबिक यह बैठक इसलिए भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि 60 से अधिक सीटों पर सिंगल नाम तय कर दिए गए हैं। एक से अधिक नाम वाली सीटों पर कोर ग्रुप की बैठक में भी निर्णय लिया जाएगा।

स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष अजय माकन के अनुसार ज्यादातर सीटों नामों पर तय हो गया है। बैठक में अजय माकन, प्रदेश प्रभारी कुमारी सैलजा, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, सहसचिव चंदन यादव, उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव, सह प्रभारी विजय जांगिड़, कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष दीपक बैज, महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष नेटा डिसूजा व पार्टी के वरिष्ठ नेता डा चरणदास महंत मौजूद थे।

प्रदेश के शहरी, ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्र की 25 सीटों पर अनिर्णय की स्थिति बनी हुई है। यहां एक से ज्यादा दावेदारों के नाम सामने रखे गए। स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में कमेटी के अध्यक्ष अजय माकन ने भी अपनी एक रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसका मिलान स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में प्रस्तुत नामों के साथ हुआ। 25 सीटों में कुछ ऐसी हाईप्रोफाइल सीटें भी हैं, जहां वर्तमान में कई कद्दावर नेताओं की टिकट खतरे में दिखाई पड़ रही है।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे चार अक्टूबर को रायगढ़ दौरे पर रहेंगे, वहीं छह अक्टूबर को पार्टी की महासचिव प्रियंका गांधी कांकेर दौरे पर आ सकती हैं। आचार संहिता के पहले दोनों राष्ट्रीय नेता इन स्थानों पर बड़े कार्यक्रम को संबोधित कर सकते हैं। अक्टूबर के पहले हफ्ते में कांग्रेस की प्रदेश में कई बड़ी सभाएं होंगी। प्रियंका गांधी कांकेर में पंचायती राज सम्मेलन व नगरीय निकाय सम्मेलन में शामिल होंगी।

**छत्तीसगढ़/राजधानी प्रमुख समाचार**

# समाज के हर वर्ग का भरोसा जीता है कांग्रेस ने: दीपक बैज

**रायपुर।** प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि भाजपा के शासन काल में लाखों लोगों के राशन कार्ड कटवाए गए थे, कांग्रेस की सरकार ने सबके राशन कार्ड बनवाए। इसलिए प्रदेश में 99 प्रतिशत से अधिक लोगों के राशन कार्ड बन गए हैं और हर परिवार को 35 किलो चावल हर माह मिल रहा है। आदिवासी इलाकों में नमक और गुड भी मिलता है। भाजपा शासनकाल में 3000 स्कूल बंद किए गए थे, कांग्रेस ने न केवल बंद स्कूलों को खोल बल्कि स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल योजना से 700 से अधिक स्कूल खोले। पूरे प्रदेश में स्कूलों के जीर्णोद्धार के लिये 1100 करोड़ रूपए दिए गए। स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम कॉलेज भी खुले और प्रदेश को चार नए मेडिकल कॉलेज भी मिलें। स्वास्थ्य के नाम पर भाजपा के शासनकाल में अंखफोड़वा कांड, नसबंदी कांड, गर्भाशय कांड, नकली दवा कांड ही था, कांग्रेस के शासनकाल में हाट बाजार क्लिनिक, शहर स्लम स्वास्थ्य योजना और दाई दीदी क्लिनिक जैसी चलित अस्पताल की सुविधाएं मिल रही है। कांग्रेस सरकार में धनवंतरी दवा दुकानें शुरू की गई जिसमें लाखों लोगों को 71 प्रतिशत तक सस्ती दवाओं की सुविधा मिली है। कांग्रेस की सरकार ने प्रदेश के हर घर में बिजली बिल हॉफ कर दिया है, जिससे जरूरतमंद परिवारों की बहुत बचत हुई है।

# अपराध गढ़ बोलकर छत्तीसगढ़ महतारी का अपमान किया: ठाकुर

**रायपुर।** प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि पूर्व नेता प्रतिपक्ष एवं विधायक धरमलाल कौशिक ने छत्तीसगढ़ को अपराधगढ़ बोलकर छत्तीसगढ़ महतारी और 3 करोड़ जनता का अपमान किया है धरमलाल कौशिक को अपने इस वक्तव्य के लिए छत्तीसगढ़ महतारी पूरे प्रदेश से माफी मांगनी चाहिए। कुछ एक आपराधिक घटनाओं के चलते प्रदेश के संभ्रांत सुशिक्षित किसान युवा मजदूर माता और बहनों को भाजपा अपराधी कैसे घोषित कर सकती है? अगर भाजपा छत्तीसगढ़ को अपराध गढ़ कहती है इसका मतलब क्या प्रदेश में रहने वालों को भाजपा अपराधी घोषित कर रही है धरम लाल कौशिक भी खुद को अपराधी मानते हैं बेहद निंदनीय है आपराधिक मामलों में बयान बाजी देते समय जनमानस की भावनाओं का भी ख्याल रखना चाहिए। मोदी सरकार के द्वारा जारी एनसीआरबी की रिपोर्ट सच्चाई बयां कर रही है पूर्व के रमन भाजपा सरकार के दौरान हत्या,बलात्कार,लूटपाट डैकती, नक्सली घटनाएं नकबजनी अपहरण, संगठित अपराध, सुपारी किलिंग और तस्करी की जो घटनाएं होती थी उसमे राज्य में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के द्वारा सख्त की गई कानून व्यवस्था अपराधियों की धरपकड़ मजबूत पुलिसिंग के चलते अपराधिक घटनाओं 50 प्रतिशत से अधिक की कमी हुई है महिला के विरूद्ध घटित अपराध में छत्तीसगढ़ की स्थिति राष्ट्रीय स्तर पर 18वें स्थान पर है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रति लाख आबादी पर महिला के विरूद्ध घटित अपराध की दर 63.3 है।

# कांग्रेसी ही छत्तीसगढ़ को अपराध का गढ़ बना रहे हैं: कौशिक

**रायपुर।** पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक ने छत्तीसगढ़ की कानून व्यवस्था को लेकर कांग्रेस सरकार पर निशाना साधते हुए कहा है कि न्यायधानी में सरेआम पिस्टल से फायरिंग किया जा रहा है इससे पहले भी जिसने पिस्टल चलाई उसने किसान को जान से मारने की धमकी दी थी जिसका वीडियो भी वायरल हुआ था। इसके बाद भी कांग्रेस ने इस पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया था इसी कांग्रेस की लापरवाही व गुंडागर्दी के कारण आज छत्तीसगढ़ की जनता अपने आप असुरक्षित महसूस कर रही है, और प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल कहते है छत्तीसगढ़ सुरक्षित राज्य है पर जमीनी हकीकत यह है कि आज छत्तीसगढ़ पुरी तरह से अपराध गढ़ बन चुका है हाल ही में राजधानी में सरेआम तलवार से केक काटा जा रहा है। तालिबानी अंदाज में सड़कों पर हथियारों के साथ जुलूस निकाला जा रहा है। यह हथियार किसी पर भी चल भी सकते हैं। किन्तु सरकार इस पर कार्यवाही करना छोड़ केवल आरोप लगाने में व्यस्थ है। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक छत्तीसगढ़ में ध्वस्त हो चुकी कानून व्यवस्था के लिए भूपेश बघेल सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि बहुत संवेदनशील स्थिति है कि छत्तीसगढ़ में मानव जीवन किस प्रकार संकट में पहुंच रहा है। किस तरह अपराधियों के हौसले बुलंद हो चुके हैं। सरेआम सड़क पर दहशतगर्द कैसे दहशतगर्दी फैला रहे हैं।

# बस्तर की जनता के आक्रोश की अभिव्यक्ति है बस्तर बंद: शुक्ला

**रायपुर।** मोदी सरकार द्वारा नगरनार संयंत्र को बेचने के विरोध में कांग्रेस ने बस्तर के लोगों के साथ मिलकर बस्तर बंद का आह्वान किया है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि बस्तर की जनता के आक्रोश की अभिव्यक्ति है बस्तर बंद। बस्तर के निवासी, आदिवासी, व्यापारी, मजदूर, किसान, नौकरीपेशा सभी बंद के समर्थन में है। बस्तर के आदिवासियों ने अपनी जमीन एनएमडीसी के नगरनार स्टील प्लांट को दी थी। छत्तीसगढ़ राज्य सरकार के जरिए इस जमीन का मकसद बस्तर का विकास था। आदिवासियों ने अपनी जमीन मुआवजे के लिये नहीं दी थी बल्कि इसलिए दी थी कि आने वाले समय में उनको रोजगार मिल सके और साथ ही क्षेत्र का विकास हो। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि नगरनार स्टील प्लांट को विनिवेश सूची में डाले जाने पर मजदूर संगठनों, किसानों में भारी नाराजगी दिखाई थी। जिसमें 10 ग्राम पंचायत के प्रभावित किसान, 12 गांवों के हितग्राही और संयुक्त मजदूर किसान संगठन, स्टील श्रमिक यूनियन भी शामिल थे। कांग्रेस की ओर से सरकार बनने से पहले विधानसभा अशासकीय संकल्प लाया गया था और सरकार बनने के बाद बकायदा शासकीय संकल्प लाकर इसके बेचने का विरोध किया गया था। उस संकल्प में कांग्रेस सरकार की ओर से कहा गया था कि अगर मोदी सरकार इसे बेचना ही चाहती है तो इसे राज्य सरकार को सही कीमत लेकर बेच दे।

# राजेश मूणत खुली आंख से देखें विकास दिखेगा: नितिन

**रायपुर।** पूर्व मंत्री राजेश मूणत के द्वारा दूरबीन लेकर विकास खोजे जाने वाले आंदोलन पर कांग्रेस प्रवक्ता नितिन भंसाली ने कहा कि राजेश मूणत को दूरबीन लेकर विकास खोजने के बजाय प्रदेश की जनता के एवं अपने आस-पास के लोगों के जीवन स्तर को देख लेना चाहिए कि भाजपा के 15 साल के शासनकाल के समय छत्तीसगढ़ के आम आदमी का जीवन स्तर कैसा था और आज उसमे कितना सकारात्मक परिवर्तन आया है। प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता नितिन भंसाली ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के 15 वर्षों के शासनकाल में भूख, भय और भ्रष्टाचार का बोलबाला रहा। कांग्रेस की भूपेश बघेल की सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की वजह से प्रदेश की आम जनता के जीवन स्तर में सुधार आया है, नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में 40 लाख लोग गरीबी रेखा से बाहर आए है। राजेश मूणत और पूरी भाजपा को प्रदेश का विकास हजम नही हो रहा है इसलिए वो अपना अस्तित्व बचाने के लिए अनर्गल आरोप और आंदोलन कर अपना समय व्यर्थ कर रहे है। भाजपा जो बेतुका आरोप लगा रही है उस पर प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सार्वजनिक रूप से इस बात की घोषणा की है की कोई भी अभयर्थी की निजी तौर पर उन्हें कोई शिकायत प्राप्त हुई तो वे इस पर जांच करवाते हुए कड़ी कार्यवाई करेंगे। बेहद दुर्भाग्यजनक है कि जिनको पीएससी का फूलफार्म नहीं मालूम वो लोग पीएससी जैसी संवैधानिक संस्था पर बिना किसी तथ्य के आरोप लगा रहे है।

# छत्तीसगढ़ की संस्कृति हमारी पहचान है: सीएम बघेल

**रायपुर।** हमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ की संस्कृति को सहेजने और संवारने का काम किया हैहमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ की संस्कृति को सहेजने और संवारने का काम किया हैहमारी सरकार ने छत्तीसगढ़ की संस्कृति को सहेजने और संवारने का काम किया है

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने कहा है कि हमारी सरकार ने बीते पांच सालों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परम्परा, तीज-त्यौहारों को संरक्षित एवं संवर्धित करने का काम किया है। छत्तीसगढ़ी तीज-त्यौहारों को लोग आनंद और उत्साह के साथ एकजुट होकर मना सके, इसके लिए हमने राज्य के प्रमुख तीज-त्यौहारों पर सार्वजनिक अवकाश भी घोषित किया है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परंपरा को बढ़ावा देने का काम किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति हमारी पहचान है। इसको सजाने, संवारने का काम हम सबको मिलकर करना है। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल आज दुर्ग जिले के पाटन विकासखंड के ग्राम झीट में आयोजित परिक्षेत्रीय साहू संघ के भूमिपूजन कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने इस दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को उनकी जयंती के अवसर पर नमन किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री श्री बघेल और साहू संघ के पदाधिकारियों ने 30 लाख रूपए की लागत से बनने वाले साहू समाज के सामुदायिक भवन का भूमिपूजन किया।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को स्मरण करते हुए कहा कि प्रदेश गांधी जी के दिखाये रास्ते पर आगे बढ़ते हुए विकास के नए आयाम गढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सभी वर्गों के विकास के लिए काम किया गया है। अधोसंरचना विकास के साथ-साथ पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने का काम भी हमने किया है। श्री बघेल ने कहा कि प्रदेश के लोगों आर्थिक संबल देने के उद्देश्य से अनेक योजनाएं चलायी जा रही हैं, जिससे किसानों, मजदूरों और महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव और खुशहाली आयी है। ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए रीपा की स्थापना की गई है। प्रदेश के युवाओं को बेरोजगारी भत्ता देने का काम किया जा रहा हैं।

मुख्यमंत्री श्री बघेल ने कहा कि प्रदेश के सभी समाज के लोगों को सामाजिक भवन देने की बड़ी पहल की है। सामाजिक भवन होने से समाज के लोगों को सामाजिक कार्यक्रम के आयोजनों में सहूलियत हो रही हैं।

# अवमानना मामले में पूर्व गृह सचिव और पूर्व डीजीपी ने हाईकोर्ट से मांगी माफी

**बिलासपुर।** अवमानना के एक मामले में छत्तीसगढ़ के पूर्व गृह सचिव सुब्रत साहू और रिटायर हो चुके पूर्व डीजीपी डीएम अवस्थी ने हाईकोर्ट से लिखित में माफी मांगी है. इसके बाद कोर्ट ने अवमानना याचिका निराकृत कर दी है.दरअसल साल 2010 में पुष्पेन्द्र सिंह सेंगर सहित अन्य 35 याचिकाकर्ताओं की पुलिस विभाग हेड कॉन्सटेबल और सहायक प्लाटून कमांडर नर्सिंग के पद पर भर्ती हुई थी, लेकिन प्रमोशन चैनल नहीं होने की वजह से याचिकाकर्ताओं ने बिलासपुर हाईकोर्ट की शरण ली. 26 नवंबर 2019 को हाईकोर्ट ने तत्कालीन गृह सचिव सुब्रत साहू और तत्कालीन डीजीपी डीएम अवस्थी को 6 महीने के भीतर मामले के निराकरण का आदेश दिया था, लेकिन 6 महीना बीत जाने के बाद भी हाईकोर्ट के आदेश का पालन नहीं किया गया, जिस पर याचिकाकर्ताओं ने हाईकोर्ट में अवमानना याचिका दाखिल की.अवमानना नोटिस जारी होने पर तत्कालीन गृह सचिव सुब्रत साहू ने मामले का निराकरण कर दिया. याचिकाकर्ताओं के वकील अभिषेक पाण्डेय और गीता देवनाथ ने हाईकोर्ट के सामने गंभीर आपत्ति दर्ज कराई, जिसमें उन्होंने कहा कि वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों द्वारा समय सीमा में हाईकोर्ट के आदेशों का पालन नहीं करने से लगातार अवमानना याचिकाएं प्रस्तुत करनी पड़ रही है. हाईकोर्ट के आदेश का विलंब से पालन करने के लिए पूर्व गृह सचिव सुब्रत साहू और पूर्व डीजीपी डीएम अवस्थी ने क्षमा याचना की, जिसके बाद न्यायालय ने अवमानना याचिका को निराकृत कर दिया।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.